विज्ञान मूलक धर्म के संस्थापक

परमपूजनीय भगवान देवात्मा

की सम्बन्धों के विषय में अद्वितीय शिक्षा के अनुसार

माता - पिता संतान दिवस

के अवसर पर 31-01-2011 को लुधियाना में हमारे घर के साधन मंदिर में हुए सत्संग का विस्तृत वर्णन

(नारकीय संसार में सच्चे स्वर्ग धाम की झलक)

सम्बोधन

7

यशपाल भल्ला

Presented with a prayer that wherever the Book goes it conveys the desired message.

YPS Bhalla - Prem Lata Bhalla
A-56, B.R.S. NAGAR, LUDHIANA (PUNJAB) INDIA
Tele: 0161-2450456 Mob: 98720-20666
Email : vhbldh@yahoo.com

विज्ञान मूलक धर्म के संस्थापक

परमपूजनीय भगवान देवात्मा

की सम्बन्धों के विषय में अद्वितीय शिक्षा के

अनुसार

माता- पिता संतान दिवस

के अवसर पर 31-01-2011 को लुधियाना में
हमारे घर के साधन मंदिर में हुए
सत्संग का विस्तृत वर्णन

(नारकीय संसार में सच्चे स्वर्ग धाम की झलक)

सम्बोधन

—यशपाल भल्ला

विज्ञान मूलक धर्म के संस्थापक

परमपूजनीय भगवान देवात्मा

की सम्बन्धों के विषय में अद्वितीय शिक्षा के अनुसार

माता-पिता संतान दिवस

के अवसर पर 31-01-2011 को लुधियाना में हमारे घर के साधन मंदिर में हुए सत्संग का विस्तृत वर्णन

First Edition- 2011

By
Yashpaul Singh Bhalla
A-56, B.R.S. Nagar,
Ludhiana.
Mobile No 98720-20666
Email-vhbldh@yahoo.com

Only for deserving souls.
(for private circulation only)

Published by
Image Print Arts, Ludhiana-1(INDIA)

यह पुस्तक माता जी और पिता जी को

आदर सहित समर्पित है।

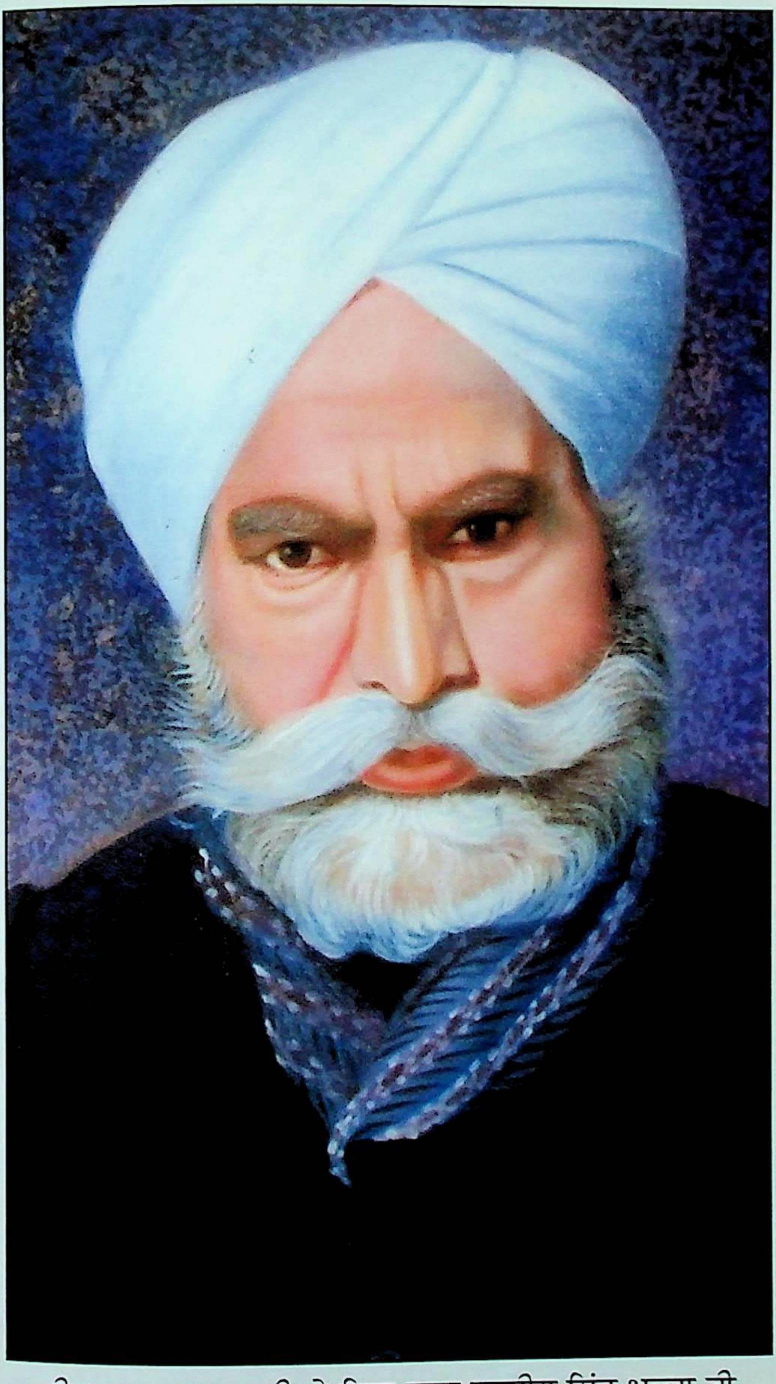
(यशपाल भल्ला)

विषय प्रवेश

जिन सभाओं की तैयारी में से गुज़र कर और जिन का ब्यान करते करते मुझे देवात्मा के अद्वितीय प्रभाव मिले और मेरे अन्दर गहरी श्रद्धा पैदा हुई और कृतज्ञता ने जन्म लिया, जिसके बाद उस विषय में मेरे अध्ययन और साधनों में नई जान और नई गहराई आती गई और जिस सभा की अति हितकर याद और उसके प्रभाव आज भी मुझे किसी और ही लोक में पहुंचा देते हैं, उनमें से एक सभा यह है जो 31-01-2011 को माता-पिता संतान दिवस के उपलक्ष्य में करवाई गई जिसके बारे में सभा के बाद कई माननीय जनों ने आम तौर पर, प्राय: सारे धर्म सम्बन्धियों ने विशेष तौर पर, उस सभा को बार बार सिमरण किया है और उसके प्रभावों का बार बार ज़िक्र किया है। इस सभा की सुनहरी याद सुरक्षित रखने के लिए उन स्वर्गीय दृश्यों को जो उस समय उत्पन्न हुए सुरक्षित करने के लिए यह छोटी सी पुस्तक प्रकाशित की जा रही है। इस आशा के साथ के इसकी याद हमेशा उच्च प्रभाव संचार करती रहेगी और इसके अध्ययन से अधिकारी आत्माओं के लिए माता पिता संतान के सम्बन्ध के बारे में देवात्मा की जो अद्वितीय शिक्षा है को जानने और अनुभव करने का सुअवसर मिल सके।

सभा के जो नोट मैंने लिये थे जो VCD तैयार की गई थी उनके आधार पर उसी विधि में और उसे चार भागों में बांटकर सभा करवाई गई थी, उसे आगे इस पुस्तक में दिया जा रहा है।

—यशपाल भल्ला



श्री यशपाल भल्ला जी के पिता बाबा कश्मीरा सिंह भल्ला जी
जिनकी स्मृति रक्षा के लिए यह पुस्तक लिखी जा रही है।



श्री यशपाल भल्ला जी की माता श्रीमती लाजवंती देवी जी जिनकी स्मृति रक्षा के लिए यह पुस्तक लिखी जा रही है।

आभार

इस सभा के आयोजन के लिए और इस सभा में सहयोग के लिए मैं विशेष सम्मान के योग्य अपने सब धर्म सम्बन्धियों और लुधियाना निवासी साथी सेवकों तथा श्रद्धावानों और अपने समुचे परिवार का जिनके सात्विक सहयोग से और सात्विक श्रद्धा से जो वातावरण उस समय उत्पन्न हुआ और जो आत्माओं का हित साधन हुआ जो बहुत ही कल्याणकारी था और जिसके प्रभाव आज तक काम कर रहें हैं और वह सब लोग जो प्राय: तीन घंटे तक ध्यानपूर्वक योग देते रहे उन सबका मैं तह दिल से आभारी और धन्यवादी हूं और गुप्त सहायकारी शक्तियों का भी तह दिल से आभारी हूं। मैं उन सबका भी अति अधिक आभारी हूं जिन्होंने उस सभा में भजन गाए और भाव प्रकाश किए। डा. पीयूष के अतिरिक्त श्री भूषण कुमार जी जीरा और ओम प्रकाश जी आदर्श ने अपने उच्च भावों से भजनों का गान किया।

इस पुस्तक की रूप-सज्जा तथा प्रकाशन कार्य में मेरे प्रिय मित्र डा. केवल धीर, जो राष्ट्रीय एवं अंतराष्टीय स्तर पर साहित्य श्री एवं शिरोमणि पुरस्कारों से सम्मानित तथा 70 से अधिक पुस्तकों के लेखक हैं, ने जो सहयोग प्रदान किया है इसके लिये मैं उनका आभारी हूं।

मेरे कार्यालय में कार्यरत श्रीमति रजनी शर्मा एवं श्रीमति नंदिनी वर्मा ने इस पुस्तक के लिये डिकटेशन और टाईपिंग द्वारा जो कार्य किया वह बहुत सराहनीय है।

—यशपाल भल्ला

माता-पिता संतान दिवस

लुधियाना

भाग 1

(i) भजन, देव स्तोत्र का गान और व्याख्या,

(ii) विषय सम्बन्धी आरंभिक वर्णन

भाग 2

(i) देववाणी

(ii) जीवन व्रत के बाद प्रथम कार्य क्षेत्र,

(iii) देव धर्म की शिक्षा—16 सम्बन्ध

(iv) आदेश

(v) व्रत के दिन की कार्य प्रणाली।

भाग 3

(i) भगवान देवात्मा का उपदेश

(ii) देवात्मा के देव जीवन का अद्वितीय दृष्टांत

(iii) आत्माओं में उच्च परिवर्तन। (कुछ दृष्टांत)

(iv) लुधियाना में देव प्रभावों का अद्वितीय कारज

(v) उपस्थित जनों के भाव प्रकाश

भाग 4

कुछ हितकर लेख, एवं अन्य जनों के भाव।

भाग I (i)

भजन देव स्तोत्र का गान व आरंभिक वर्णन

पूजनीय भगवान देवात्मा की कृपा से 31-01-2011 को लुधियाना में हमारे घर के साधन स्थान में कल्याणकारी सत्संग हुआ जिसका विस्तृत वर्णन इस प्रकार है। सभा के शुरू में पहले यह भजन गाया गया:-

धर्म पाए बिना जीना, जनम अपना यह है खोना;
मनुष्य होकर पशु रहना, जनम अपना यह है खोना। 1

है गोबर का भी जो कीड़ा, है वह भी पेट तो भरता;
यही हो लक्ष्य जो मेरा, जनम अपना यह है खोना। 2

हक औरों के हर लेना, व पर हानि से खुश होना;
मनुष्य से भेड़िया बनना, जनम अपना यह है खोना। 3

न औरों के लिए हिलना, उन्हीं से काम नित लेना;
सिर्फ़ अपने लिए जीना, जनम अपना यह है खोना। 4

न उनके काम भी आना, कि जिन से फ़ैज नित पाना।
मिसल जूं चूसते रहना, जनम अपना यह है खोना। 5

इसके पश्चात देव स्तोत्र का गान किया गया और व्याख्या की गई।

इसके बाद पूजनीय भगवान ने अपने प्रभावों से जो अद्वितीय कार्य किया है उसका संक्षिप्त वर्णन किया गया और भगवान देवात्मा के जीवन संगीत का निम्नलिखित भाग व्याख्या सहित बताया गया।

परम लक्ष्य मम् पूरन होवे,
जीवन व्रत मम् पूरन होवे,
नया जन्म यह दुनिया पावे,
नया रूप यह दुनिया पावे,
देव राज इस जग में आवे। 1

जो कुछ पवित्र वह सब आवे,
जो कुछ मलिन सभी वह जावे,
जो कुछ सुन्दर विकसित होवे,
जो कुछ कुत्सित वह क्षय पावे।
देव राज इस जग में आवे। 2

सुश्रृंखला जो वह सब आवे,
विश्रृंखला सब ही मिट जावे,
जग में उच्च शान्ति आवे,
नीच कलह सब हि क्षय पावे,
नीच युद्ध सब हि क्षय पावे,
देव राज इस जग में आवे। 3



मन्दिर में भगवान देवात्मा की छवि का दृश्य



सभा में देवस्तोत्र के गान का चित्र

बोध आत्मिक हित का होवे,

नीच सुखों पर वह जय पावे,

है अनमेल जहां जगतों में,

शुभकर मेल वहां सब आवे,

देव राज इस जग में आवे। 4

भाग I (ii)

वर्णन:-

दुनिया को नया जीवन और सच्चा धर्म जीवन देने के लिए पूजनीय भगवान देवात्मा ने अपना अद्वितीय जीवन व्रत धारण किया है।

साहिबान! किसी भी अस्तित्व का जो अंजाम है इसका जो भविष्य है वह दो बातों पर निर्भर करता है एक तो यह कि इसके अन्दर जन्मजात योग्यता क्या है? दूसरा यह कि वह किस वातावरण में रहता है? यह बात आप एक घटना से समझ जाएंगे। लखनऊ में एक परिवार था। (शायद अब भी वह कहीं रहते हों उनकी आगे की पीढ़ी के जो बच्चे हैं) उनके घर में तीन लड़के पैदा हुए। ऐसी घटना घटी कि एक को तो भेड़िया उठाकर ले गया और बड़ी मुश्किल से कुछ महीनों के बाद भेड़िए के चंगुल से उसे छुड़ाया गया। वह बहुत महीने हस्पताल में रहा। चन्द महीनों की भेडिए की संगत ने उसे भेड़िया नुमा बना दिया। उसकी योग्यता एक अच्छा मनुष्य बनने की थी। सब उसे

बहुत साल wolf boy के नाम से पुकारते रहे कि यह wolf boy है। उनका एक दूसरा लड़का था उसको ऐसा वातावरण मिला कि वह एक I.A.S Officer बन गया। एक तीसरा लड़का था उसको ऐसा वातावरण मिला कि वह Criminal बन गया और वह जेल में चला गया। योग्यता और वातावरण इंसान की जिन्दगी के भविष्य को उसके अंजाम को उसके वर्तमान को निर्धारित कर देते हैं। मैं यह सोच रहा था श्रद्धेय पी.वी.कनल जी जो एक महान दार्शनिक बने वो क्या थे? वह एक वकील थे। उन्होंने वकालत पास की थी। वह अपने इलाके के सबसे पहले एम.ए.एल.एल.बी थे। लोग उनको देखने के लिए आते थे। उस समय एम.ए.एल.एल.बी बहुत कम हुआ करते थे। वो क्या सच्च बोलते होगें अदालतों में? वकील जो करते हैं वह तो आपको पता ही है। एक वकील को देवात्मा ने पकड़ कर अध्यात्मिक जगत का एक चमकता हुआ सितारा बना दिया। उनके जीवन से पता चलता है कि उनको विरासत बहुत अच्छी मिली थी। अगर वह उस वातावरण में रहते तो उनका क्या अंजाम होता। बहुत सारे मुकदमें लड़ते और बहुत सारे पैसे कमा लेते। देवात्मा ने उनको कहां पहुंचा दिया। यह वातावरण का कमाल है। महाराज जी भी उनकी तारीफ़ करते थे और देखने वाले कहते थे कि एक जीता जागता फरिश्ता जा रहा है। उनकी दाड़ी बड़ी थी और जिस्म भारी था। वह सिर पर टोपी पहनते थे, बहुत शानदार personality थी उनकी। वह एक बार कचहरी में गए तो जो बहुत बड़े वकील थे उनके



सभा में देवस्तोत्र के गान का चित्र

जमाने के वह बहुत तरक्की कर गए थे। वो उनको देखकर कहते हैं कि कनल जी आपका चेहरा तो बहुत लाल है इतना चमक रहा है आप से तो इतने अच्छे प्रभाव पड़ रहें हैं। आप तो एक दम धार्मिक और spirtual राजा जैसे लगते हैं। हम तो आपसे ज्यादा तरक्की कर गए हैं, हमारे मुंह पर तो झुर्रिया पड़ गई हैं, हमारे तो कालिख छा गई है। श्रद्धेय कनल जी फरमाते हैं कि मैं भगवान देवात्मा के चरणों में रहता हूं। तुम जजों के चरणों में रहते हो तुम मुकदमें लड़ते हो मैं प्रचार करता हूं, मैं धार्मिक Article लिखता हूं, मैं धर्म का विश्लेषण करता हूं, मेरा काम यह है कि मैं लोगों से धर्म प्रचार करवाता हूं, और लोगों से पाप छुड़वाता हूं। कहते हैं (यह एक कहावत है) कि कोई पारस पत्थर है दुनियां में उसको जो चीज़ टच कर जाती है वह सोना बन जाती है। मगर यह सच है कि महाराज जी के प्रभावों ने जिसको टच किया उसकी जिन्दगी में बहार आ गई। यह कनल जी की मैंने बात बताई क्योंकि मैं कनल जी से बहुत प्रभावित हूं। उनकी योग्यता से उनके लेखों से, उनकी वाणी से उनकी बातों से उन्होंने जो कुछ जिन्दगी में किया मैं अनुभव करके हैरान होता हूं।

भाग 2 (i)

भगवान देवात्मा संस्थापक देव समाज की अद्वितीय देववाणी जिसका पाठ किया गया।

"मैं इस पृथ्वी में स्वर्ग चाहता हूँ। मैं इस पृथ्वी में वह दीन वा धर्म लाना चाहता हूँ जो इसी दुनिया में सब प्रकार के पापों और बुराइयों का नाश करता हो। इसी दुनिया में ऐसे सच्चे और भरोसे के योग्य सम्बन्धी पैदा करता हो कि जिनके उत्पन्न होने से मनुष्य जीवन सब प्रकार से मीठा और सुखप्रद बन सकता है", जो इसी दुनिया में मनुष्य आत्माओं को सत्य मोक्ष देता हो उनको उच्च चरित्र के ऐसे सांचे में ढालता हो, जिस से मनुष्य न केवल किसी अन्य मनुष्य के लिए, किन्तु प्रत्येक ऐसे जीवन धारी के लिए कि जिस से उसका जीवन्त सम्बन्ध हो, पूर्णतः हितकर सम्बन्धी प्रमाणित हो। यदि इस प्रकार के उच्च जीवनधारी आत्मा विकसित हों और उनके उच्च जीवन के द्वारा इस प्रकार का खमीर उत्पन्न हो, तो इससे जहां मेरा मिशन पूरा होगा, वहां मेरा यह मिशन दुनिया में अपनी विशेषता भी प्रमाणित करेगा।

पिशाचत्व के नाश और देवत्व के विकास में मैं इस प्रकार का दृश्य देखता हूं कि जिसमें मनुष्यात्मा एक दूसरे के लिए आकर्षणीय, हितकर, वफादार और भरोसे के योग्य प्रमाणित हों। ऐसे दिन का लाना और ऐसे आत्माओं का पैदा करना, और ऐसे आत्माओं के खमीर के द्वारा इस

देश को उभारना और उसकी बेबहा बरकतों को दुनिया के और विभागों में पहुंचाना मैं अपने विशेष जीवन का विशेष लक्ष्य समझता हूं।

पिशाचत्व के समुन्द्र में डूबते हुए आत्माओं के लिए मैं जीवन की आशा का एक जहाज़ हूं और पिशाचत्व के असरों से गिरी हुई जमातों और कौमों के बचाने, उभारने और आला बनाने के लिए मैं मिसल एक खमीर के हूं।

मैं जिस देवत्व की जिन्दगी का वृक्ष हूं, वह अमृत फल पैदा करता है और इसलिए जो आत्मा मुझसे शाख की न्याई जुड़ता है, वह केवल यहीं नहीं कि खुद विनष्ट नहीं होता और औरों का नाश नहीं करता, अपितु अपने और औरों के जीवन में अमृत फल पैदा करता है।"

<u>भाग 2 (ii)</u>

भगवान देवात्मा का अद्वितीय जीवन व्रत

"सत्य शिव सुन्दर ही मेरा, परम लक्ष्य होवे;

जग के उपकार ही में, जीवन यह जावे।"

साहिबान! परमपूजनीय भगवान देवात्मा अपनी <u>आत्म कथा</u> में फरमाते हैं जिस वक्त मैंने जीवन व्रत का काम शुरू किया और जिस क्षेत्र में किया उसमें मानवीय संबंधों के विषय में दो धारणायें मुख्य थी जो इस प्रकार हैं:-

1) "मनुष्य को अपने भले व बुरे कर्मो का फल भोगने के लिए इस पृथ्वी में बार बार जन्म लेना और मरना पड़ता है पुन: पुन: जन्म लेना और मरना और संसार के बन्धनों में पड़कर दु:ख पाना कदापि वांछनीय नहीं है। सब प्रकार के भले और बुरे कर्म मनुष्य के लिए बन्धन का हेतु है; इसलिए पुर्नजन्म अथवा आवागमन से मुक्ति पाने के लिए क्या भले और क्या बुरे, सब कर्मो का त्याग आवश्यक है।"

इस फ़िलासफ़ी का दूसरा अंश यह है:-

2) "मनुष्य सब प्रकार के दु:खों से निवृत्ति और केवल सुख चाहता है। संसार में नाना प्रकार के सम्बन्धों को रखकर नाना प्रकार के दुख पाना लाज़मी है। इस लिए सुखार्थी मनुष्य को चाहिए, कि वह अपने सब प्रकार के

संसारिक संबंधों को त्याग दे और मां, बाप, भाई, बहन, स्त्री, बच्चे, स्वामी, भृत्य, मित्र, शत्रु, दरिद्र, धनी, दुखिया, असहाय, मूर्ख, विद्वान, सब जाति और स्वदेशीय जन, आदि सब प्रकार के मनुष्यों और अन्य जीवों से उदासीन होकर केवल अपने सुख के लिए जिए, और उसी को मुख्य रखे और योग आदि किसी विधि के द्वारा आनन्द लाभ करें। योग साधन से आवागमन से भी मुक्ति हो जाती है। औरों के भले और बुरे से कोई सरोकार न रखना लाज़मी है।"

साहिबान! ऐसी धारणाओं के दरमियान पूजनीय भगवान देवात्मा ने सम्बन्ध तत्व की अद्वितीय शिक्षा दी है।

सम्बन्ध तत्व की शिक्षा देकर भगवान देवात्मा ने मानव जगत पर महान उपकार किया है। हमारा भौतिक जगत, उद्‌भित जगत और मनुष्य जगत के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध है। भौतिक जगत के सूर्य, पानी, हवा से यदि मनुष्य कट जाए तो वह लाश ही रह जाएगा। उद्‌भित जगत और पशु जगत से कट जाएगा, तो उसका जीना मुश्किल हो जाएगा। मनुष्य जगत से कट कर वह अपनी होश और अपनी शिष्ट व्यवहार जिन पर वह गर्व करता है, उसे कायम रखने के योग्य नहीं रहेगा।

सम्बन्ध तत्व की महानता का वर्णन करते हुए श्रीमान पी.वी.कनल लिखते हैं:—"मैं भगवान की रौशनी में सम्बन्ध तत्व का उच्च और महान नियम देखने के योग्य हुआ हूं। इस तत्व से अन्धे होकर मनुष्य ने अपनी

तबाही की है और अपने जीवन और शान्ति का नाश किया है। इस नियम से अन्धे होकर एक गलत सिद्धान्त की रचना की गई है कि जिस के लाखों लोग विश्वासी हैं। इस गलत सिद्धांत के अनुसार सब प्रकार की चिन्ताएं और क्रियाएं चाहे वह अच्छी हों या बुरी जीवन की जंजीरें हैं, जो मनुष्य को जन्म और मृत्यु के आवागमन में फंसाए रखती है और वही आत्मा पूर्ण है जो सब कर्तव्य कर्मों का त्याग कर दे। इस सम्बन्ध तत्व की अंधता ने हमारे देश की बड़ी हानि की है। इस तत्व की अंधता के कारण लाखों लोग यह मानते हैं कि हमारा सबसे उत्तम काम केवल कहलाने वाले ईश्वर की पूजा करना है। ऐसा करके ईश्वर विश्वासियों ने चारों जगतों का निरादर किया है और विविध सम्बन्धों में कठोरता पैदा की है। सम्बन्ध तत्व के प्रति अन्धता इन्सानी बरबादी का सबसे बड़ा कारण बनी है। यदि भगवान देवात्मा की अद्वितीय देव ज्योति में किसी जन को यह सम्बन्ध तत्व दिखाई दे, तो वह माता-पिता, बहन, भाई, पति, पत्नी आदि सम्बन्धों में कर्तव्य कर्मों को समझ सकेगा। वह यह महसूस करेगा कि उसकी कोई चिन्ता या क्रिया जो उसे दूसरों का बुरा चाहने या बुरा करने पर मजबूर करती है, वह उसके लिए घातक है। वह यह देखने लगेगा कि ऐसे सब भाव जो उसे बुरी चिन्ताओं और क्रियाओं को करने के लिए मजबूर करते हैं, वह उसके आत्मिक पतन लाने वाले नीच भाव हैं। जिन आठ मोटे मोटे पापों को छुड़ाकर किसी को देव समाज का सभासद बनाया जाता है, यह इसी लिए कि यह सब पाप मनुष्य को दूसरों के प्रति गलत ले जाते हैं और उसके आत्मा को

पतन की ओर धकेलते हैं। ऐसा मनुष्य पागल हाथी की तरह दूसरों को लताड़ता और कुचलता है, अपने लिए और दूसरों के लिए कलेश पैदा करता है।

क्या कारण है कि देव समाज मनुष्य को नीच शक्तियों से मोक्ष और उच्च सात्विक भावों के विकास को इतना आवश्यक समझती है? इसका कारण यह है कि मनुष्य के नीच सुख अनुराग और नीच घृणाएं उसे नेचर के विकास के नियम से बागी बनाते हैं और आत्मा का पतन और उसकी मृत्यु लाते हैं।

सात्विक भाव मनुष्य को विविध सम्बन्धों में अपने कर्तव्यों की पूर्ति की योग्यता प्रदान करते हैं और इस प्रकार उसे अपने और औरों के लिए वरदान प्रमाणित करते हैं। यह बात याद रखनी चाहिए कि नीच सुख अनुराग और नीच घृणाएं आत्मिक रोग हैं और उसके सब उच्च विचार और व्यवहार मनुष्य के उच्च भावों और उच्च रागों का परिणाम हैं। यह उच्च भाव मनुष्य के जीवन का विकास करते हैं। इसलिए यह बात साफ़ है कि सम्बन्धों में ही मनुष्य के आत्मा का जीवन है और सम्बन्धों में ही उसकी मृत्यु है। भगवान देवात्मा ने मनुष्य के सम्बन्धों को 16 भागों में विभक्त करके प्रत्येक सम्बन्ध में कर्तव्य और वर्जित कर्म दिए हैं और बताया है कि इन कर्तव्य कर्मो को पूरा करना ही धर्म और इनकी अवहेलना करना ही पाप है।"

भाग 2 (iii)

देव शास्त्र खण्ड चार में भगवान देवात्मा ने 16 सम्बन्ध निर्धारित किए हैं और इनके विषय में कर्तव्य कर्मों का और वर्जित कर्मों का प्रावधान किया है।

साहिबान! हम 16 सम्बन्धों के बारे में दिन मनाते हैं। आप अन्दाजा ही नहीं लगा सकते कि हम जो 16 सम्बन्धों के दिन मनाते हैं तो हम कहां पहुंच जाते हैं। कर्तव्य कर्मों और वर्जित कर्मों पर विचार किया जाता है। हमारे दिल की, हमारे परिवारों की क्या हालत हो जाती है। अगर सारी दुनिया ही यह सारे 16 सम्बन्ध मनाने लग जाए तो आप देखिएगा कि इस दुनिया का नक्शा ही बदल जाएगा। वो सोलह सम्बन्ध निम्नलिखित हैं:-

1) माता पिता और संतान,

2) भाई-बहन, 3) देव समाज,

4) पति-पत्नी, 5) उद्‌भिद् जगत्

6) भृत्य स्वामी, 7) वंशीय जन,

8) स्वदेश, 9) साथी सेवक,

10) स्वास्तित्व, 11) पशु जगत,

12) परलोक, 13) स्वजाति,

14) भौतिक जगत, 15) मनुष्य मात्र,

16) परमपूजनीय भगवान देवात्मा।



श्री यशपाल सिंह भल्ला जी सभा को सम्बोधित करते हुए

भाग 2 (iv)

साहिबान! माता पिता और संतान के सम्बन्ध में कर्तव्य कम जिनका प्रावधान किया गया है उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं।

संतान के लिए आदेश

1. वह अपने माता पिता को अपना जन्मदाता, पालन कर्ता, रक्षाकर्ता और शिक्षा दाता उपलब्ध करके उनके साथ अपना अति पवित्र और घनिष्ठ सम्बन्ध अनुभव करे।

2. वह अपने माता पिता के सम्बन्ध में अपने आप को सब प्रकार की नीच गतियों से मुक्त रखने और उच्च गति दायक प्रत्येक भाव के उत्पन्न व उन्नत करने की आवश्यकता को भली भान्त अनुभव करे।

3. वह अपने माता पिता के प्रति उचित रूप से सम्मान भाव अनुभव और प्रदर्शन करे।

4. वह अपने माता पिता के सम्बन्ध में अपने आप को कृतज्ञ प्रमाणित करे।

5. वह जहां तक संभव हो अपने माता पिता के रोग और दुख और उनकी विपदग्रस्त और असहाय अवस्था में उनकी आवश्यक सुश्रूषा, सेवा और सहाय करे।

6. वह अपने माता पिता की शारीरिक, पारिवारिक और अन्य आवश्यकताओं को जहाँ तक अपनी सामर्थ्य के

अनुसार पूरी कर सकता हो, वहाँ तक तन, मन, धन आदि के द्वारा पूरी करे।

7. वह योग्यता रखने पर अपने माता पिता के लिए उनके ज्ञान और भाव विषयक विकास में जहाँ तक सम्भव हो सेवाकारी बने।

8. वह अपनी ऐसी प्रत्येक अनुचित क्रिया के सम्बन्ध में बोध लाभ करने पर कि जिससे उसके माता पिता को किसी प्रकार का अनुचित क्लेश वा दु:ख पहुँचा हो वा उन्हें कोई अनुचित हानि प्राप्त हुई हो, उचित और यथेष्ट परिशोध करके उनके साथ अपने सम्बन्ध को पवित्र करे।

9. वह अपने माता पिता के लिए उचित रूप से मंगल कामना का साधन करे।

10. वह जान बूझकर अपनी किसी अनुचित क्रिया से अपने माता पिता के साथ अपने सम्बन्ध को शिथिल न करे।

11. वह जान बूझकर अपनी किसी अनुचित क्रिया से अपने माता पिता को किसी प्रकार का कोई क्लेश व दु:ख न पहुँचावे।

12. वह जहाँ तक संभव हो, अपने माता पिता के किसी रोग व उनकी किसी पीड़ा की अवस्था में उनकी आवश्यक शुश्रूषा सेवा और सहाय करे।



सभा में उपस्थित जनों का चित्र

माता पिता के लिए आदेश

1. संतान यज्ञ साधन कर्ता माता पिता के लिए यह जानना और अनुभव करना आवश्यक है, कि उनकी सन्तान उनके अस्तित्व का अंश होने से उनके उत्कृष्ट वा अपकृष्ट आकारों और गुणों की थोड़ी वा बहुत अवश्य भागी बनती है।

2. संतान यज्ञ साधन कर्ता माता पिता के लिए यह आवश्यक है, कि वह अपने शारीरिक उत्तम स्वास्थ्य और आत्मिक विकास के द्वारा जहाँ तक संभव हो, उत्कृष्ट संतान उत्पन्न करें।

3. संतान यज्ञ साधन कर्ता माता पिता के लिए आवश्यक है, कि वह अपनी संतान को अपने अस्तित्वों का अंश जानकर उसके साथ अपना उचित सम्बन्ध अनुभव करें।

4. संतान यज्ञ साधन कर्ता माता पिता के लिए आवश्यक है, कि वह अपनी संतान के सम्बन्ध में अपने आपको प्रत्येक नीच गति से मुक्त करने और रखने और प्रत्येक उच्च गति दायक भाव के द्वारा उसके साथ सम्बन्ध उत्पन्न वा उन्नत करने की आवश्यकता को भली भांत अनुभव करें।

5. संतान यज्ञ साधन कर्ता माता पिता के लिए आवश्यक है, कि वह मोह रहित रहकर अपनी प्रत्येक संतान के प्रति उचित रूप से अपना स्नेह प्रदर्शन करें।

6. संतान यज्ञ साधन कर्ता माता पिता के लिए आवश्यक है, कि वह अपनी कन्याओं को अपने पुत्रों की न्याई समरूप से अर्थात् बिना किसी अनुचित पक्षपात के पालन करें।

7. संतान यज्ञ साधन कर्ता माता पिता के लिए आवश्यक है, कि वह अपनी प्रत्येक संतान की शारीरिक गठन को अपनी सामर्थ्य के अनुसार उत्तम रूप से विकसित करने के लिए सब प्रकार से प्रयत्न करें।

8. संतान यज्ञ साधन कर्ता माता पिता के लिए आवश्यक है, कि वह अपनी प्रत्येक संतान को शारीरिक रोगों से सुरक्षित रखने और किसी के रोगी होने पर उसके रोग के दूर करने के लिए अपनी सामर्थ्य के अनुसार उत्तम रूप से चेष्टा करें।

9. संतान यज्ञ साधन कर्ता माता पिता के लिए आवश्यक है, कि वह अपनी योग्यता के अनुसार अपनी संतान का युवा अवस्था तक भली भान्त पालन करें, और यथा सम्भव अपनी किसी विकलांग और असहाय संतान के निमित्त सारी आयु के लिए रक्षा और पालन का प्रबन्ध करें।

10. संतान यज्ञ साधन कर्ता माता पिता के लिए आवश्यक है, कि वह अपनी प्रत्येक संतान को आत्मा की गठन और उसकी विनाश और विकास कारी गतियों के सम्बन्ध में सब प्रकार की आवश्यक शिक्षा दें।

11. संतान यज्ञ साधन कर्ता माता पिता के लिए आवश्यक है, कि वह अपनी प्रत्येक संतान को सत्य धर्म और उसके लक्षणों और साधनों आदि के विषय में उचित रूप से शिक्षा दें।

12. संतान यज्ञ साधन कर्ता माता पिता के लिए आवश्यक है, कि वह अपनी संतान के सम्बन्ध में अपनी किसी अनुचित क्रिया के विषय में बोध लाभ करने पर उसके लिए उचित परिशोध करके उसके साथ अपने सम्बन्ध को पवित्र करें।

भाग 2 (V)

साहिबान! व्रत के दिन के लिए

कार्य प्रणाली इस प्रकार है

- परिवारिक, परिचित जनों को एकत्र कर महिमा विषयक भजन का गान करें।
- भगवान की छवि का अर्चन, देव स्तोत्र का गान व व्याख्या करें।
- माता पिता के सम्बन्ध में किन्हीं दो भजनों का गान करें।
- देव शास्त्र खंड चार में से इस सम्बन्ध में कर्तव्य कर्मो का विचारपूर्वक पाठ करें।
- भगवान स्वयं कैसे आदर्श पिता व आदर्श पुत्र थे, इस बारे में बयान करें।
- भगवान के प्रभावों से इस सम्बन्ध में कैसे सुन्दर दृश्य व उच्च परिवर्तन मानवता ने देखे हैं, वर्णन करें।
- सभी अपने माता पिता व संतान के प्रति उनके गुणों व उनसे पाई सेवाओं का वर्णन करें। अपनी किसी अवज्ञा व दुर्व्यवहार के लिए क्षमा प्रार्थी हों।
- अन्य दिनों की अपेक्षा हितकर व स्वादिष्ट सम्मिलित भोजन करें।

भाग 3 (i)

साहिबान! परमपूजनीय भगवान देवात्मा ने अपने ग्रन्थों, अपने उपदेशों अपने देवजीवन के अद्वितीय दृष्टांत और अपने देव प्रभावों से अधिकारी आत्माओं में जो उच्च परिवर्तन पैदा किए हैं इन सबसे ऐसा अध्यात्मिक वातावरण पैदा कर दिया कि उस में सांस लेकर अधिकारी आत्माओं का सच्चे धर्म जगत में जन्म हो जाता है।

आइये सबसे पहले देवात्मा के एक उपदेश के कुछ भाग का वर्णन करता हूं।

भगवान देवात्मा का यह उपदेश जो श्री साधु जानकी दास जी ने लिखा था उसमें भगवान देवात्मा इस प्रकार फरमाते हैं कि इंसान की हालत क्या है?

पूजनीय भगवान ने दस भागों में इसका वर्णन किया है।

1. "पशु अपनी नर और नारी संतान की पालना में कोई भेद नहीं रखते। वह दोनों को ही चाहे वह नर हो या नारी अपनी संतान समझ कर एक ही तरह से पालन करते हैं, और एक ही तरह से उनकी रक्षा करते हैं। एक एक चिड़िया अपने बच्चों को चाहे वह नर हों या नारी एक ही तरह से अपने परों के नीचे दबाकर सोती हैं, एक ही तरह से उन्हें चोगा देती हैं, और दोनों में कोई भेद नहीं रखती।

परन्तु मनुष्य, विशेषत: हमारे देश का मनुष्य, बेटे और बेटी में बहुत बड़ा अन्तर देखता है। उसकी दृष्टि में दोनों ही बच्चे उसके द्वारा ही जन्म लेकर दो प्रकार के दृश्य पैदा करते हैं। एक को वह अपना समझता है और दूसरे को पराया। बेटे को समझता है कि यह मेरा है। यह बड़ा होगा, यह कमाएगा, हमें खिलाएगा, हमारी जायदाद का वारिस (उत्तराधिकारी) होगा, हमारा नाम रौशन करेगा। इसलिए वह उसके खिलाने, पिलाने, कपड़े पहिनाने, जेवर बनाने और विद्या वा शिक्षा आदि दिलाने पर अपनी शक्ति से बढ़कर खर्च करता देखा जाता है। बेटी को "पराया धन" समझता है, और इसलिए बहुत से घरों में उनकी जो दुर्दशा होती है, और जैसी बुरी तरह से वह पलती हैं, वह अत्यन्त लज्जा-जनक है। उन बेचारियों की कोई परवाह नहीं होती। वह एक प्रकार से भाई की नौकरानी बनी रहती हैं।" उनको बराबर का खाना भी कम ही दिया जाता है। अच्छा कपड़ा भी पहिनने को कठिनता से मिलता है। बीमारी में उनके ईलाज से लापरवाही की जाती है। नेचर के अपने ही प्रबन्ध में अगर वह जीवित रह जाएं तो रह जाएं, अन्यथा माता पिता की ओर से तो साधारणत: उनके इसी तरह खत्म हो जाने में किसी तरह की कोई कमी नई रखी जाती। लड़के के पैदा होने पर बहुत हर्ष और बाजे बजाए जाते हैं, रूपये बखेरे जाते हैं, चारों तरफ़ चेहरे, पोशाक और दिल, खुश दिखाई देते हैं। बाहर के जन भी आ आकर "बधाइयां" देते नजर आते हैं। उनके विपरीत लड़की के पैदा होने पर सारे घर में मातम छा जाता है। ओह! किस प्रकार अन्याय और अत्याचार!!

साहिबान! बात समझ में आई? महाराज जी ने यह पहली बात बताई है कि नर हो या नारी पशु अपनी संतान का एक ही तरह से पालन करते हैं और एक ही तरह उनकी रक्षा करते हैं। मनुष्य की हालत देखिए यहां मेरे एक पड़ोसी थे वह मुझे आकर कहने लगे कि लड़का हुआ है पहले चार बार पता लग चुका था कि लड़की होनी है तो abortion करवा देते थे। अब लड़का हुआ है। यह है इंसान की हालत। यह कातिल है यह इंसान नहीं है। यह कातिल है, भेडिए हैं। शेर से भी बदतर हैं। मेरी एक छोटी सी बहन थी उसका बहुत छोटी सी उम्र में देहांत हो गया। बहुत छोटी सी थी तब मैं भी बहुत छोटा था। मनोवृति बताता हूं क्या होती है इंसान की। मेरी वह बहन बीमार होकर मर गई। उसको गोदी में मेरी दादी लिए बैठी थी और कहती थी **गुड़ खाई तें पूनी कत्ती, आप न आई ते भाई नु घत्ती**। यह मनोवृति है भगवान देवात्मा की कृपा से मैंने अपनी बेटी को बेटों से बढ़िया पाला है। यह महाराज जी की शिक्षा है। मिस Hobby Doctor यहां पर इंचार्ज थी मिस ब्राऊनी हस्पताल में और बहुत ही डायनमिक डाक्टर थीं और जब रोज़ी पैदा हुई तो लड्डू लिए और मैं मेडम Hobby के पास गया मैंने कहा आप यह यहां डाक्टरों को बांट दें मैं वार्ड में बांट देता हूं। तो वह मुझसे पूछती हैं कि क्या बेटा हुआ है? तब मैंने कहा कि नहीं बेटी हुई है उसने कहा यहां इंडिया में बेटी होने पर कोई भी लड्डू नहीं बांटता। आप बेटी होने पर लड्डू बांट रहे हैं। यह गुरू महाराज जी की शिक्षा है।

78

साहिबान! श्रीमान निर्मल सिंह जी ढिल्लो कर्मचारी देव समाज एक बार हमारे घर आए। यह मिली (पोती) बैठी है। इसके बचने की बहुत कम उम्मीद थी। वहां मैं डाक्टरों से लड़कर इसको उठाकर ले आया। किसी दूसरी जगह ईलाज करवा कर यह बच गई। एक बार मैं इसे लिए सडक पर घूम रहा था यह बहुत छोटी सी थी इसके लिए मैंने बहुत लड़ाईयां मोल ली हैं। शायद सरिता जी (मिली की माता जी) को पता होगा मेरी धर्म पत्नी जी को भी पता है। सभी कहते थे पटोले बांग सांभी होई है सानू देखन भी नहीं दींदे। माफ़ करना बहन पुष्पा जी (सरिता की माता जी) बैठी हैं सामने इन्होंने मुझे कहा दिखा दो तो मैंने न कर दी शायद आपको याद होगा यह महाराज जी की शिक्षा है हमारे ऊपर। मैं मिली को लेकर सैर कर रहा था तो मुझे श्रीमान निर्मल सिंह जी कहते है भल्ला जी नस्लों का परिशोध कर लिया आपने आज वो भी जिन्दा हैं दुनिया में। उन्होंने मुझे कहा कि आपने नस्लों का परिशोध कर लिया जो एक लड़की की ऐसे सेवा कर रहें हैं। यह महाराज जी की शिक्षा का प्रभाव है।

साहिबान उपदेश की अगली बातें निम्नलिखित हैं:-

2 "मनुष्य मिथ्या अभिमान और मिथ्या लोकलाज़ का इतना दास हो गया है, कि किसी को अपना दामाद कहने और अपने आप को किसी का ससुर कहलाने से घबराता है। इसलिए कई अवस्थाओं में अपने हि खून से जन्मी हुई कन्या को उसके पैदा होने के साथ हि गला घोंटकर खत्म कर देता है। कैसी महा दुष्टता!!"

"3. मनुष्य धन का दास होकर अपनी संतान को कई बार अच्छा कपड़ा और खाना तक नहीं देता। विशेषत: लड़कियों की बीमारी में रूपया खर्च करना नहीं चाहता और इस तरह उनके लिए महा हानिकारक प्रमाणित होता है।"

"4. वह धन का दास होकर लड़की के जवान होने पर उसे भेड़ बकरियों की न्याई किसी बूढ़े वा रोगी के हाथ हज़ारों रूपए लेकर विवाह के नाम से बेच देता है, और उस बेचारी को सारी आयु के लिए दुख में डाल देता है। ओह! कैसा हृदय विदारक दृश्य!!"

"5. वह उनके मोह और अपने नाम और वाह वाह का दास होकर अपनी संतान को कई बार आवश्यकता से अधिक खिलाता है, उन्हें जेवर पहिनाता है और उनकी आदतों को बिगड़ने का कारण बनता है, कि जो बच्चों के लिए पीछे से अत्यन्त हानिकारक प्रमाणित होते हैं।"

"6. कितने ही माता पिता अपनी संतान को नहलाने और उनकी आंखों को प्रतिदिन धोने की कोई परवाह नहीं करते। जिससे बच्चे रोगी रहते हैं। कई दशाओं में उनकी आखें चली जाती हैं, और वह सारी आयु दुखी जीवन व्यतीत करते हैं।"

"7. कितने ही माता पिता संतान को कोई सद् शिक्षा नहीं देते और उन्हें अपनी मानसिक शक्तियां उन्नत करने का भी कोई अवसर नहीं देते। इसलिए वह बेचारे अबोधी और मूर्ख के मूर्ख हि रहकर इस दुनिया से चले जाते हैं।"

"8. कितने ही माता पिता अपने बुरे अध्यासों को अपने बच्चों में भी संचार कर देते हैं कि जो पाप वह स्वयं करते हैं। वही पाप अपने बच्चों से भी जबरदस्ती करवाते हैं। ऐसे बहुत से दृष्टांत हैं कि जिन में बाप स्वयं बेटे को मांस खिलाता है, शराब पिलाता है, उसको हुक्का पीने का अभ्यासी बनाता है। माता पिता अपनी संतान को अफ़ीम खिलाते हैं।

जरायम पेशा लोग अपने बच्चों को चोरी की शिक्षा देते हैं। बहुत से साधारण जन भी जो ऐसी शिक्षा नहीं देते लालच के वशीभूत होकर अपने बेटे वा बेटी की चोरी की हुई वस्तु को खुशी खुशी घर में रख लेते हैं, और उन्हें उत्साह देते हैं कि भविष्य में भी चोरी कर लाया करो। परिणाम यह होता है कि इस प्रकार उत्साह पाकर बहुत से बच्चे पक्के चोर और लुटेरे बन जाते हैं, और फांसी की मौत मारे जाते हैं।

बहुत से दुकानदार अपने बेटों को कम तोलना, कम नापना और व्यापार में ठगी करना सिखाते हैं, और यदि किसी को अपने मतलब का नहीं पाते, तो ऐसे शब्द कहते हुए सुने जाते हैं, "यह भीख मांगेगा, इसे कमाना नहीं आता।" अर्थात् धोखे से किसी के माल को हर लेना हि कमाई करना है। ओह! किस कदर धृष्टता और धर्म के पथ से भ्रष्टता!!"

"9. कितने ही माता पिता अपने बच्चों को मक्कारी और झूठ बोलना सिखाते हैं। घर में स्वय मौजूद हैं परन्तु

बाहर से किसी की तरफ़ से बुलाए जाने पर यदि उस से उन्हें मिलना न हो, तो अपने किसी बेटे वा बेटी के द्वारा कहलवा देते हैं कि वह बाहर गए हुए हैं।"

"10. हजारों और लाखों माता पिता अपनी संतान के मोह बन्धन में ग्रस्त हो जाते हैं। यह वह महा भयानक रोग है, कि जिस के कारण उन्हें ओ और उनकी संतान को नाना प्रकार के क्लेशों और मुसीबतों का भागी बनना पड़ता है।"

भगवान देवात्मा का कैसा शानदार उपदेश है।

सरदार हरनाम सिंह जी (जिनकी जिंदगी में देवात्मा की कृपा से रूहानी इनक्लाब आया) के जीवन की कैसी घटनाएं हैं पुत्र वधू को जब उम्मीद होती और वह मायके जाती तो कहते थे कि लड़का हुआ तो लेकर आ जाना लड़की हुई तो गला दबाकर आना। अगर लडकी हुई और तुम लेकर आई तो हमारे घर में तुम्हारी कोई जगह नहीं है। क्योंकि हम सरदार हैं हम बड़े आदमी हैं। किसी के आगे सिर झुकाना नहीं चाहते।

गुरू महाराज जी के चरणों में आने के बाद सरदार हरनाम सिंह जी पुत्रवधू को उम्मीदवारी होने पर कहते हैं कि बेटा हो या बेटी कुछ भी हो लेकर आना। यह उनकी दुनिया बदल दी देवात्मा ने। जो कहते थे गला दबाकर आना वो कहने लगे कि बेटी लाना और आने से पहले बताना क्योंकि हरनाम सिंह बाजा लेकर आएगा और गाजे बाजे से बेटी को घर लाएंगे।

उसमें कैसा परिवर्तन आया था उसका पता निम्नलिखित एक भजन जो पोती की शादी के अवसर पर पढ़ा गया से लगाया जा सकता है:-

पोती की शादी पर मेरी तरफ़ से एक गीत

दो धन्यवाद गुरू को बेटी जिसका हम पर साया है,
जिनकी ज्योति शक्ति पाकर पलटी घर की काया है।
तुम्हें पता है यह घर कैसा खूनी था कन्याओं का,
पर इस कुनबे में तुमने बेटों सा सुख पाया है।
सेहतवान विद्वान बनीं, और कई गुणों को लाभ किया,
सुख सम्मान से रह सकने के काबिल तुम्हें बनाया है।
सुनो नसीयत सोहरे घर में खुदगरज़ी का त्याग करो,
वही सुखी रहता है जिसने और को सुख पहुंचाया है।
माता-पिता और सास ससुर को समझो अपने बेटी तुम,
देवरानी, जेठानी बहनें यहीं तुम्हें समझाया है।
सेवा और सम्मान करो तुम अपने घर के लोगों का,
पास पड़ोस में चाहिए अपनी नेकी को फैलाया है।
अन्धों बूढ़ों बीमारों पर दया भाव प्रकाश करो,
और मोहताज अनाथों का ग़म चाहिए सदा घटाया है।
घर की देख, सभा पशुओं की, नरमी नौकर चाकर पर,
दानाई से खर्च फालतू चाहिए सभी घटाया है।
घर घर दीवे करना रौशन अपनी विद्या ज्योति से,
सुफल बनाना बेटी जो कुछ दान इलम का पाया है।

श्रद्धा पूर्वक देते रहना दान, समाज उपकारी को,
हो न यदि परनाला छत में, छत का होत सफ़ाया है।
उच्च चरित्र वालों की तुम, महिमा गाया करो सदा,
पर-निन्दा की खोटी आदत महा दुखों की माया है।
भूल जाओ औरों के अवगुण, कमियां और सलूक बुरा,
पर न कभी उपकार किसी का चाहिए कभी बुलाया है।
खाओ सदा बांटकर खाना मेहनत की आदत डालो,
रखो सब सामान सजाकर शीशे सम चमकाया है।
शिष्टाचार करो पालन तुम मिलने और बिछुड़ने पर,
कुल की शुभ मर्यादा को बस चाहिए सदा निभाया है।
जाओ बेटी खुशी खुशी से फूलो-फलो जगत भीतर,
ले जाओ यह हार कीमती दादा ने पहनाया है।

(उपरोक्त गीत में भाव सरदार जी के हैं और कविता का रूप श्रीमान झण्डा सिंह जी "अलम" ने दिया है।)

महाराज जी कमाल की शिक्षा दे रहें हैं। इसमें मां बाप क्या करते हैं यह देखिए। मैं आपको बहुत सारी घटनाएं बता सकता हुं। उतना मेरे पास समय नहीं है। मां बाप खुद नीच जीवन धारी होते हैं। इसलिए अपने जीवन से अपनी संतान के लिए घटिया दृष्टांत पेश करते है। जिसकी बहुत सारी घटनाएं इस समय मेरे सामने आ रहीं हैं। जिनका वर्णन करने के लिए पर्याप्त समय नहीं है। मनुष्य धन का दास होकर अपनी संतान को कई बार अच्छा खाना तक नहीं देता। विशेषतया लड़कियों की बीमारी पर रूपया

खर्च करना नहीं चाहता और इस तरह उनके लिए हानिकारक प्रमाणित होता है। गुरू महाराज जी ने बहुत सारी बातें बताई हैं। वह अपने मोह व वाह वाह का दास होकर अपनी संतान को कई बार आवश्यकता से अधिक खिलाता है। उन्हें जेवर पहनाता है और उनकी आदतों को बिगाड़ने का कारण बनता है यह बाते बच्चों के लिए पीछे से हानिकारक प्रमाणित होती हैं। पूजनीय भगवान और भी फरमाते हैं कि कितने ही माता पिता अपनी संतान को सद्शिक्षा नहीं देते। इसलिए वह बेचारे अबोधी और मूर्ख के मूर्ख रहकर ही इस दुनियां से चले जाते हैं। लाहौर में एक घटना बताई जाती है कि एक सेठ था वह अपने बेटे का ईलाज करवाने के लिए गया और ईलाज करने वाले डाक्टर ने बताया कि यह बीमारी है दो रूपये फीस दे दो तो उसका ईलाज शुरू करते हैं। दो रूपये नहीं देने कहते हैं मरता है तो मर जाए। बगैर दवाई के ही उसको घर ले गए। कितने माता पिता अपने अभ्यासों को अपने बच्चों में भी संचार कर देते हैं। कितने ही तो इतने दुष्ट होते हैं कि जो पाप वह स्वयं करते हैं वही पाप अपने बच्चों से भी स्वयं करवाते हैं।

एक बाप का एक सुपुत्र दुकान पर बैठा था, कोई ग्राहक आया तो पुत्र ने चीज़ का पूरा तोल दिया ग्राहक तो चीज़ लेकर चला गया पिता ने उसके मुंह पर दबाकर चपेड़ मारी और कहा कि तू भूखा मरेगा जो पूरा तोलकर दिया और ऐसे मां बाप चाहते हैं कि हमारे बच्चे बड़े होकर शुक्रगुज़ार बनेंगे, श्रद्धावान बनेंगें, हानि परिशोध करेंगे, हमारे लिए हमारी सेवाएं करेंगें। होता क्या है वो वृद्ध

आश्रम भेजे जाते हैं इसीलिए तो सारे Old home center खुल गए।

साहिबान! ऐसा भी देखा गया है। घर में वह स्वयं मौजूद हैं। परन्तु बाहर से वह किसी के बुलाए जाने पर यदि किसी को न मिलना हो तो अपने किसी बेटे व बेटी के द्वारा कहलवा देते हैं कि वो बाहर गए हुए हैं। वह घर पर नहीं हैं। यह तो मैंने भी देखा है और यह अपराध तो कई बार मैंने भी किया है। गुरू महाराज जी की रोशनी में नज़र आ रहा है कि यह कितना गलत था कहना कि जाकर कह दो कि घर पर नहीं हैं। हज़ारों लाखों माता पिता अपनी संतान के मोह बन्धन में ग्रस्त हो जाते हैं। यह वह महांभयानक रोग है कि जिसके कारण मां बाप और उनकी संतान को नाना प्रकार के कलेशों का भागी बनना पड़ता है।

भाग 3 (ii)

साहिबान! भगवान देवात्मा के इस उपदेश के बाद देवात्मा ने अपने देव जीवन से जो अद्वितीय दृष्टांत प्रस्तुत किया उसका थोड़ा सा वर्णन इस प्रकार है

"एक सभा में सम्मान के योग्य पंड़ित हरनारायण अग्निहौत्री जी (सपुत्र भगवान देवात्मा) ने तर आंखों और भरे दिल के साथ बताया कि आज अभी भगवान के श्री चरणों में बैठकर माता पिता संतान व्रत का साधन करके हम दोनों भाई परिवार सहित आ रहें हैं। इस साधन में भगवान ने अपने श्रद्धेय माता पिता जी के सम्बन्ध में जिन भावों का प्रकाश किया है, उससे उनके सुन्दर देव रूप के साक्षात दर्शन करने का मुझे आज एक और दुर्लभ अवसर मिला है और उसकी तुलना में अपनी छवि बहुत तुच्छ और रद्दी अनुभव हुई है। इस साधन में भगवान ने फरमाया था कि उनके भीतर बचपन से ही अपने माता पिता के सम्बन्ध में दो भाव वर्तमान थे—**प्रथम** अपने माता पिता अपने से बड़े अनुभव होते थे और इसलिए उन्हें सम्मान देने और उनके सामने झुकने को स्वभावत: जी चाहता था और उनका सम्मान करके तृप्ति मिलती थी। **दूसरे** वह उपकारी होने की वजह से प्यारे मालूम होते थे और उनके निकट जाने और उनकी सेवा करने को जी चाहता था और कभी किसी बात पर उनकी रोक टोक से भी दूरी नहीं पैदा होती थी। उनके सम्बन्ध में विशुद्ध सम्मान और कृतज्ञता का भाव होने के कारण क्या उनकी वर्तमानता में और क्या उनके

पीछे भगवान उन्हें दिल से सम्मान देते थे। और उनसे एक या दूसरे काम के करने की आज्ञा मिलने पर दिल में बुड़बुड़ाने की बजाय उसमें खुशी और तृप्ति अनुभव करते थे और फिर आयु के साथ साथ उनके सम्मान, आर्कषण और कृतज्ञता के भावों में कमी नहीं आई, बल्कि लगातार अभ्यास से वह बराबर बढ़ते चले गए। यही कारण है कि अपना जीवन व्रत ग्रहण करने के बाद जब भगवान अपनी भगर्वी पौशाक में एक बार 17-10-1884 को श्री अकबर पुर तशरीफ़ ले गए और घर में पहुंचने पर जब उनकी माता जी उन्हें मिलने के लिए आगे बढ़ी तो उनका उपकारी रूप भगवान को इतना महान महसूस हुआ कि वह मिट्टी के फर्श पर भी साष्टांत लेटकर और उनके चरणों पर अपना सिर रखकर उन्हें प्रणाम करने के लिए मजबूर हो गए और सफाई के बहुत सूक्ष्म और उच्च बोध रखकर भी उन्होंने इस बात की कुछ परवाह न की कि इससे उनके कपड़े मिट्टी में खराब हो जाएंगे। न ही उनके सामने यह आया कि मां अनपढ़ है और हम बहुत पढ़ें लिखे हैं और न ही अपनी अध्यात्मिक महानता का विचार आया। आज प्रात: यह हालात सुनाते समय भगवान के हृदय में उच्च भाव ऐसे जोश मारने लगे कि वह विवश फूट फूट कर रोने लग गए। यह बयान करते हुए श्री पण्डित जी का दिल भर आया। वह भी फूट पड़े उनका गला रूंध गया और इसके बाद का उनका सारा ब्यान तर आंखों के साथ बहुत ही प्रभावशाली था।"

"फिर श्री पंड़ित जी ने बयान किया कि अपने देवात्मा पिता के जीवन के इस सारे दृश्य का शब्दों में बयान करना कठिन है। भगवान की आयु 75 वर्ष की हो चुकी है। वह अपने पद के विचार से सारे मनुष्य मात्र के सत्य उपास्य देव हैं, परन्तु फिर भी अपने उपकारी माता पिता की छवि सामने सामने आने से इस तरह बिलख बिलख कर उनके सम्बन्ध में अपने भावों का प्रकाश कर रहें हैं, जिससे प्रकट होता है कि उनके देव हृदय में अपने माता पिता के सम्बन्ध में श्रद्धा और सम्मान का भाव कैसे जोरदार और सुन्दर रूप में वर्तमान है।"

"फिर भगवान प्राय: 55 वर्ष के लम्बे समय से जब से उन्हें ऋषि जी ने यह उपदेश दिया कि माता पिता के लिए शुभ कामनाएं किया करो, तब से लेकर आज तक प्रतिदिन साधन में अपने माता पिता को याद करके उनके सम्बन्ध में न केवल अपनी श्रद्धा और सम्मान का प्रकाश करते रहें हैं बल्कि अपने दिल से निकली हुई मंगल कामना की जोरदार लहर उन तक पहुंचाकर उनका आत्मिक हित करने का विशेष यत्न करते रहें हैं और इस काल में कोई एक दिन भी ऐसा नहीं गुज़रा कि जिसमें भगवान ने (हाथ जोड़कर और सिर झुका कर) अपने माता पिता को प्रणाम और याद न किया हो। इसकी तुलना में हमारी अपनी अवस्था कैसी घटिया है! न केवल हम प्रतिदिन अपने माता पिता के उपकारों को स्मरण करके सच्चा साधन नहीं करते, बल्कि कई बार अपनी अनुचित क्रियाओं से उनके प्रति सख्त आघातकारी प्रमाणित होते हैं।"

साहिबान! आत्म कथा के शुरू में हम इस प्रकार पढ़ते हैं:—(1907 के जुबली महोत्सव पर जिस को पढ़ा गया)

"मेरे इस विशेष महोत्सव के दिन, क्या मेरे सुनाने के लिए, और क्या तुम सबके सुनने के लिए, मेरी आत्म कथा से बढ़कर और कोई अनुकूल और प्रिय वस्तु नहीं हो सकती। इसलिए क्या मैं अपनी और तुम सबकी आकांक्षा को पूर्ण करने के लिए पहले ऐसे ही कितने वार्षिक अवसरों की न्याई आज भी अपनी आत्मकथा को ही सुनाना चाहता हूं।"

साहिबान! पूजनीय भगवान ने कैसे जीवन व्रत धारण किया और फिर क्या हालात हुए, किन शक्तियों ने मजबूर किया, कितना उत्पीड़न मिला, कितने दुख सहे, कितने विलाप किये, क्या खोज़ की, क्या दान दिया। यह सारा वर्णन उसमें गुरू भगवान जी ने दिया हुआ है। अपने जीवन व्रत का जिक्र देवात्मा कर रहें हैं कि उन्होंने सारी मानवता के हित का द्वार खोल दिया है। इस सबका जिक्र करते हुए आप फरमाते हैं कि मैं कहां होता अगर मेरे माता पिता न होते। वो वर्णन इस प्रकार है:—

"परन्तु आज मैं यहां कहां होता और मेरा यह अद्वितीय जीवन व्रत भी कहां होता, और उसे यथा संभव सफल करके मैं अपने आपको कृतार्थ भी क्योंकर अनुभव करता, यदि मेरे अस्तित्व के आविर्भाव में विश्व के प्रकाश कम में मेरे पूर्वजों का प्रकाश न होता। मैं आज इस विशेष

शुभ दिन में अपने इन पूर्वजों की लड़ी में अपने माता पिता और दादा दादी को विशेष रूप से धन्य धन्य कहता हूं कि जिन का मेरे अस्तित्व में बहुत बड़ा हाथ है। मैं आज के इस शुभ अवसर पर, अपने सदगुरू को विशेष रूप से धन्य धन्य कहता हूं कि जो मुझे मेरी युवा अवस्था के संकटमय काल में मेरे लिए धर्मपथ में कुछ दिनों तक बहुत अमूल्य हितकारी और सहायक प्रमाणित हुए और इस पृथ्वी के त्याग करने के बाद भी मेरा मंगल चाहने और करने के भिन्न, मेरे नाना सम्बन्धियों का भी नाना प्रकार का मंगल साधन करते रहें हैं। मैं आज के इस शुभ अवसर पर अपने उन नाना इस लोक व परलोकवासी सम्बन्धियों को भी धन्य धन्य कहता हूं, कि जिनके द्वारा मुझे एक वा दूसरे प्रकार की कोई सहाय या सेवा प्राप्त हुई है। मैं इस शुभ अवसर पर अपने देश और विदेश के उन नाना जनों को भी धन्य धन्य कहता हूं कि जिनसे मैंने कभी कोई शारीरिक शुश्रूषा, वा सेवा वा आर्थिक सहाय वा किसी प्रकार की मानसिक अवगति, वा विद्या, वा कोई उच्च भाव वर्द्धक प्रभाव लाभ किया है। मैं इस शुभ अवसर पर मनुष्य-जगत के भिन्न उन हितकर नाना दुग्ध प्रदाता और अन्य पशुओं, और नाना वृक्षों और पौधों को धन्य धन्य कहता हूं, कि जिन्होंने नाना प्रकार से मेरी सेवा की है, उसके लिए मैं उन्हें जितना धन्यवाद कहूं, उतना ही थोड़ा है। मैं इस शुभ अवसर पर भौतिक जगत् की अमूल्य सेवा को भी सन्मुख लाता हूं, कि जिसकी सेवा के बिना मेरा एक मुहूर्त के लिए श्वास प्रश्वास लेना तक सम्भव न था।"

साहिबान! 15 अगस्त सन् 1872 के पत्र में देवात्मा ने अपने श्रद्धेय पिता जी को लिखा—"साधारण लोग जो जानवरों की न्याई श्वास पूरे करते हैं। यदि आप ब्रह्म ज्ञान का रास्ता ढूढ़ते हैं, तो सांसारिक सब प्रकार की चीज़ों का लालच छोड़ दें।

यदि आप को इस राह में चलना मंजूर हो तो आप वहां के कारोबार का उचित इन्तजाम करके मेरे पास (रूड़की) चले आवें। यहां रहकर आप कभी हरिद्वार, कभी ऋषिकेश में पहुंचकर साधू संग कर सकते हैं। यहां भी कभी न कभी कोई महात्मा आ जाते हैं, उनके दर्शन और बातचीत से भी आप फायदा उठा सकते हैं और जहां तक मैं आपके लिए किसी प्रकार की सेवा कर सकता हूं, उसके लिए मैं खुद हाजिर हूं।"

एक बीस बाईस साल का पुत्र अपने श्रद्धेय पिता का ध्यान आत्मा, परलोक, धर्म संगत आदि की ओर फेरता है। देवात्मा स्वयं इस नौजवानी की आयु में आत्म कल्याण और विशुद्ध परोपकार की दुनिया में वास करते थे।

जैसे न्यूटन ने गुरूत्वाकर्षण की खोज की। डार्विन ने बताया कि मनुष्य का विकास पशु जगत से हुआ है और कितने ही साईसदानों ने एक एक विषय के सम्बन्ध में नेचर की सत्य घटनाओं और अटल नियमों पर स्थापित खोजें की हैं, देवात्मा ने आत्मा के विषय में विज्ञान मूलक सत्यों और तत्वों की खोज की है। देवात्मा एक ऐसे साईसदान हैं, जिनकी खोज का विषय "आत्मा" है। उन्होंने

बताया है कि मनुष्य का आत्मा अनुकूल हालात में उन सूक्ष्म कणों से एक सूक्ष्म शरीर का निर्माण करता है कि जो वह स्थूल शरीर में से उसकी मृत्यु के समय एकत्रित करता है और अपनी योग्यता के अनुसार परलोक के एक या दूसरे भाग में जाकर रहता है। पुर्नजन्म के विश्वास को उन्होंने मिथ्या बताया है।

जब देवात्मा की आयु **23** वर्ष की थी, तब उनके श्रद्धेय पिता जी का परलोक गमन हो गया और उसके 12 वर्ष पश्चात उनकी श्रद्धेय माता जी भी परलोक गमन कर गई। दोनों ही सूक्ष्म देह ग्रहण करके अपनी अपनी अवस्था के अनुसार परलोक सम्बन्धी किसी एक व दूसरे लोक में पहुंच गए। देवात्मा प्रति दिन प्रात: चार बजे अपने निज के साधन में अपने श्रद्धेय माता पिता को याद करके हाथ जोड़कर और सिर झुकाकर प्रणाम और शुभ कामना का साधन करते थे। उनके श्रद्धेय माता पिता अपनी अध्यात्मिक अवस्था के विचार से भिन्न भिन्न लोकों में रहते थे। उन्हें एक दूसरे का कुछ पता न था। वह एक दूसरे के लिए कोई आकर्षण अनुभव न करते थे। उनका सम्बन्ध एक दूसरे से कट चुका था। वह न एक दूसरे की तलाश करते थे और न परस्पर साथ रहने के इच्छुक थे। उनमें से हरेक अपनी जीवन यात्रा अलग निर्वाह करता था। इस पृथ्वी के रहने वाले लाखों सम्बन्धियों की यही अवस्था होती है अर्थात मरने के बाद उनके सम्बन्ध कट जाते हैं और वह एक दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं रखते। जब तक प्रकृत धर्मगत सम्बन्ध किसी के साथ स्थापन न हो, तब तक आत्माओं

का सम्बन्ध स्थायी नहीं होता और नहीं हो सकता। जिन आत्माओं के भीतर परस्पर के लिए किसी प्रकार का विशुद्ध धर्म अनुराग उत्पन्न हो चुका हो और वह एक दूसरे के हित के कुछ सच्चे आकांक्षी हो चुके हों, उनका सम्बन्ध मरने के अनन्तर भी नहीं कटता क्योंकि वह स्वभावत: एक दूसरे के लिए हितकर अथवा सेवाकारी होने की आकांक्षा रखते हैं और संभव होने पर निश्चय एक दूसरे के साथ मिलते जुलते हैं। देवात्मा के माता पिता का परस्पर इस प्रकार का धर्मगत उच्च सम्बन्ध न था इसलिए वह कट गया। मरने के अनन्तर अपने देवात्मा पुत्र को भी स्मरण करने के लिए उन्हे कोई आवश्यकता न रही........। इसलिए वह स्वभावत: अपने देव पुत्र को भी धीरे धीरे भूल गए और उन्होंने अपनी ओर से अपने पुत्र के साथ कोई सम्बन्ध न रखा। यद्यपि उन्होंने अपने देव पुत्र को भुला दिया, परन्तु देवात्मा उन्हें नहीं भूल सके। बहुत काल तक अपने माता पिता के विषय में देवात्मा को कुछ पता नहीं लगा, परन्तु देव जीवन धारी देवात्मा अपने परलोकवासी माता पिता के सम्बन्ध में कभी उदासीन नहीं रहे और इस पृथ्वी में उनसे बहुत दूर रहकर भी उन्हें नहीं भूले और अपने दैनिक साधनों में उनको स्मरण करके अपनी आन्तरिक शक्ति से उनके लिए मंगल कामनाएं करते रहे।

देव जीवन का कैसा शानदार दृष्टांत है।

भाग 3 (iii)

अपने अद्वितीय देव प्रभावों से भगवान ने आत्माओं में जो उच्च परिवर्तन का कारज किया है और आत्माओं को श्रेष्ठ जीवन का दान दिया है उसका दृष्टांत इस प्रकार हैं:-

देखिए इस विषय में श्रदेय पी.वी.कनल जी का एक पत्र ओर परिवर्तन के अन्य हालात इस प्रकार हैं:-

जीवन सम्बन्धों में है

मेरे भगवन!

"आप की अद्वितीय ज्योति में मैं देखता हूं और अनुभव करता हूं कि इस दुखी देश को आपके आविर्भाव की नितांत आवश्यकता थी। दुर्भाग्य से भारत ने ऐसे विचारक और फ़िलास्फ़र उत्पन्न किए जिन्होंने सम्बन्धों के जीवन को मुसीबत, दुख और कल्पित और जन्म-मरण का चक्कर बताया। इसलिए उन्होंने सम्बन्धों के जीवन के लिए एक प्रकार की घृणा पैदा कर दी और किसी जंगल के कोने और पहाड़ की गुफा तथा कथित योग और समाधी के द्वारा कल्पित ईश्वर की खोज़ पर बल दिया। इस भयानक फ़िलास्फ़ी का तत्कालीन और सीधा फल यह निकला कि रमते और निकम्में साधुओं की एक भारी जमात उत्पन्न हो गई; जिनकी संख्या बढ़कर एक करोड़ से अधिक हो गई है। उन्होंने सब कर्त्तव्यों और जिम्मेवारियों को तिलांजली दे

दी है। वह केवल अपने सुख के लिए दूसरों की कमाई पर जीते हैं। इसका असर यहीं तक सीमित नहीं था, उसमें बहुत से निक्कमें पुरोहित या पुजारी पैदा कर दिए जो रक्तपाई कीड़ों की न्याई दूसरों का लहू चूसते हैं। जो घरबारी रहे, उन पर भी उस हानिकारक फिलासफ़ी का भयंकर प्रभाव पड़ा। उन्होंने घर के जीवन को त्याग देने के योग्य समझा और दूसरों की भलाई से सर्वथा उदासीन हो गए। इस प्रकार प्रायः सारे भारत वासियों की दृष्टि में सारे ही सम्बन्ध बोझ और बखेड़ा बन गए। जो लोग दुनिया में रहे और जिन्होंने सम्बन्ध बनए उन्होंने केवल अपनी नीच वासनाओं की तृप्ति और स्वार्थ की पूर्ति के लिए ऐसा किया। यह स्वार्थ धीरे धीरे इतना बढ़ गया कि इसमें भारत की एकता को छिन्न भिन्न कर दिया और इसे जातियों और उपजातियों के असंख्य टुकडों में बांट दिया। यह जातियां और उपजातियां एक दूसरे के साथ न विवाह का सम्बन्ध रखतीं हैं और न खानपान का।"

साहिबान! सम्बन्धों में उच्च जीवन मिलेगा। धर्म जीवन सम्बन्धों में मिलेगा। मैं आज आपको एक बात बताता हूं। मैंने बहुत संग्राम किया है जितना देवात्मा करवा सकते थे करवा लिया जो नहीं कर सका वह मेरी ही कमज़ोरी थी। जो आपको मुझमें अच्छाई नज़र आती है यह सब देवात्मा की कृपा से ही है और जो मैं नहीं बन सका यह मेरी कमज़ोरी है और मैं आज आप को बताता हूं कि मैं देवसमाज में 55 साल से हूं और मेरे पास देव समाज का 55 साल पुराना इतिहास भी है और मैं 55 साल से देवात्मा

के चरणों में लाभ उठा रहा हूं और लोगों तक संदेश पहुंचाने का काम कर रहा हूं। 55 साल में मुझसे सबसे ज्यादा लाभ मेरी धर्म पत्नी ने उठाया है। यह किसी और वातावरण से आयी थी इन के और विश्वास थे अब इनकी श्रद्धा मुझसे भी ज्यादा है देवात्मा में। उच्च जीवन मुझे घर में संग्राम करके ज्यादा मिला है। घरों में उच्च गतियां पैदा करो, घरों में स्वर्ग पैदा करो, घर वालों पर आपके उच्च जीवन की छाप सबसे पहले पड़नी चाहिए।

धन से मां की सेवा करके मैं उन पर एहसान कर रहा हूं।

साहिबान! बचपन में श्रीमान पी.वी.कनल जी आर्य समाज की संगत में जाने लगे थे, उन्होंने वहां पर एक बात यह सीखी कि मूर्ति पूजा बहुत भयानक चीज़ है। मूर्ति पूजा करने वालों को वह घृणा करने लगे। उनकी श्रद्धेय माता जी अपने सनातन धर्म के विश्वास के अनुसार मूर्ति पूजा किया करती थीं। उन्होंने लिखा कि मैं उनको ही घृणा करने लगा और माता जी की मौजूदगी में माता जी को गालियां देता। मुबारिक थी वह घड़ी जब वह भगवान देवात्मा की शरण में आए और मां के सम्बन्ध में अपनी इस खराब अवस्था को देखा और इस पर दुख महसूस किया।

छोटी आयु में ही उनके पिता जी का देहांत हो गया था, इसलिए उनके पालन पोषण, शिक्षण आदि में उनकी माता जी को बहुत संग्राम करना पड़ा। अपने प्रांत के वह

चोटी के वकील बन गए और खूब धन कमाने लगे और धन से अपनी माता जी की सहायता करते थे। वह लिखते हैं कि देवात्मा की रोशनी प्राप्त करने से पहले मेरे दिल में यह विषैली चिन्ता उठती थी कि मैं जो अपने कमाए पैसों से अपनी माता जी की सहायता कर रहा हूं, यह उन पर एहसान कर रहा हूं। भगवान की रौशनी में मैं महसूस करता हूं कि माता के ऋण को अपनी सेवाओं से कभी नहीं उतार सकता। उन पर एहसान करने का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठ सकता।

अपने बचपन की एक घटना का उन्होंने इस प्रकार जिक्र किया है कि जब मैं दसवीं कक्षा में पढता था, तो मेरी माता जी को एक भारी बंडल दूर के स्थान पर ले जाना था। माता जी ने वह बंडल मुझे उठाने के लिए दे दिया। सारा रास्ता मैं उनके प्रति कठोर शब्द बोलता रहा और बुड़बडाता रहा। उसका कारण यह नहीं था कि मैं उस बंड़ल को उठा नहीं सकता था, बल्कि मैं यह महसूस कर रहा था कि लोग क्या कहेंगे। मैं उनकी नज़रों में छोटा समझा जाऊंगा। होना तो यह चाहिए था कि मैं अपना सौभाग्य महसूस करता कि माता ने मुझे सेवा बख्शी है। इसके विपरीत मैं यह सोच रहा था कि सारी दुनिया मुझे देख रही है, जैसे कि दुनियां को कोई और काम ही नहीं है। यदि सारी दुनिया मुझे देख भी रही होती तो मैं कोई पाप नहीं कर रहा था। अपनी जन्मदाता उपकारी माता की कुछ सहायता ही कर रहा था। अफ़सोस! प्रशंसा और मान बड़ाई का अनुराग मनुष्य की दृष्टि को उल्टा कर देता है।

श्रीमान कनल जी वह हस्ती हैं कि जिन्होंने कालिज के प्रिंसिपल के रूप में काम करते हुए देश के सैंकड़ों बच्चों को अपने माता पिता के सम्बन्ध में श्रद्धावान और सेवाकारी बना दिया। उन्होंने Altruism (सात्विक वृति) नाम की एक ऐसी पुस्तक लिखी है जो इस दुनियां में नायाब है। हमारे देश के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, और अन्य नेता गण यह कहते रहते हैं कि हमारी शिक्षा पद्धति में नैतिक मूल्यों की नितांत आवश्यकता है। श्रीमान कनल जी की लिखी हुई यह पुस्तक इस आवश्यकता को बहुत बड़ी हद तक पूरा करती है।

जो आत्मा स्वयं मां के सम्बन्ध में कृतज्ञता से शून्य थे, वह भगवान देवात्मा के प्रभावों को पाकर न केवल स्वयं अपनी माता के सम्बन्ध में श्रद्धावान और कृतज्ञ बन गए, बल्कि देश के सैंकड़ों बच्चों को उनके माता पिता के सम्बन्ध में श्रद्धावान और कृतज्ञ बना दिया।

<u>S.P.Kannal जी</u> (श्रीमान पी.वी.कनल जी के सुपुत्र) दार्शनिक, विद्वान और कर्मचारी क्या फरमाते हैं:-

(नेचर! तूने मुझे लासानी मां दी, उसको देखने की आंख भी दी होती)

"मेरी माता जी बचपन से ही अपनी विशेषता रखती थीं। बचपन में ही जब उनके अध्यापक ने एक दिन कहा कि मांस नहीं खाना चाहिए, तो उनके दयालु हृदय ने झट इस अपील को कबूल कर लिया और यद्यपि उनके घर में सब

लोग मांस खाते थे, उन्होंने उसी दिन से मांस खाना छोड़ दिया।

उसे छूतछात से घृणा थी। हरिजन स्त्रियों से भी खाना बनवा लेती थीं। अपने बेटे बेटियों के विवाह आदि में उन्होंने मिथ्या जात पात को कोई जगह न दी।

भगवान देवात्मा की सत्य धर्म की शिक्षा को पाकर उन्होंने महसूस किया कि अपने धर्म पति को उच्च जीवन में उत्साहित करना धर्म पत्नी का सच्चा ध्येय है। उनके धर्म पति जी ने सिंध में सामाजिक सुधार में नाम पाया हुआ था, उनकी वकालत चमक उठी थी। यदि माता जी साधारण स्वभाव की होतीं तो यहीं तक रह जातीं। उन्होंने सांसारिक प्रलोभनों को परे फैंक दिया। भगवान के मिशन में अपने धर्म पति को लगे देखकर और खुद भी लगकर चैन पाया। आप ने ऐसा करके स्त्री जाति को नई उच्चाई दी। पति पत्नी ने फकीराना जिन्दगी कबूल की। माता जी ने गृहस्थ की सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और अपने धर्म पति जी को बिल्कुल फिकर में न डाला। पहले कई सौ रूपया माहवार में गुजारा करते थे। अब प्रति माह केवल 50 रूपये में गुज़ारा किया मुझे याद है कि जब हमारे रिश्तेदार विदा होते समय हम बच्चों को कुछ पैसे दे जाते थे, तो वह पैसे हम माता जी को देकर जब दुबारा मांगते थे, तो आप एक एक बार रोकर जवाब देती थीं कि मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं है। वर्षों तक आपने नया कपड़ा तक नहीं बनवाया। जो दिक्कते असहाय थीं वह उनके लिए सहनीय हो गई। पिता जी का

रास्ता अध्यात्मिक पथ का रास्ता था। वह उस युद्ध में जख्मी होते थे, तो आप उनकी मरहम पट्टी करती थीं।"

सावित्री सिधू:- मां! तूने मेरी शादी पर मेरे कमाए रूपये खर्च क्यों किए? दे मेरे रूपये वापस

(एक और शानदार घटना)

श्रीमती सावित्री सिधू का विवाह एक देव समाजी परिवार में हुआ था। अपने पिता के देहान्त के बाद इनकी विधवा माता ने इनको संग्राम करके बी.ए.बी.टी.तक शिक्षा दिलवाई। जब इनका विवाह हुआ तो इनकी माता जी ने इनका ......हज़ार रूपया खर्च कर दिया। जब इन्हें पता लगा तो इन्होंने अपनी माता जी के साथ बहुत झगड़ा किया और कहा कि मेरा रूपया क्यों खर्च किया? इनकी माता जी ने कहा बेटी यह रूपया मैंने तुम्हारी शादी पर खर्च किया है। कुछ हालात ऐसे हो गए कि मुझे रूपया खर्च करना पड़ा। इन्होंने अपना कमाया ......हजार रूपया वापिस लेने के लिए अपनी माता जी को बहुत तंग किया। जब इनको सत्संग में शामिल होने का अवसर मिला, तो इन्होंने अपनी जन्मदाता माताजी के सम्बन्ध में अपना यह व्यवहार बहुत घृणित बोध हुआ और कई बार अपनी माता जी से क्षमा प्रार्थना की और उनके दुखी दिल को शान्त कियाा। इसके बाद दुनिया ने देखा कि श्रीमती सावित्री सिधू ने अपनी वृद्ध माँ को प्राय: 20 वर्ष अपने पास रखकर बहुत अच्छे भावों से उनकी सेवा की। पहले उनको खाना खिलाती बाद में स्वयं खाती। देखने वाले कहते थे कि सावित्री सिधू अपनी

माता जी को फूलों की तरह रखती थी। ऐसा प्रतीत होता है कि उन्होंने अपनी एक गलती के लिए बीस वर्ष तक माता जी की सेवा करके उनके प्रति अपने कटु व्यवहार का प्रायश्चित किया और माता जी का आर्शीवाद प्राप्त किया।

सावित्री सिधू शिक्षा विभाग में बहुत ऊचें पद पर कार्य करती थीं। अमरीका जाकर भी उन्होंने उच्च शिक्षा की प्राप्ति की थी। पढ़े लिखे लोगों में अपने उपकारियों के प्रति कृतज्ञता का भाव न हो, तो वह अपने सम्बन्धों में मुसीबत की चीज़ बन जाते हैं। देवात्मा अपने देव प्रभावों को अधिकारी आत्माओं तक पहुंचा कर उनमें श्रद्धा, कृतज्ञता आदि के उच्च भाव पैदा करते हैं, जिनसे उनके कड़वे सम्बन्ध मीठे बन जाते हैं।

श्रीमान परमेश्वर दत्त जी अपने एक पत्र में लिखते हैं:-

"मनुष्यों की नीच गति को दूर करके उनमें उच्च एकता लाने वाले परम पूजनीय भगवान्!

हे देव! आपकी धर्म शिक्षा अद्वितीय है। सम्बन्ध तत्व की जो शिक्षा आपने दी है, वह दुनिया भर की किसी धर्म शिक्षा में नहीं पाई जाती। जिस देश में सम्बन्धों से कटकर जंगलों में चले जाने, अथवा किसी के संबन्ध में किसी प्रकार का भी कर्तव्य पूरा न करने वाले जनों की पूजा होती हो वहां ठीक इसके विरूद्ध प्रत्येक सम्बन्ध में नीच गति से मुक्त होने और मुक्त होने और उच्च गतिमूलक एकता लाने के लिए साधनों में मनुष्यात्माओं को लगा देना, अधिकारी जनों

पर आपकी बहुत बड़ी महिमा को प्रकट किए बिना नहीं रह सकता। संबंध तत्व विषयक आपके निर्माण किए हुए सोलह यज्ञों के साधनों को करके आपके सेवकों आदि के आत्मा में जितना हित आया है, और आगे को आएगा, वह दुनिया में एक नया युग पैदा कर देगा और कर रहा है।

आपकी शिक्षा के अनुसार यद्यपि मैं यज्ञ साधनों को ठीक ठीक करने के अभी तक योग्य नहीं बना और कुछ बर्ष पहले तो मैं ओर भी अयोग्य था। परन्तु उस समय भी मात-पिता संतान यज्ञ और व्रत के जो साधन मैंने किए थे और उससे जो स्वर्गीय दृश्य उत्पन्न होता था, वह दुनिया में आपकी समाज से बाहर और कहीं दिखाई नहीं देता। कुछ वर्ष पहले जब मेरे पिता इसी लोक में थे और हम दोनों को आपकी शरण में आकर मात पिता संतान यज्ञ और व्रत के साधनों को करने का अधिकार मिल चुका था, तब आपकी ज्योति और शक्ति हमारे इन साधनों में जो फल पैदा करती थी, उनको प्रभावों को पाकर मैं और मेरे पिता धन्य धन्य होते थे ओर आपकी शिक्षा की महिमा को उपलब्ध करके आपके श्री चरणों में झुक जाते थे। मेरे वृद्ध पिता ने अपनी प्राय: 60 साल की लम्बी आयु में इस दुनिया में सिवाए आपकी समाज के और कहीं नहीं देखा कि संतान अर्चन की सामग्री से अपने जन्म दाता का अर्चन करती हो, उनके उपकारों और अपने अपराधों को स्मरण करके उनका प्रकाश करती हो, उनके परिशोध के लिए प्रतिज्ञाएं करती हो, विशेष सेवा करके और भेंट चढ़ाकर जन्म दाता को प्रसन्न करती हो, और उनसे आर्शीवाद और प्यार प्राप्त करती हो, और

परस्पर के सम्बन्ध को विकार रहित, पवित्र और मीठा बनाने की यथा सामर्थ्य चेष्टा करती हो। और इसी प्रकार जन्म दाता अपनी संतान के सब प्रकार के शुभ में सहाय करते हों, और यदि अपने कुसंस्कार और किसी और कारण से संतान की उन्नति में सहायक न बन सके हों, तो उस पर विचार करके दुखी होते हों और उसका प्रकाश करते हों। आपकी शरण में आकर मेरे पिता ने अपने ही सम्बन्ध में उपरोक्त दृश्य को देखकर मेरे और अपने बहुत बड़े सौभाग्य अनुभव किए, और हम दोनों ही आपके इस उपकार के लिए कि आपने हमारे जीवनों में ऐसा श्रेष्ठ परिवर्तन कर दिया, आपको बहुत बहुत धन्यवाद देते थे। अब यद्यपि इस लोक में मेरे पास मेरे माता पिता नहीं हैं और मैं उनके साक्षात दर्शन और सेवा आदि से वंचित हूं। परन्तु आपकी कृपा से मात-पिता संतान यज्ञ और व्रत के साधनों में आपके देव प्रभावों की विशेष सहायता मिली है, और मेरा कल्याण साधन हुआ है। मुझे अपने माता-पिता के सम्बन्ध में उपकार स्मरण और अपराध चिन्तन के साधनों से बहुत लाभ हुआ है। पहले की अपेक्षा मेरा हृदय उनके और अधिक निकट हुआ है, उनके प्रति सम्मान का भाव बढ़ा है और उनके शुभ के लिए आकांक्षा और गाढ़ हुई है। आपके इस दान के लिए मैं आपके श्रीचरणों में सिर रखकर आपको बारम्बार धन्यवाद देता हूं।

ऐसा हो कि आपकी ज्योति अंधकार ग्रस्त हृदयों में पहुंचे और वह आपकी शिक्षा की महिमा को उपलब्ध करके उसे ग्रहण करें, ओर उसके द्वारा आपका कल्याण कर सकें।

में आपके जीवन के दृष्टांत से आपकी महिमा को महान करने में काम आ सकूं, और आपकी देव ज्योति और आपका देव तेज़ अधिकारी हृदयों में काम करके दुनिया में सच्चा स्वर्ग लावे।

आज प्रात:काल ही तैयार होकर स्नान करके और कपड़े बदलकर आपकी ज्योति और शक्ति को पाने के लिए देर तक गहरी प्रार्थना करके आपका दान पाने के लिए अपने हृदय को दीन बनाकर सदर से शहर पहुंचा। वहां जाकर जब विधि पूर्वक व्रत का साधन कराने लगा तो मेरे हृदय में एक अजीब प्रकार की दीनता का भाव जागा। मैंने उसी समय सभा में भाव प्रकाश किया कि मुझे जो श्री देव गुरू भगवान की देव ज्योति और उनके देव तेज़ की महिमा के प्रकट करने का जरिया बनाया गया है, वह आप लोगों ने बड़ा अधिकार दिया है। उससे अब तक मेरा कल्याण हुआ है, और इस सभा में जरूर होने की आशा है। सभा में आपका दान मुझे खास तौर पर मिला। उस समय मेरा मुह नहीं बोलता था, मानों आपकी शक्ति मेरे हृदय से शब्द निकाल रही थी। मेरे सामने आपकी शिक्षा की महिमा और आपके कार्य के फलों की अद्वितीय श्रेष्ठता इतनी ज्यादा आ रही थी कि मैं उसे इतनी देर में सभा स्थित जनों को किसी तरह बता नहीं सकता था। मैं तो आपकी महिमा उपलब्ध करते करते मानों आपके श्री चरणों में ही जा पहुंचा था, और मेरी आंखों से आंसू जारी हो गए थे। इसके भिन्न ऐसा प्रतीत होता था कि हृदय पर भी आपकी शक्ति ने शुभ प्रभाव डाले,

आपके इस दान के लिए आपको बारम्बार दिल की तह से धन्यवाद देता हूं।"

एक सभा में ओमप्रकाश तलवाड़ा खुर्द ने यह भजन गाया।

मिली मुझ अंधे को आँखें

मनुष्य को जबकि बचपन की सुहानी याद आती है।
पिता का प्यार माँ की मेहरबानी याद आती है।

जब मैं नन्हां सा बच्चा था, दूध अपना पिलाती थी।
जब मैं रात को रोता था, लोरियां दे देकर सुलाती थी।
लिटाकर गोद में अपनी छाती से लगाती थी।

जब मैं बिस्तर गीला करता था, सूखे में लिटाती थी।
जब मैं नहाने से डरता था, पकड़ मुझको नहलाती थी।
डालकर आंखों में सूरमा नए कपड़े पहनाती थी।

जब मैं स्कूल जाता था, बस्ता तैयार रखती थी।
जब वापिस घर आता था, स्वादिष्ट भोजन खिलाती थी
बनकर नौकरानी वो झूठे बर्तन उठाती थी।

जब मैं जिद करता था, रूठे को मनाती थी
जब घर देर से आता था, खड़ी इंतजार करती थी
लड़ाए लाड़ वो कितने अब वो याद आते हैं।

महा सौभाग्य है माता दर सतगुरू का मिला मुझको
मिली मुझ अंधे को आंखें मेरी माता जन्म दाता
करूँ अब याद उपकारों को और करूँ सेवा तेरी माता

साहिबान! कैसे शानदार शब्द हैं। बचपन की जब याद सुहानी आती है तो पिता का प्यार मां की मेहरबानी याद आती है। मुझे भी याद है जब स्कूल में पढ़ते थे छुट्टी होनी गर्मियों के दिन होते थे उस समय यह कारें बसें बगैरह नहीं थी। सारे शहर में दो कारें थी और सारे शहर में शायद 10-12 साईकिल होंगें। सब पैदल आते जाते थे। आर्य स्कूल से हम भाग कर आते थे। हम 9-10 नौजवान थे धूप में भागते भागते घर आते थे तो मुंह लाल हो जाता था। जब घर पहुंचते थे तो एक टेबल फैन जो माँ ने खरीदा था वह टेबल फैन लगाया होता था और ठंड़े पानी से कमरा धोया होता था। चटाईयां बिछाई होती थी और तंदूर तप रहा होता था परात में आटा गूंधकर रखा होता था। जब हमें देखती आ गए तो तंदूर में रोटियां लगानी शुरू कर देती, और पंखे के आगे सभी को बिठाकर खाना खिलाती।

3 (iv)

भगवान देवात्मा के अद्वितीय देव प्रभावों से लुधियाना में भी अद्वितीय कार्य हम लोगों ने देखा है और देव प्रभावों से हितकर संग्राम होता रहा है।

साहिबान! हम लोग कैसे बेटे हैं। उसके विषय में एक घटना याद आ रही है जो धर्म चन्द शर्मा जी की है। मैं गया हूं शर्मा जी के घर, मेरे जानकार थे देव समाज के मेंबर भी थे मुझे पता नहीं था कि वह कर्मचारी के बेटे हैं। मैंने कहा कौन से कर्मचारी के बेटे हो, कहते चेतराम जी के, वह बहुत बड़े पटवारी हुए हैं उनका बेटा हूं। कमाल का लाभ उठाया उन्होंने। धर्म चन्द शर्मा जी का देहांत हो गया उन्हें दिल की बीमारी थी। वह मेरे बहुत अच्छे मित्र थे। मैं उनके घर आया जाया करता था। जब मैं उनकी मृत्यु के दो चार महीनों के बाद उनके घर गया तो उनकी फोटो ड्राईग रूम की दीवार पर लगी हुई पाई। जब थोड़े और महीनों के बाद उनके घर पर गया तो देखा कि उनकी फोटो दीवार पर नही थी। मेरे पूछने पर पता चला कि घर में सफेदी करवाई थी, सफाई करवाई थी इसलिए वह फोटो स्टोर रूम में रखी हुई है। जब दुबारा चार-छ: महीनों के बाद गया और पूछा कि फोटो कहा है तो पता चला कि वह घर की किसी अलमारी की डाट के ऊपर रखी हुई है और उस पर मिट्टी पड़ी हुई है। मैंने कहा ले आओ मेरे यहां बैठे हुए तो कम से कम रख दो। 15 मिनट के बाद वापिस आकर कहने लगे कि मिल नही रही। शर्मा जी के घर दो

पुत्र बधुएं हैं। घर में एक पत्नी बेचारी का क्या ज़ोर चलता है जब पुत्र बधुए ही ऐसी हों जाए तो बेचारी मां क्या करेगी। जब लोग दुनियां से चले जाते हैं तो सब संबंधी उसे भूल जाते हैं।

साथियो गुरू महाराज जी का दृष्टांत मैंने आपको बताया और अपने प्रभावों से देवात्मा ने कमाल का काम कर दिया। यह मैं आपको चन्द मिनट में बताता हूं। लुधियाना में एक सभा हुई थी। मेरे पास बहुत कुछ है जो मैंने 55 वर्षों में इक्टठा किया है। मेरे पास सारा रिकाड़ है मैंने एक कागज़ भी इधर से उधर नहीं होने दिया। अगर अनजाने में कोई कागज इधर उधर हो गया हो तो मुझे पता नहीं। अब जब मैं इक्टठा करने लगा तो मुझे सब मिल गया। जब मैंने इनको लिपि बध किया तो मुझे सब मिल गया और उस पर 550 Pages की किताब बन गई।

साहिबान! लुधियाना की सभा की एक घटना इस प्रकार है। मैं आपको पढ़कर सुना रहा हूं। यह माता पिता की सभा का एक वर्णन है जो सामाजिक अखबार में छपा था।

"07-01-1984 को लुधियाना में दिन को तीन बजे यह सभा श्रीमान यशपाल जी भल्ला के यहां रखी गई थी। मोगा से इस कल्याणकारी सतसंग में शामिल होने के लिए वैन में कई धर्म सम्बन्धी पधारे।

श्रीमान निर्मल सिंह जी ने यह सभा कराई। ज्योंहि बीबी सत्यावती जी ने अपनी मीठी आवाज में मां से

सम्बन्धित अपना बनाया हुआ गीत "माता ओ मेरी माता, तेरा रूप करूं वर्णन प्राणों की दाता हो, तुम से है मेरा तन मन" उच्च भावों से भरकर गाना शुरू किया तो उपस्थित जनों में से कई जनों की आंखों से आंसुओं की नदी बह निकली। माननीय श्रीमान जी ने अपने खास अंदाज में जब माता पिता के सम्बन्ध का वर्णन शुरू किया तो पूजनीय भगवान की कृपा से देव प्रभाव की रो जारी हो गई। क्या बच्चे क्या जवान और क्या बड़ी उमर के स्त्री पुरूष जारो कतार आंसू बहाने लगे। श्री सभापति जी का सारा ब्यान भगवान देवात्मा की कृपा से अत्यन्त प्रभावशाली था। उनके ब्यान के बाद उपस्थित जनों ने अपने अपने भावों का प्रकाश करना शुरू किया।

जब श्रीमान यशपाल जी भल्ला ने बहते आंसुओं के साथ अपने पत्र का पाठ किया और अभी चन्द फिकरे ही पढ़े थे, कि सभा में विराजमान उनकी माता जी बेबस होकर बोल पडी कि मेरा बच्चा यशपाल युग युग जिए। मैं चाहती हूं कि मेरी उमर इसे लग जाए। मेरी आंख के आप्रेशन में मुझे हस्पताल में बढ़िया कमरे में रखा। फलों से मेरा मेज़ भरा रहता था। चन्द रोज हुए मुझे गर्म स्वैटर लेने के लिए सौ रूपये दिए। मैं लोगों को बतलाती हूँ कि मेरा बच्चा श्रवण कुमार है उसको देखकर मेरे दूसरे बच्चे भी मेरी बहुत सेवा करते है (मानो मां अपना ब्यान बन्द न करना चाहती थी) फिर श्रीमान जी (यशपाल)ने अपने माता पिता के सम्बन्ध में अपने पत्र का पाठ किया। यशपाल जी की माता जी फिर कहने लगी कि इस सभा में मुझे अपने माता जी के सम्बन्ध

में बहुत सी गलतियां नज़र आई हैं। मैने अपनी मां को बहुत तंग किया था। उसका बहुत अफसोस हो रहा है।

यह गुरू महाराज जी के प्रभाव काम करते हैं। जब गुरू महाराज जी के प्रभावों की रो बहती है वह बहा कर ले जाती है। जैसे सुनामी आती है। सुनामी अब मैंने टीवी पर देखी है। सुनामी का एक दृश्य टीवी पर दिखा रहे थे जब सुनामी आई तो एक होटल में एक फैमली के चार सदस्य piller को पकड़ कर खड़े हो गए कि कहीं बह न जाएं लेकिन सुनामी की जब दूसरी लहर आई तो वह सब बह गए। मैंने यह दृश्य टीवी पर देखा।

देवात्मा के प्रभावों की जब सुनामी आती है तो फिर अधिकारी आत्मा ताब नहीं ला सकते वो उसके आगे नहीं ठहर सकते कमाल हो जाती है। यह सुनामी ही आ रही थी उस सभा में। इस सभा में मुझे अपनी बजुर्ग माता जी के सम्बन्ध में बहुत सारी गल्तियां नज़र आ गई। मेरी माता जी को अपनी माता जी याद आ गई और फरमाया मैंने अपनी माता जी को बहुत तंग किया। उसका मुझे बहुत अफ़सोस है। यह गुरू महाराज जी के प्रभाव काम कर रहे थे। साहिबान! देवात्मा के जीवन का दृष्टांत देखो, कैसी शिक्षा दी है, और देखो उन्होंने कारज कैसा किया है।

इसी सिलसिले में हमारे एक दूसरे साथी श्रीमान जगजीत सिंह जी जिनकी जिंदगी में भी देवसमाज के कारण परिवर्तन आया है। वह भी बहुत प्रभावित हुये बैठे थे, कहने लगे कि अभी अपनी एक नीच गति नज़र आई, जो पहले

नहीं आई थी। "मैं यू.पी के एक स्कूल में पढ़ता था। वह स्कूल अब बन्द हो चुका था मैंने ईर्ष्या और द्वेष के भाव से भर कर एक सहपाठी की किताबें चुराकर फैंक दी थीं। वह बहुत परेशान हुआ, परंतु मैंने उसे नहीं बताया। अब मुझे बहुत दु:ख हो रहा है। वह स्कूल बंद हो चुका है। उस सहपाठी का मुझे कुछ पता नहीं है। कृपा करके मुझे बताया जाये कि मैं अपनी इस भयानक गति का क्या परिशोध करूं? अंत में उस सज्जन ने कई निर्धन बच्चों की पढ़ाई के लिये किताबें आदि देकर सहायता करने का निर्णय किया।"

यह दृश्य देखकर बरबस ही हमारे दिल से यह आवाज़ निकली कि सतगुरू धन्य हैं जो अधिकारी दिलों में ऐसा निराला परिवर्तन करते हैं। मुझे जीवन दाता सतगुरू के चरणों में आने का सौभाग्य 1954 में मिला था। तीस वर्ष का लंबा अंतराल हो चुका है बेहद दान पाया है। यह सभा जनवरी 1984 में हो रही थी बहुत भला हुआ है। इस दीर्घ काल में जितना परिवर्तन जो अद्वित्य निराले दृश्य मैंने देखे हैं, उनमें से एक-एक दृश्य ने मेरे दिल पर बड़ी गहरी छाप लगाई है और दिल पर देवात्मा सतगुरू की पकड़ को प्रत्येक परिवर्तन ने उसे और मजबूत किया है। ऐसे बहुत से दृश्य मेरे सामने घूम रहें हैं और उन महान परिवर्तनों के एक बड़े इतिहास से अपना जुड़ना बहुत ही सौभाग्य अनुभव हुआ है। आज का दृश्य भी हृदय में एक नये अध्याय की तरह जुड़ गया है। व दिल उच्च भाव से भर गया है। एक तरफ दिल पर देवात्मा सतगुरू के लिये गहरे धन्यवाद के

भाव अनुभव हुये, दूसरी ओर इस अद्वितीय कार्य में अपना कंधा लगाने की जबरदस्त हलचल पैदा कर दी है।

इसके बाद श्रीमान प्राणनाथ जी ने वर्णन किया।

"मुझे सभा में बहुत लाभ हुआ है। मैं हैरान हूं कि मेरी जिंदगी में ऐसा परिवर्तन किस प्रकार आ गया। मेरा स्वभाव बदलता ही जा रहा है। मैं एक नये प्रकार का इंसान बन रहा हूं मेरा रूप बड़ा घिनावना था। एक बार मैंने अपने उपकारी शिक्षक को इतने दाम न दिये जितने वह मांग रहे थे। मैं कुछ कम देना चाहता था। परन्तु वह कुछ ज्यादा मांगते थे। मैंने ज्यादा देने से इंकार कर दिया। उन्होंने पैसे न लिये। मैं चुप कर गया। पूजनीय भगवान की शरण में आकर मुझे अपनी यह गति बहुत ही बुरी लगी। मैं जालंधर गया। वहां वह शिक्षक मिल गये। मैं उन्हें देखकर रोने लग गया। उस समय मेरी जेब में जितने रूपये थे, वह सब मैंने उनको दे दिये। मेरा रोना नहीं रूक रहा था। मैंने उनको ये पैसे देकर ही चैन पाया। आज भी जब वह उपकारी शिक्षक याद आते हैं तो मेरा दिल भर भर आता है।

यह वर्णन करते समय यह सज्जन ज़ार-ज़ार रोने लगे।

उन्होंने आगे बताया कि मैं बचपन में बहुत जालिम था। मुझे खुद नहीं पता कि मेरा दिल इतना नर्म कैसे हो गया है। मैंने चील के छोटे बच्चों को मार कर आग में भूना, नहर में कांटा डालकर एक मछली पकड़ लाया,

जिसको पकाकर सबने खाया और मेरी बहुत ही तारीफ़ की। एक बार अपनी गुलेल से एक कबूतर को मार कर गिरा दिया। वह तड़प तड़प कर मर गया, परिवार ने उसे पका कर खाया। आज वह अपने दुष्ट कर्म याद आते रहें हैं। आह! मैं इतना जालिम था। देवात्मा सतगुरू ने मुझे कितना नरम दिल बना दिया।

मैं अपनी नेक उपकारी धर्मपत्नी पर भी बहुत ज़ुल्म किया करता था। एक बार जब सुधीर पैदा हुआ तो मैंने उनको तंग किया। वह सारी रात मेरे पांव के पास बैठ कर गिड़गिड़ाती रही और मुझसे क्षमा मांगती रही। पर मेरे कठोर दिल पर कोई असर न हुआ और मैं आराम से सोता रहा। आज मुझे ये सब ज़ुल्म याद आ रहें हैं (ये वर्णन करते हुये वह ज़ार ज़ार रोने लगे) और फिर कहा- कि अब मैं सतगुरू की कृपा से रात की डयूटी पर जाते समय इस प्रकार तैयार होता हूं कि किसी की नींद न टूट जाये। ये परिवर्तन मेरे सतगुरू ने ही पैदा किया है।"

उनकी नेक धर्मपत्नी जी वहां पर ही फूट फूट कर रो रही थी, कहने लगी कि मुझे भी अपनी एक नीच गति याद आ रही है और बहुत बुरी लगी है। हमारा लड़का सुधीर अपने शिक्षको के विषय में घर में कहता था कि उन शिक्षकों के हम लड़कों ने उल्टे सीधे नाम रखे हुये हैं। और जब हमारा लड़का हमें वह नाम बताता तो हम सब बहुत हंसते थे। मुझे अपना यह घटिया रूप नज़र आ रहा है। मैं अब उसे इस प्रकार के नाम रखने व पुकारने से रोकूंगी व शिक्षकों का सम्मान करने की प्रेरणा दूंगी।

इसी तरह श्रीमान मुलखराज और श्रीमान हरबंस लाल जी कातिब ने अपने भावों का प्रकाश किया। इसके पश्चात श्री मान यशपाल जी, श्रीमान जगदीश राय जी और श्रीमान प्राणनाथ जी के माननीय पिताओं ने बारी बारी खड़े होकर इस बात की जिन्दा शहादत पेश की कि किस तरह से देव समाज की उच्च संगत द्वारा उनके योग्य पुत्र उनकी सेवा सम्मान करके उनके जीवन को सुखी, संतुष्ट और प्रसन्न करने का कारण बने हुए हैं इसके अनन्तर सभा में उपस्थित बेटे बेटियों ने अपने पिता माताओं के गले में फूलों के हार पहना कर उनका सम्मान प्रदर्शन किया और गले मिलकर पवित्र आंसुओं से अपने दिलों को शुद्ध और निकट किया। यह देवराज के उच्च दृश्य थे जो लुधियाना शहर की लाखों की आबादी में केवल विकास नगर कालोनी के एक छोटे से कमरे में उत्पन्न हो रहे थे। यह महान कारज दिनों दिन उन्नति करने के लिए है बेशक इसकी प्रगति की गति कितनी ही धीमी हो। आज सारे दुखिया मानव को ऐसे कारज की सबसे बढ़कर आवश्यकता है धन्य है वो जीवन जो इस कारज के बढ़ाने और फैलाने में लगकर सफल हो सकेगा। इसके पश्चात् सभा समाप्त हुई और प्रीति भोज हुआ।

साथियो यह मैंने आपको एक सभा का हाल बताया है मेरे पास इस पुस्तक में ऐसी 40-50 सभाओं के हालात मौजूद हैं जो परमपूजनीय भगवान देवात्मा के प्रभावों में इसी रिश्ते में माता पिता के सम्बन्ध में तूफान लाए थे।

साहिबान! अब आगे चलते हैं। लुधियाना में ही फील्ड़गंज कूचा नम्बर 7 में फकीर चन्द जी रहते थे। वहां पर हम सत्संग किया करते थे। शुरू शुरू में हमने सत्संग किया मुलखराज जी हमारे साथी होते थे और भी कई साथी होते थे, तो यहां ओमप्रकाश जी भी थे तो फकीर चन्द जी का एक बेटा था जिसका नाम मोहन था। मोहन की माता जी के दांत ऊंचे थे और वह कोई ज्यादा खूबसूरत नहीं लगती थी। एक बार कोई मोहन से मिलने के लिए आया वह अपनी माता से इस बात के लिए लड़ने लग गया कि तु बाहर क्यों गई तेरी शक्ल देखकर लोग क्या सोचेंगे कि मेरी मां कैसी है वो लडका सुन्दर था तो पैदा किसने किया। वो कहती है कि मेरी इस शक्ल ने तुम्हे पैदा किया, तुम्हें लोरियां दी, तुम्हारे पैदा होने पर लडडू बांटे थे, स्कूल जाने पर पतासे बांटे थे। क्या क्या किया उनकी गिनती नहीं है। अब उन पर भी देव प्रभावों की ऐसी रो चली कि जब श्रीमान फकीर चन्द जी के घर सभा हो रही थी उनका बेटा खड़ा हो गया उस बेटे ने कहा माता जी आप भी खड़ी हो जाओ आज मैं सबके सामने अपनी असली हालत बताना चाहता हूं बेचारी सादी सी मां ढ़ीले ढाले से कपड़े पहने हुए वह खड़ी हो गई। बेटे ने कहा कि मां मैं पहले तुम्हारी सूरत से नफ़रत करता था वह अपनी मां के चरणों में लेट गया। मुझे सारे दृश्य याद हैं उसने कहा कि मेरी मां के दांत उंचे हैं, वह इतनी सुन्दर नहीं है। मैंने अपनी मां पर जुल्म किया कि तुमने दरवाजा क्यों खोला तो उस समय वह जब अपनी मां के चरणों में लेटे तो सभा हाल में सुनामी आ गई। अधिकारी आत्मा ताब नहीं ला सकते ऐसे दृश्य की जो

देवात्मा के देव प्रभावों से दृश्य पैदा होते हैं तो कमाल हो जाती है।

मां बाप बड़ी बड़ी कुर्बानियां करते हैं मैं तो घटनाएं सुन सुन कर हैरान हो जाता हूं। एक भिखारिन है एक दिन कहती मुझे रंगीन शाल दे दो। काहे को भई सफेद शाल ले लो रंगीन शाल क्या करनी है। कहती मेरी बेटी देहरादून में B.Sc पढ़ती है। उसको भेजनी है। यह देखिए खुद भिखारिन है और बेटी देहरादून में पढ़ती है। हमारी भी एक स्वीपर है उसका बेटा मैडिकल कर रहा है। मुझे नहीं पता था एक दिन मुझे कहती बाबू जी आपसे प्रार्थना है कि आपकी जो ऊपर इंटरनेट की सेवा है। मैंने कहा इसको इंटरनेट का पता है मां है न खुद अनपढ़ है और दोनों बेटे मैडिकल कर रहें हैं। सिर्फ 600 रूपए लेती है (थोड़ी देर के लिए आती है) हमारे यहा दो तीन बाथरूम साफ़ करके कहती मेरा बेटा आएगा उसका इंटरनेट से फार्म निकलवा कर दे देना जो उसने मैडिकल का भरकर देना है। मैंने पूछा बीबी तुम बेटे को मैडिकल करवा रही हो, तो बोली की मैं अपना आप दाव पर लगाकर पढ़ा रही हूं और ऐसे बच्चे बड़े होकर जब कृतघ्न बनते हैं अपमान मूलक शब्द कहते हैं। तभी तो लेखकों ने लिखा है कि ऐ सांपों तुम मुझे डस लो तुम सारे सांप इक्टठे होकर मुझे डस लो इतना दर्द नहीं होगा जितना एक नाशुक्री संतान के नाशुक्रे शब्दों का दर्द होता है बर्फीली हवाओ तुम चलो चलकर मेरा सीना चीर दो में ठंड से ठिठुर कर मर सकता हूं। तब भी इतना दर्द नहीं होगा जितना नाशुक्री संतान के शब्दों से होता है।

साहिबान! वाह पूजनीय भगवान ने यह गीत रचा है:–

"नया जन्म यह दुनियां पावे,
नया रूप यह दुनिया पावे,
राज सत्य का जग में आवे,
जो कुछ मिथ्या सब मिट जावे,
जो कुछ शुभ हो वह सब आवे,
जो कुछ अशुभ नष्ट सब होवे।"

"परम लक्ष्य मेरा पूर्ण हो,
सकल विभागों में नेचर के,
उच्च गति प्रद परिवर्तन हो,
नीच गति हो विनष्ट दिन दिन,
श्रेष्ठ मेल उनमें उत्पन्न हो।"

शुक्र गुज़ारी से नया जन्म पाया जाएगा। श्रद्धा से नया जन्म पाया जाएगा। जब उपकार सिमरण होंगे तो घर घर में बहार आयेगी old homes में माता पिता नहीं जाएंगे। मैं कसौली में सत्संग पर जाया करता था तो वहां एक वृद्ध आश्रम है थोडी सी दूर है मैं एक दिन चला गया कि चलो यह जो बजुर्ग बैठे हैं इनको कुछ खाना पीना देकर आएं। सबसे पहले कमरे की दहलीज पर एक बजुर्ग बैठा था। मुझे आज भी याद है। लगभग शारदा जी जैसा लगता था। थोड़ा सा उधेड़ था बेचारा, जिन्दगी के संग्राम से उधड़

गया था। एक पैकेट मुरमुरे और गच्चक देकर मैंने उनसे कहा आप रख लो उसने कहा बहुत बहुत मेहरबानी आपकी। मैंने पूछा आप यहां क्यों आए हैं कहते आपको नहीं पता कि मैं यहां क्यों आया हूं। मैंने कहा नहीं मुझे नहीं पता मुझे लगा कि आप बीमार हैं और आपका वारिस कोई नहीं है। कहते ऐसी बात न कहो कि मेरा वारिस कोई नहीं। मेरे 9 बेटे हैं (खुद कहां बैठे हैं वृद्ध आश्रम में) कहते एक नेवी में है, चार आई. ए. एस. आफ़िसर हैं। तीन और बड़े आफ़िसर हैं। कहते मैंने दिल्ली में 9 मकान बनवाए। सब को एक एक मकान दे दिया अब मेरे पास कुछ नहीं है। उनके पास सब नौकर चाकर गाड़ियां हैं। मैंने कहा आप यहां क्यों हैं। कहते मुझे वह अपने पास नहीं रखते। क्योंकि मैं जैसा भी हूं वह मुझे अपनी शान के खिलाफ़ समझते हैं। बनाया किसने, पढ़ाया किसने, जन्म किसने दिया, बड़ा किसने किया, उंगलियां पकड़कर लोरियां दी, लड्डू बांटे। पताशे बांटे, खुशियां मनाई, बधाईयां मिली क्या इस दिन के लिए। कहते नौं के नौं मकान मैंने बांट दिए। अब मेरे पास कोई नहीं रहा और मैं यहां रहता हूं। यह कहकर वह बजुर्ग इतना रोया कि मैं आपको बता नहीं सकता। जब मैं कसौली मे रहता था तब मैं उन्हें रोज़ मिलता था। इतनी नाशुकी दुनिया।

साहिबान! यह हालात हैं दुनिया के इसमें पूजनीय भगवान ने इतना शानदार काम शुरू किया कि स्वर्गीय परिवार बना दिए हैं। स्वर्गीय बेटे बना दिए हैं। स्वर्गीय पिता बना दिए हैं। स्वर्गीय माताएं बना दी हैं। ऐसे कई लेख मैं

आपको पढ़ कर सुना सकता हूं। यह एक साप्ताहिक पर्चा है इसमें यह सरिता जी (जो सामने बैठी हैं) का भाव प्रकाश छपा हुआ है अपने माता पिता के बारे में सुनीता जी (सरिता जी की बहन) का भी भाव प्रकाश छपा हुआ है रोजी (सुनील बुटानी) का भी छपा हुआ है। कितनी सेवा की थी उसके माता पिता ने दो साल तक हस्पताल में सेवा की जब उसको problem हुई थी। ऐसे उपकार सिमरन के पत्र जगह जगह छपे हुए हैं।

एक और घटना सुना रहा हूं।

गुम हुई मां मिल गई

02-12-1981

(लुधियाना हमारे साधन मंदिर में एक आश्चर्यजनक घटना)

विक्रमा दित्य का परिवर्तन

सर्दियों के दिन थे शाम का समय था। धर्म विकासालय के सेहन में कई और साथियों के साथ सफाई इत्यादि की सेवा में लगा हुआ था। एक धर्म संबंधी ने आवाज देकर कहा कि कोई महात्मा जी आपसे मिलना चाहते हैं

उनके साथ एक साधू चले आ रहे थे। उन्होंने बिजली जैसे सफेद कपड़े पहने हुये थे तथा उनके मुंह पर भी सफेद पटटी बंधी हुई थी पांव से नंगे थे और हाथ में एक छोटा सा थैला थामे हुये थे। उन्हें देखकर मुझे यह तो

पता चल गया कि ये तो जैनी साधू हैं। परन्तु वह इस समय यहां तशरीफ क्यों लाये हुये हैं, ये जानने के लिये मैं अपने हाथ का झाडू छोड़कर उनकी तरफ बढ़ा।

मैंने उनको प्रणाम किया। उन्होंने अपने सिर को थोड़ा सा आगे झुका कर मेरे प्रणाम का जबाब दिया। मैंने उनसे पूछा कि महाराज, आप यहां किससे मिलना चाहते हैं।

मैं फिरोजपुर से आया हुआ हूं। वहां प्रिंसीपल धर्मवीर जी से मेरी मुलाकात हुई थी। उन्होंने मुझे यहां का पता दिया और एक पत्र भी दिया है। थैले में से एक पत्र निकालकर उन्होंने मेरे हाथ में थमा दिया।

आपका शुभ नाम क्या है मैंने पूछा।

आप मुझे महाराज कहकर बुला सकते हैं।

मैं जैनी साधू हूं। 12 वर्ष से जैन धर्म की सेवा कर रहा हूं। समाज से संबंधित कुछ पुस्तके पढ़ने का अवसर मिला है। मैं इस धर्म कि कुछ बातों को जानने के लिये उत्सुकता लिये यहां चला आया हूं मैं कुछ दिन यहां आपके पास ठहर कर अच्छी तरह से इस धर्म का अध्ययन करना चाहता हूं।

मैंने उनके ठहरने का उचित प्रबंध पर दिया। वह लगातार पुस्तकों के अध्ययन में रहे व इसके अतिरिक्त सतसंगों में भी शामिल होने लगे। एक दिन मुझसे कहने लगे कि मैं अपना लिबास बदलना चाहता हूं। पायजामा

कुर्ता ठीक रहेगा क्या? क्योंकि इससे सेवा में भी आसानी रहेगी। एक सप्ताह तक तो आप पुस्तकों के पाठ में लगे रहे फिर और धर्म संबंधियों के साथ सेवा संबंधी कामों जैसे कि झाड़ू लगाना, खाना खिलाना और किताबें बेचने के कार्य में सहायक होने लगे।

भगवान देवात्मा के देवप्रभाव से जो उच्च परिवर्तन आना आरंभ हो गया था। उस जैन साधू ने अपने जीवन के सत्य को स्पष्ट देखना आरंभ कर दिया। उनके मिथ्या विश्वासों से उनको मोक्ष मिल गई। अपनी गतियों के हित अहित का उन्हें बोध होने लगा। आत्मिक विकास के नियमों की होश आने लगी। और वह सेवा करवाने के स्थान पर सेवा करने में अधिक उत्साह व प्रसन्नता प्रकट करने लगे।

जनवरी का महीना था। लुधियाना में श्रीमान यशपाल जी के यहां सतसंग के लिये कई धर्म संबंधी पहुंच चुके थे। उन संबंधियों में वह जैन मुनि भी शामिल थे। मेरे साथ ही उनकी चारपाई भी थी। अगले दिन सुबह माता पिता संतान व्रत की सभा होने वाली थी। समस्त धर्म संबंधियों में बड़ा चाव था।

फूलों के हार बनाये जा रहे थे, ताकि प्रात:काल की सभा में अपने अपने माता पिता को पहनाकर उनके प्रति अपने सम्मान का प्रदर्शन किया जा सके। रात को सोने से पहले बातचीत के दौरान जब उनसे बात हुई कि आपके

माता और पिता जी कहां हैं तो वे बताने लगे कि पिता जी तो परलोक सिधार चुके हैं परन्तु माता जी अभी जीवित हैं।

किस जगह रहते हैं आपके माता जी? मैंने उनसे पूछा। लुधियाना में ही रहते हैं।

तो फिर आप उन्हें कल की सभा में जरूर लाईएगा।

वह एक सर्द आह भरकर बोले कि मुझे अपनी माता जी के घर का पता मालूम नहीं है। पिछले 12 वर्ष से मैं अपने घर नहीं गया हूं उन्होंने घर बदल लिया है। अब तो पता भी नहीं मालूम कि वह कहां रह रहीं हैं। माता जी मुझसे मिलने के लिये अनेक बार आती रहीं हैं, परन्तु मैंने उनसे बात तक नहीं की। इस मिथ्या विश्वास में फंसकर कि जब तक मोह की बेड़िया कट नहीं जाती तब तक मुक्ति असंभव है।

उनके चेहरे पर दु:ख और पछतावे के चिन्ह उभरे और वे पुन: बोले कि अब मैं कल उनको ढूंढ़ने निकलूंगा और उन्हें ढूंढ़ ही लूंगा।

प्रात:काल तीन बजे के करीब वह हमसे जुदा हुये हम सब उनका इंतजार करते रहे। परंतु आप सभा के आरंभ होने तक न आये। सभा सवा नौ बजे के करीब रखी गई थी। सभा अभी आरंभ ही हुई थी कि वह महात्मा एक दुबली पतली स्त्री के साथ सभा स्थान पर आ पहुंचे।

सभा के अंत में जब अन्य धर्मसंबधियों ने अपने माता पिता को फूलों के हार पहनाये तो आप भी अपनी माता की ओर एक हार लेकर बढ़े। हार हाथ में लेकर उनके पास पहुंचकर वह कहने लगे–

"आज 12 वर्ष बाद मां से मुलाकात हो रही है। खोई हुई मां भगवान देवात्मा ने पुन: मुझसे मिलवा दी है। मैं मां को भूल चुका था। ऐसा करके अपने आप को महान् आत्मा समझता था। भगवान देवात्मा की देवज्योति में मां के जन्मदाता रूप के दर्शन हुये हैं। मां का दूध पिलाना, लोरियां सुनाना, मेरे सुख की कामना करते हुये भगवान से दुआयें मांगना, मेरे दु:ख में अपनी सुध बुध भूल जाने वाला रूप का अनुभव जिन्दगी में पहली बार हुआ है, परन्तु मेरा दिल इतना कठोर हो चुका है कि आंख पत्थर बन गई है, आंसू सूख चुके हैं।"

यह कह कर फूलों का हार अपनी बूढ़ी मां के गले में पहनाया। उनके चरणों में सिर रखकर उन्हें प्रणाम किया और फिर मां बेटा एक दूसरे से लिपट गये और मां देर तक अपने पुत्र के सिर पर हाथ फेरती रही। इस दृश्य हो कलम बंद नहीं किया जा सकता। उपस्थित लोगों की आंखों से आंसूओं की झड़ी बहने लग गई।

जब कभी पूर्व यादों के झरोखे से इन घटनाओं को देखता हूं, जो मेरी आखों के सामने घटीं हैं तो यादों के चिराग रौशन हो उठते हैं, आत्मा खुशबू से भर जाती है और जिंदगी से प्यार करने को जी चाहता है। आखों में

आंसू आ जाते हैं अद्वितीय सतगुरू के अद्वितीय प्रभाव पर मेरा विश्वास और भी बढ़ जाता है और मेरा सर अपने सतगुरू के चरणों में खुद व खुद ही झुक जाता है। (निर्मल सिंह)

लुधियाना में ही एक यह भाव प्रकाश हुआ।

09-09-1959

प्रकाश स्वरूप जी:-

एक सभा में **श्रीमान प्रकाश स्वरूप जी** ने रोते-रोते बताया कि मुझे अपनी आत्मा अत्यन्त कठोर दिखाई देती है। अपने उपकारी पिता जी के साथ अत्यन्त कठोरता से पेश आता रहा हूं जिसका कि मुझे अत्यन्त दु:ख है। एक बार की बात है कि मेरे पिता जी ने किसी बात पर मुझे कुछ कहा तो मैनें उन्हें जबाव दिया -"वढढे बुद्धिमान आये कहीं के?"अब अपनी इस भयानक अपराधिक प्रवृति के लिये दु:ख एवं अफसोस का पत्र लिखूंगा।

उनका यह सम्पूर्ण उदाहरण दिलों पर अजीब असर करने वाला था और वह परमपूजनीय भगवान देवात्मा की अधिकारी हदय पर महिमा स्थापित करने वाला था।



श्री पीयूष भल्ला जी और अनिल कुमार जी भजन प्रस्तुत करते हुए

3 (v)

जो सत्संग हुआ उसमें पूजनीय भगवान के प्रभाव से प्रेरित होकर पीयूष भल्ला जी ने यह भजन गाया।

श्रद्धा भाजन मात पिता जी

श्रद्धा भाजन मात पिता जी,
श्रद्धा भाव करूं उपहार।

तुमने मुझको जन्म है दीना,
तुमने मेरा पालन कीना;
रक्षा की और शिक्षा दीनी,
कीना अति मेरा उपहार। 1

हित तुमरे स्मरण करूं मैं,
भाव कृतज्ञ उत्पन्न करूं मैं;
यथा साध्य तव सेवा कर के,
करूं अपना शुभ औ' उद्धार। 2

उच्च भावों से तुम संग बंधकर,
नीच गति सब अपनी तज कर;
मात-पिता जग का साधन कर,
धन्य बनूं मैं सब प्रकार
सुफल करूं अपना अधिकार। 3

इसके बाद उपस्थित जनों में से निम्नलिखित जनों ने अपने भावों का प्रकाश किया:-

मालती जी का भाव प्रकाश:- मैं अपनी मां के लिए कुछ नहीं कर पाई। हालाकि मेरा तो जन्म ही देव समाजी परिवार में हुआ है और सतगुरू का दरबार जन्म से ही मिल गया था। हजारों सभाएं सुनी होंगी कितने महोत्सव attend किए होंगे। एक बात तो मैं याद रख सकती हूं कि मैं जब मेरे पिता जी इस दुनिया से गए तो मेरी उमर तब 50 साल थी और जब माता जी इस दुनियां से गए तो इससे भी बड़ी उम्र थी मेरी। यह तो याद है मुझे कि इतनी उम्र में मैंने कभी भी अपने माता पिता के साथ उंची आवाज़ में बात तक नहीं की। चाहे उन्होंने मुझे किसी बात के लिए डांट दिया या जायज नाजायज कह दिया हो या नाजायज कह दिया हो। मैं उनके आगे कभी भी नहीं बोली। लेकिन मैंने फिर भी उनकी इतनी सेवा नहीं की जितनी मुझे उनकी करनी चाहिए थी। बार बार सभाओं में बताया जाता है तो मैं सोचती हूं कि कुछ जन्म जात योग्यताएं कुछ ईमानदारी कुछ और किसी का सेवा भाव या पशुओं के लिए प्यार ऐसी कई बातें हैं जो माता जी और पिता जी ने दी हैं। आज बैठे बैठे मुझे माता जी की एक घटना याद आ गई कि अकसर मैंने लोगों को यह कहते हुए सुना है कि अब तो जितने मर्जी बर्तन झूठे कर लो अब तो घर में काम करने के लिए (हैल्पर) helper हैं। मुझे याद है जब हमारे घर में मेहमान आते थे तो बर्तन वाली के आने से पहले ही बड़े बड़े बर्तन जो अंगीठी पर खाना बनाने से काले हो जाते थे



श्रीमती मालती नेपाल जी भाव प्रकाश करते हुए

उनको बर्तन वाली के आने से पहले ही साफ़ कर देती थी। तो हम जब भी उनसे यह प्रश्न पूछते थे कि माता जी यह क्या उसने तो अभी आना ही है तो आपने यह क्या किया तो उनका हमेशा एक ही जबाव होता था अपने से तो अपने ही घर के काम नहीं होते चार बर्तन नहीं मांजे जाते वो बेचारी अब आएगी तो पता नहीं कितने घरों का काम करके आएगी तो उसकी क्या हालत हो चुकी होगी वो जब आकर इतने काले बड़े बड़े बर्तन रगड़ेगी तो बीमार नहीं हो जाएगी। मैंने तो पहले ही बहुत सारे बर्तन साफ करके रख दिए हैं। बात कहने को बहुत छोटी सी है पर माता जी की एक तस्वीर सामने आई कि मैंने किस मां के पेट से जन्म लिया है कि जिनको एक काम करने वाली से भी इतनी हमदर्दी थी। पशुओं के लिए मैंने पिता जी को बार बार देखा है कि 105 बुखार में पड़ें हैं बाहर दरवाजे पर अगर पता लग जाता था कि कोई जानवर है और उसको कुछ खाना देने की जरूरत है वह सोटी पकड़ कर लंगडाते हुए उस तक पहुंच जाते थे। वो कितनी अपने जीवन में मेहनत करते थे उनकी एक घटना बताती हूं जब मुझे पिता जी का फोन आया कि अगर मुझे आखिरी बार देखना चाहती हो तो फाजिल्का आ जाओ। मैं जब वहां चली गई तो मुझे एक मरीज़ ने यह बताया कि पिता जी मुझे उस समय मेड़ीसन दे रहे थे जब उन्होंने मुझे अपना आखिरी फोन किया था तो हम सोच सकते हैं कि जिस इंसान को यह पता चल रहा था कि मैं कुछ देर में जाने वाला हूं उस समय भी वह मरीज़ देख रहे थे। वह अपने किसी भी फर्ज से कभी पीछे नहीं हटे और यह जो माता पिता को देखने की आंख दी है

उनके भी उपकार याद करने चाहिए कि अगर सतगुरू का दरबार न मिला होता तो शायद मैं जिन्दगी में कभी समझ ही न पाती कि माता पिता क्या चीज होती है और उनका कैसे ख्याल रखना चाहिए। अब वह इस दुनियां से जा चुके हैं। मैं अब रोज सुबह उठकर उनसे माफ़ी मांगा करूंगी और जो कुछ भी उनके लिए शुभ कामना कर सकूंगी मैं करूंगी। बाकी एक बात मैं जरूर उठने से पहले कहूंगी कि उनके तीन उपकार तो मैं जिन्दगी भर भूल नहीं सकती। एक तो मेरे माता पिता मुझे सतगुरू का दरबार दे गए। दूसरा वह मुझे होमोपैथी दे गए जो ऐसी साईस है जो मुझे लगता है कि वह लोगों का काफी अच्छे ढंग से भला कर सकती है और तीसरा एक बड़ा उपकार धर्म सम्बन्धी हैं जो मुझे ऐसा भाई दे गए कि मैं बेमुख होती रही और महाराज जी से कई बार मैं ऐसी कट गई कि कई साल मैं महोत्सव पर नहीं गई। बच्चों के पेपरों में लगी रही। उन दिनों दिसम्बर में पेपर होते थे। लेकिन मेरी उस हालत को देखकर मेरा भाई ऐसे तड़फता था मुझे बार बार इस सभा में बैठकर याद आया कि मतलब इन्होंने फोन करने, घर पहुंचना बार बार यह याद करवाने की कोशिश करनी कि बाकी सब चीज़े जरूरी होंगी लेकिन जो सभा से और गुरू महाराज जी से दूर हो रहीं हूं यह कोई अच्छी बात नहीं है और जो मैं आज तक गुरू महाराज जी से जुड़ी हुई हूं। उसमें बहुत बड़ा हाथ मेरे भाई साहिब का है और मैं अब अपने माता पिता को बाकी सब चीजों भी और ऐसा भाई देने के लिए खास तौर पर धन्यवाद देती हूं।

श्रीमती प्रेमलता भल्ला जी:-

मेरे माता पिता दोनों ही इस दुनियां में नहीं हैं। मैं जब बहुत छोटी थी तभी मेरे माता जी की मृत्यु हो गई थी। वह बहुत बीमार रहती थी। मैंने उनकी बीमारी में कोई सेवा नहीं की। मैंने उनको बहुत तंग किया। जब वह मुझसे पानी का गिलास तक मांगती थी या दवाई मांगती थी तो मैं भाग जाती थी। वह मुझे पकड़ पकड़ कर लाती थी कि मुझे कुछ खाने को दे दो। मुझे कुछ होश नहीं था। मैं फिर उनको कुछ खाने को दिये बिना खेलने के लिये भाग जाती थी। एक दिन ऐसा हुआ कि माता जी परलोक सिधार गई। मुझे कुछ पता नहीं था कि क्या हो गया है। सारी गली में शोर मच गया। मुझे किसी के घर में बन्द कर दिया गया और कहा कि तू बाहर मत आना। मैंने पूछा कि क्या हुआ है तब मुझे बताया गया कि तुम्हारी माताजी बहुत बड़े ज़हाज में बैठकर सैर करने गई हैं, फिर आ जायेगी लेकिन घर में कोहराम मचा हुआ था मुझे कैद कर रखा था उनको ले जाने के बाद मुझे छोड़ा गया मैंने घर जाकर देखा कि वहां कोई नहीं है फिर मैं रोने लगी फिर मुझे समझ में आया कि मेरी माता जी अब इस दुनिया में नहीं हैं। क्या ज़िंदगी है, कुछ भी नहीं। माता जी के जाने के बाद मेरे पिता जी, ताया जी, ताई जी, बहन जी ने मुझे बहुत संभाल कर रखा। मुझे किसी तरह की कोई दिक्कत न होने दी। यहां तक कि मेरे पिता जी ने माता जी की मृत्यु के बाद दुबारा शादी नहीं की। उस समय मेरे पिता जी की आयु केवल 30 वर्ष की थी। उन्होंने मेरे कारण, तांकि मेरी परवरिश में

कोई दिक्कत न हो, मेरी परवरिश ठीक ठाक हो सके, उन्होंने यह सोचकर शादी नहीं की कि अगर शादी कर ली तो इस बच्चे का क्या होगा। यह बच्चा हमेशा के लिये रूल जायेगा। इसका किसी ने कुछ नहीं करना। वह मेरी सेवा ही करते रहे। मैंने अपने पिता जी की बीमारी में भी कोई सेवा नहीं की। जब वह हस्पताल में थे तो कभी कभी उनसे मिलने चली जाती थी। एक दिन जब मैं हस्पताल में गई तो उनकी नज़रे मुझे देखकर कह रहीं थी, अब क्या देखोगी, अब तो मैं जा रहा हूं तो वह ऐसे ही मुझे देखते देखते परलोक सिधार गए। फिर मुझे हस्पताल के कमरे में ज़्यादा देर ठहरने नहीं दिया गया। मेरा सब कुछ खत्म हो गया। अब मैं अपने माता-पिता को हमेशा याद करती रहती हूं। कि जितनी सेवा उन्होंने मेरी की शायद ही किसी बच्चे के मां बाप अपने बच्चे की करते हों।

ओम प्रकाश मोहन जी अम्बाला :-

माननीय सभापति जी आज मुझे भी अपने माता पिता का सिमरण हो आया है। मैं उन मां बाप का बेटा हूं जिनका नाम याद करके मैं गर्व से अपने आपको बड़ा भाग्यशाली समझता हूं। मेरे पिता जी हमें पाकिस्तान से लेकर आए थे। अगर वो न होते तो मैं न होता। जिस समय पाकिस्तान बनने वाला था तो उन्होंने अखबार में देखा कि हालात खराब हैं तो उन्होंने कहा कि मैं बच्चों को अपने ससुराल छोड़ आता हूं। फिरोजपुर में मेरे मामा रहते थे तो हम सब बच्चों को एक महीने की छुटटी लेकर वो



श्री ओमप्रकाश मोहन जी अम्बाला भाव प्रकाश करते हुए

यहां फिरोजपुर में छोड़ने चले आये। जितने में उनकी छुटटी खत्म होती उससे पहले ही हमें पता चल गया कि मारकाट शुरू हो गई है। हम यहीं पर रह गए। तो बेकारी आ गई काम नहीं था। पाकिस्तान में बैंक में थे मेरे पिता जी। उससे पहले यहां D.C.Office में लाईसेंस बनाने का यहां काम होता था। वहां उनकी ड्यूटी होती थी। वहां रिश्वत का बहुत बोल बाला था। उन दिनों अंग्रेजों का राज था मेरे पिता जी रिश्वत तो लेते नहीं थे तो एक आदमी बहाने से आकर कुछ पैसे मेरी माता जी को दे गया कहते यह उपहार स्वरूप रख लो जब पिता जी आए और उनको पता चला कि वह इस तरह पैसे दे गया है माता जी ने सारी बात उनको बता दी थी। तब मुझे याद है मेरे पिता जी ने मुझे बताया कि मैंने तेरी माता जी को तब थप्पड़ मारा था कि यह तो रिश्वत है वो रूपये हमारे पड़ोसियों को क्यों नहीं दे गए। हमें ही क्यों दे गया वह हमें रिश्वत देकर गया है। उन्होंने तब वह नौकरी छोड़कर बैंक की नौकरी कर ली। यहां आकर भी फिर उनको बैंक की नौकरी मिल गई। अब फिरोजपुर शहर में एक साल रहने के बाद हम अम्बांला चले आए। क्योंकि हमारे चाचा जी अम्बाला में रहते थे तो वहां पर सैटल हो गए उसके बाद उन्हें 8 साल के लिए बैंक से निकाल दिया गया। कानून बाजी थी। सरकारी बैंक था पंजाब नैशनल बैंक तब मेरे पिता जी 90 रूपये की नौकरी के लिए अम्बाला कैंट जाया करते थे पैदल चलकर जाते थे अम्बाला से अम्बाला कैंट। 8-9 किलोमीटर का रास्ता था। कभी अम्बाला से बड़े पुल तक पैदल जाते थे तो कभी बड़े पुल से बस में बैठ जाते। फिर आहिस्ते आहिस्ते हमारी

माता जी ने फिर दाई का काम सीख लिया तो उससे थोड़ा बहुत घर के गुजारे में फर्क पड़ा तब भी वह इतनी दीन और दानी थी कि किसी का केस करके आती तो कहती यह गरीब आदमी है उसको अपने घर से ही कपड़े पोतड़े भी दे देती थी। आज अगर मैं आप लोगों में बैठा हूं मेरे में वह नेक खून है। मैं अम्बाला से यहां आता हूं क्योंकि यह माहौल मुझे बहुत पसन्द है। यहां से सेवाएं पा रहा हूं मगर यहां की बदोलत मुझे उनकी याद आ रही है नहीं तो मैंने इतने दिन उनको याद ही नहीं किया वो अब परलोक में हैं और बड़े अच्छे होंगे। मेरे पिता जी बैंक से मैनेजर रिटायर हुए थे। हमारे पास बहुत कुछ है पर उनकी कमी बहुत महसूस होती है।

सरिता भल्ला जी (पत्नी डाक्टर पीयूष भल्ला):-

मेरी उमर 45 साल के करीब है। मैंने अपने माता पिता को 45 बार भी धन्यवाद नहीं दिया तो अब मैं काफी दिनों से यह महसूस कर रही थी कि मुझे जब भी मौका मिले मैं कम से कम यह तो कर ही सकती हूं कि उनको thanks बोलूं। हर इंसान का एक इतिहास होता है मेरा बचपन भी बहुत अच्छा गुज़रा है। जो मैं कहना चाहती हूं वो यह है कि मुझे बचपन से बड़ा अमीर महसूस करवाया गया है बहुत अच्छे हालात थे बहुत अच्छी कोठी थी जिसमें हम रहा करते थे। बहुत अच्छे सामान थे बहुत अच्छा खाने पीने को था। कभी भी किसी भी चीज़ की कोई कमी नहीं थी। कभी भी कहीं जाते थे किसी भी crowd वाली जगह



श्रीमती सरिता भल्ला जी भाव प्रकाश करते हुए

पर तो सबसे अच्छे कपड़े हमारे होते थे और सबसे अच्छा रहन सहन हमारा होता था। हम उनमें अलग ही नज़र आते थे तो इस तरह हमारी पालना बहुत अच्छे तरीके से की गई। डेडी ने बेटे बेटियों में समाज में जैसे प्रचलन है हम में कभी कोई फर्क नहीं समझा और studies के लिए हमारे गांव में कोई कालेज नहीं था और मैं जब B.A में कालेज आई तो वह 6-7 किलोमीटर दूर था शहर से बाहर तो तब डेडी ने देखा कि कालिज co-education था माहौल इतना अच्छा नहीं था जब उन्होंने देखा कि कालेज इतना अच्छा नहीं है तो इन्होंने मुझे पढ़ने के लिए वनस्थली भेजा जयपुर के पास शिक्षा में भी कोई कमी नहीं रखी। यह मेरी अयोग्यता थी कि मैं बहुत ज्यादा नहीं पढ़ी मेरी दीदी और भाई को भी बहुत अच्छे हालात दिए पढ़ने के लिए। फिर भी अगर हम कुछ नहीं कर पाए तो अपनी अयोग्यताओं के कारण नहीं कर पाए। यह तो बाहरी आर्थिक हालात थे। इसके इलावा हमारे अध्यात्मिक कल्याण के लिए भी डैडी ने कभी कोई कसर नहीं छोडी। बचपन से जब मैं एक महीने की थी तो मुझे बताया गया कि तभी मुझे सोलन ले गए थे और हर साल चाहे डैडी को टाईम होता था या नहीं होता था हमें हर साल एक महीना सोलन छोड़ा जाता था सभाएं सुनने के लिए और वहां जो सभाएं होती थी हम उनसे बहुत लाभ उठाते थे और विरासत में बहुत अच्छी विरासत दी हमें। हमें बचपन से ही ईमानदारी का पाठ पढ़ाया गया और बंहुत अच्छी शिक्षा दी गई। बड़ों के सम्मान की शिक्षा दी गई। जैसे कि आप सब देखते हैं

समाज में क्या क्या हिदायतें हैं। उनके बारे में बताया गया तो बहुत सारे मोटे मोटे पापों से तो बचे ही हुए थे और भी बहुत सारी चीज़ों से बच गए। कई बुराइयों को मैं देखती हूं समाज में। वो हम में थी ही नहीं। क्योंकि हमें बचपन से वो माहौल नहीं दिया गया। कई लोग ईष्या करते हैं द्वेष करते हैं। हमें जैसे छुआ ही नहीं ऐसी बातों ने। अब कभी कोई कहता है कि यह ऐसा है फलाना वैसा है फलाना तो हमें बड़ी हैरानी होती है क्योंकि यह चीज़े हमें विरासत में नहीं दी गई।

इनके उपकार हम पर इतने ज्यादा है कि मैं अगर बोलने लगूं तो शायद दो तीन दिन लग जाएं और शायद बहुत सारा टाईम निकल जाए बोला भी न जाए। यह 45 साल का अर्सा 21 साल की आयु में मेरी शादी हो गई। तो शादी के बाद भी जिस माहौल में मुझे भेजा गया मेरी जब उम्र हुई शादी के लायक तब भी डैडी की इच्छा यह थी कि मेरी शादी देव समाजी परिवार में हो। मेरे दोनों बहन भाईयों की शादी देव समाजी परिवार में न हो सकी। इसलिए उनकी यह इच्छा थी कि मेरी शादी देव समाजी परिवार में हो, तो यहां मेरे ससुराल के परिवार के बारे में तो आप जानते ही हैं कि मैं किस परिवार में रहती हूं। यहां भी स्वर्ग का माहौल है। पापा हर रविवार को सभा करवाते हैं और जब से मेरी शादी हुई है तब से सभाएं हो रहीं हैं बीच में थोड़ा समय छूटा है। तो जैसे कहते हैं न कि डोज़ मिलती रहती है सोचने विचारने का समय मिलता रहता है

और जिस तरह का माहौल दिया गया मम्मी पापा की तरफ़ से मैं इनका जितना भी धन्यवाद करूं उतना ही कम है।

और मैं आज बैठी बैठी सोच रही थी कि मुझे अब यह मौका नहीं गवाना चाहिए। मुझे जब मौका मिले जब मुझे फील हो मुझे उसी समय इनका धन्यवाद करना चाहिए। इनके उपकारों के लिए मैं खड़े होकर इनके चरणों में सिर झुका कर इनका धन्यवाद करती हूं और अपनी गलितयों के लिए माफी मांगती हूं। बहुत सारी ऐसी गलितयां हैं जो मुझे याद आ रही हैं। मैं उनके लिए इनसे माफ़ी मांगती हूं।

श्रीमान भूषण कुमार जी ज़ीरा:-

परम आदरणीय सभापति जी और मेरे धर्म सम्बन्धियो मेरे पास ज्यादा योग्यता तो नहीं है। लेकिन फिर भी क्योंकि मेरे पिता जी जब 15-16 साल का था उनकी मृत्यु हो गई थी। 1962 का मेरा जन्म है। मैं ज़ीरा में पैदा हुआ था मेरी दादी जी जब पाकिस्तान से आए तब मेरे पिता जी की आयु केवल 8 वर्ष की थी तो उन्होंने हमें पाला पोसा बड़े हुए। 1978 में मैंने 10 वीं कक्षा की परीक्षा दी थी। हमारे पिता जी गांव में दुकान करते थे तो मैं स्कूल से पढ़कर जब half time होता था तो मैं साइकिल पर उनकी रोटी देने जाता था। क्योंकि हम बहुत गरीबी की हालत में से गुज़रे हैं बहुत ही बुरे दिन देखे हैं मेरे दो और भाई हैं उनकी भी शादी की है। 1987 में मेरी शादी हुई थी तो उसके बाद कल की ही बात मैं बता रहा हूं क्योंकि

कहने के लिए समय बहुत कम है कहने को तो बहुत कुछ दिल कर रहा था समय की बंदिश को देखते हुए कुछ ज्यादा नहीं कह पाऊंगा तो आज रात को मैं मोगा से आया हूं। हमारे father in law वहां थे तो जमीयत सिंह रोड़ मोगा पर ज़मीन है हमारी जगरूप सिंह जी तो मुझे मिले थे रात को। मेरे father in law की 29 जनवरी 2007 को मृत्यु हो गई थी। उनकी दो बेटियां थी। उनकी एक बेटी मेरी पत्नी है और दूसरी बेटी भी जीरा में ही है। कल उनकी बरसी थी जो हमने मनाई थी। सुखमनी साहिब का पाठ करवाया। तो मैंने इनको भी बोला था कि चलो आप आ जाना हम इनके पास 5 साल रहकर गए थे। इनकी दो बेटिया ही थी मेरे साडू साहिब जो हैं उनका व्यवहार इतना अच्छा नहीं है। वो एक साल यहां पर रहे जब मेरी साली का बेटा डेड़ साल का था तो मेरे father in law ने उसको adopt कर लिया था तो उसके बाद तो वह वहां रहे नहीं। फिर मैं पांच साल तक यहां मोगा में रहा और सर्विस मैं मक्खो में करता था। Accounts का काम करता था। तो मैं दो तीन दिन जीरा जाता अपने माता पिता की सेवा करने के लिए । माता जी है अभी दादी जी की अभी पीछे थोड़ी देर पहले मृत्यु हो गई है। मेरे दो भाई हैं उनकी शादीयां भी करवाई। परिवार भी चलाया। मेरी एक बहन है उसकी तीन बेटियां हैं। एक बेटी की शादी अभी यहां लुधियाना में ही की है। अपने जीरा गांव में की है। वह रेहड़ी लगाते हैं सब्जी का काम करते हैं। लेकिन कल ही उनका फोन आया था कि आप दूसरी बेटी के लिए कोई रिश्ता बगैरा



श्री भूषण कुमार जी जीरा भाव प्रकाश करते हुए

देखो। मैंने कहा ठीक है आप भी कोशिश करो मैं भी कोशिश करूंगा। जो भी मेरे से हो सकेगा मैं help करूंगा। मैं आपको बरसी की बात बता रहा था। वहां सुखमनी साहिब के पाठ में कुछ भाई कीर्तन बगैरा कर रहे थे तो सामने क्योंकि हम राधा स्वामी के यहां भी जाते थे ब्रह्मा कुमारी और ओशो की क्लासे भी लगाई। अलग अलग तरीके से शिक्षा प्राप्त की। यहां से जब भल्ला साहिब का फोन आता है न मूझे अन्दर से ऐसा महसूस होता है कि क्या कहूं मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं। फिर पूजा जी का फोन जाएगा आफ़िस से तो मेरे दिल में एक वलवला सा उठता है कि वहां जाना है आज Sunday है। तो मैं रात को ही टाईम टेबल बनाकर सारे दिन का कार्य क्रम सेट कर लेता हूं तो बरसी में जब वो सुखमनी साहिब के पाठ के बाद कीर्तन करने लगे तो तीन तस्वीरे वहां सामने लगी थीं। एक महाराज राधा स्वामी जी की और महाराज चरणसिंह जी की और एक गुरूनानक देव जी की। तो जब वह कीर्तन करने लगे तो वह कहने लगे कि यह दो तस्वीरें हैं न साथ वाली इनको उठा कर रख दो। मैंने कहा क्यों भाई। क्योंकि संगत ज्यादा बैठी थी तो मैं ज्यादा तो नहीं कह सका तो मैंने उसका मान रखते हुए उन तस्वीरों को थोड़ा सा साईड़ पर रख दिया। हम शिक्षा क्या प्राप्त करते हैं करते क्या हैं। उसमें अन्तर बहुत है। हमें जो सीखना चाहिए उसको सीखने के लिए हमारे पास योग्यता अयोग्यता या जो भी बात है उसको हम समझने की कोशिश करें। जब मैं वापिस जीरा चला गया तो मेरे father in law

मुझे कहने लगे कि आप यहीं रहो। मैंने कहा मैंने आपसे यह वायदा किया था कि मैं आपकी सेवा करूंगा पांच साल तक। जब इस बेटे की शादी हो जाएगी और मैंने शादी की उसकी यहीं मोगा में लडकी के पिता जी वहीं होटल में सर्विस करते थे तो उसके बाद मैंने उनको बोला तो अपने ही घर से कुछ gold था जो मेरे father in law ने उस लडकी के लिए रखा हुआ था वो चोरी कर लिया और चोरी करने के बाद मैं उनको समझाता रहा कि आप ऐसे करो कि इस घर को मत बिगाड़ो क्योंकि पांच साल तक उन्होंने इतनी सेवा की है इतना कुछ किया है हमारे लिए तो हमने यह क्या किया है तो पेटी में पड़ा था वो गोल्ड पेटी में से निकाल कर गायब कर दिया। इसमें हो सकता है कि उस लड़की की भी शरारत हो या मेरे साढू साहिब की हो क्योंकि वह ऐसे तो कहीं जा नहीं सकता। क्योंकि मैं तीन साल पहले ही जीरा जा चुका था। वापिस सब कुछ छोड़कर मुझे कहते रहे कि आप यहां रूक जाओ। उनकी 29 जनवरी को मृत्यु हुई थी और मैंने 25 जनवरी को मैंने पहले से ही उस मकान की जो वसीयत थी जो बेटा उन्होंने गोद लिया था उसके नाम कर दी थी और मुझे इस बात का पता था कि इन्होंने गोल्ड चोरी क्यों किया है। उसके पीछे था property का चक्कर। property की कहानी मैं आपको बताता हूं कि मैंने तो पहले ही जो इसकी वसीयत है उस बेटे के नाम कर रखी है। लेकिन मैंने अभी तक भी नहीं बताया क्योंकि इस झगड़े में मेरे दिल को भी दुख था कि उन्होंने मेरे साथ क्या किया है या गोल्ड चोरी किया है

तो क्यों किया है। इसकी वजह क्या थी मैं इसका कारण ढूंढ़ता था। लेकिन मुझे बहुत दुख होता है ऐसी बातों से क्योंकि मैंने सदा ईमानदारी का ही पाठ पढ़ा है। लेकिन मैंने अपने आज तक के पूरे जीवन में, 50 साल के करीब मेरी उम्र है मैंने आज तक रिश्वत दी है किसी से रिश्वत ली नहीं। क्योंकि हमारा समाज ही ऐसा है। अगर हमने घर में एक मीटर भी लगवाना होता है न तो हम लाईन में लगने के लिए तैयार होते हैं हम कहते हैं भईया 500/रूपये ले लो और हमारे घर में जल्दी मीटर लगा दो।

सभी धर्म सम्बन्धियों का और भल्ला साहिब का बहुत बहुत धन्यवाद। जिन्होंने कीमती समय निकाल कर मुझे इस अवसर में आकर बोलने का मौका दिया धन्यवाद।

परमपूजनीय भगवान देवात्मा ने इस सम्बन्ध में जो अद्वितीय कार्य किया है उसका ब्यान नहीं हो सकता। कुछ और घटनाएं और पत्र जिनका सभा में संक्षिप्त वर्णन किया गया है वो आगे दिए जा रहें हैं जो मैंने लिखकर रखे हुए हैं उनमें से कुछ ही आपको बता रहा हूं।

साहिबान! संसार में माता पिता के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता व सेवा भावना के अभाव में उनकी प्राय: जो स्थिति है, उससे सभी परिचित हैं। अधिकतर माता पिता मुक्तभोगी है या अपनी अपनी बारी का इंतजार कर रहें हैं। तथापि जहां कहीं भी हृदयों में उच्च भावनाएं विराजती हैं, वहां उन उच्च भावों की महक ही अलग है, व्यवहार अलग हैं, बोल भी अलग हैं। सेवा व सम्मान के दृश्य अलग हैं। अपने

इस अल्प जीवन काल में अनेक ऐसे उच्च हृदयों के सम्पर्क में आने का अवसर मिला है। उच्च भावों से भरी उनकी बोलियां मेरे हृदयों में घर कर गई है। ऐसे ही उच्च भावों की एक झलक प्रस्तुत है।

भाग 4(i)

कुछ हितकर लेख एवं अन्य जनों के भाव

इस भाग के लेखों और अनुभवों में से कहीं कहीं में से सभा में पढ़कर सुनाया गया।

मातृ-प्रेम

श्रद्धेय पी.वी. कनल जी का लेख प्रश्न उत्तर के रूप में

विद्यार्थी—श्रीमान जी, क्या कारण है कि मनुष्य-जाति की कल्पना के कण- कण में 'प्रेम' समा गया है? यह सच्च है कि इसे दूषित माननेवाले कभी इसके विरूद्ध व्यंग्यात्मक और कठोर शब्दों का प्रयोग करते हैं; वह उसे पागलपन का एक रूप मानते हैं और वासना में इसका सम्बन्ध जोड़ इसे घृणित घोषित करते हैं; कुछ इसे केवल भावुकता या मनुष्य के असंयमित स्वभाव का चिन्ह मानते हैं। इतना त्याज्य समझा जाता भी प्रेम - वृद्ध और स्त्री-पुरूष पर एकाधिकार जमाए है।

अध्यापक— क्या तुमने 'प्रेम' की प्रशंसा में पिछले दिनों कुछ पढ़ा है जो उसके सम्बन्ध में विचारते हो?

विद्यार्थी—जी हाँ मैंने एक पुस्तक में पढ़ा कि कुछ युवा सैनिक 'प्रेम' पर स्पष्ट व्यंग्य कस रहें थे कि एक बूढ़ा व्यक्ति वहाँ आया और अपने मुख पर दु:ख की रेखाएँ बनकर कहने लगा, "लड़को, तुम्हें प्रेम के सम्बन्ध में ऐसा नहीं कहना चाहिए। मनुष्य जीवन में प्रेम से बढ़कर कुछ भी नहीं और तुम्हें प्रेम का सम्मान वैसे ही करना चाहिए

जैसे तुम अपनी माता और मातृ- भूमि का करते हो। तुम्हारी प्रत्येक अमूल्य वस्तु—तुम्हारा देश, तुम्हारे खेत, तुम्हारे घर, तुम्हारा जीवन और परिवार सब प्रेम के ही मूर्त रूप हैं और अपने देश की ही भाँति तुम्हें प्रेम पर मर-मिटने का गर्व होना चाहिए।"

विद्यार्थी—श्रीमन् जी, क्या आपके विचार में किसी भी भावुकता के प्रति यह अपूर्व प्रशंसा गलत नहीं? भला क्यों मानव जाति इसके पीछे पागल हो रही है?

अध्यापक—प्रेम कई सद्‌गुणों से विभूषित होता है, इसीलिए उसका इतना सम्मान है।

विद्यार्थी—श्रीमान जी वे सद्‌गुण कौन से हैं?

अध्यापक—प्रेम का एक सद्‌गुण यह है कि वह पूर्ण-स्वार्थ या अहं—प्रेम की नीच भावनाओं का नाश करता है। कई प्रकार के पाप अपराध, पर-पीड़ा एवं स्वार्जित विषाद का आधार अहं-प्रियता ही होती है। प्रेम इस कुटिल अहं-अधिकार को नाश करने का एक साधन है।

विद्यार्थी—श्रीमान जी क्या आप इसे सोदाहरण स्पष्ट करोगे?

अध्यापक—लड़को अपनी माताओं की ओर देखो। उनके दैनिक जीवन से ही तुम्हें पता चल जाएगा कि स्वार्थ पर प्रेम क्योंकर विजयी होता है।

विद्यार्थी—आप ठीक कहते हैं, श्रीमान जी। परन्तु हमारे जीवन की कोई प्रत्यक्ष घटना ऐसी नहीं। आप ही कृपा कोई उदाहरण दें।

अध्यापक—जब मैं स्कूल में पढ़ता था तो हमारी मिडिल श्रेणी की एक पाठ्य पुस्तक में एक माता का वर्णन दे रखा था। जिसे अपने छोटे बच्चे को लेकर एक बर्फीले क्षेत्र में से गुज़रना था। रात्री हो जाने और बर्फीली हवा के चलने से माता की शक्ति क्षीण होती दिखाई पड़ी। धीरे धीरे उसने महसूस किया कि उसकी यह यात्रा विश्व की आखिरी यात्रा होने जा रही है। फिर उसने अपने बच्चे के सम्बन्ध में विचार किया। वह बड़ी ही मर्यादा युक्त और लज्जाशील स्त्री थी। परन्तु इस नाजुक समय में उसने इस मर्यादा और लज्जा की परवाह न की। उसने अपने सारे कपड़े उतारकर अपने बच्चे को उसमें लपेट लिया। तब यह सोचकर कि ऐसे ही बर्फीली जगह छोड़ देने से बच्चे की कहीं मृत्यु न हो जाए, वह स्वयं पीठ के बल सपाट लेट गई और अपने बच्चे को छाती पर लिटाकर दोनों बाँहों में जकड़ लिया। ऐसा करने पर वह प्रसन्नता पूर्वक मूर्च्छित हो गई। अगले दिन प्रात:काल जब ठण्डी हवा चलनी बन्द हुई तो कुछ यात्री उस रास्ते से गुज़रे उन्होंने एक नग्न स्त्री को मरी पड़ी पाया। उन्होंने उसकी बाहों से बच्चा निकाल लिया जो गहरी नींद सोकर अभी उठा था। वह उन्हें देख बाल-सुलभ हंसी हंसने लगा-उसे यह ज्ञान न था कि उसकी माता उसके लिए जान दे चुकी है। माता की और से कितना बड़ा बलिदान है।

विद्यार्थी—सचमुच यह बलिदान ही है श्रीमान् जी, कृपा कुछ और घटनाएँ बताइए।

अध्यापक—यह एक ही घटना प्रयाप्त है। परन्तु मालूम होता है तुमने घर में इस बात पर ध्यान नहीं दिया, नहीं तो तुम देखोगे कि किस तरह तुम्हारी माताएँ तुम्हारे लिए अपने आपको समर्पित कर देती हैं।

एक व्यक्ति था, जिसे सौभाग्य से बड़ी पतिव्रता पत्नी प्राप्त हुई थी। वह स्वयं बड़ा निर्दयी था। वह अपने बच्चों को बुरी तरह पीटता था।

विद्यार्थी—(बीच ही में) श्रीमान जी, हस्तक्षेप के लिए क्षमा कीजिएगा! क्या बच्चे को पीटना पिता की गल्ती है?

अध्यापक—आधुनिक मनोवैज्ञानिक शारीरिक दंड़ का बहुत विरोध करते हैं। शारीरिक दंड़ से किसी को नैतिक नहीं बनाया जा सकता।

विद्यार्थी—लेकिन पिता प्रेम भी तो करते हैं?

अध्यापक—बालक को इस बात की चेतना होनी चाहिए कि पिता उसको प्यार करता है। यह वह अपने पिता का सम्बन्ध केवल कठोरता से जोड़ने लगे तो उसके मानस में कुछ विकृति उत्पन्न हो सकती है। बालक का विकास केवल प्रेम से ही संभव है। ठीक है अनुशासन बनाए रखने के लिए कुछ प्रतिबन्ध भी आवश्यक हैं; परन्तु ऐसे प्रतिबन्ध उन्हीं के द्वारा लगाए जाने चाहिए जो बच्चों को प्यार करते हों। वरना ऐसे प्रतिबन्ध बच्चे के मन में संघर्ष पैदा कर देते हैं। इस विषय में मैं फिर कभी बाताचीत करूंगा।

वह पिता निर्दयी था उसने स्वयं अपने दोष लिखित रूप में स्वीकार किए हैं। उसके दो पुत्र उससे सम्बन्ध विच्छेद कर कहीं दूर चले गए। माता ने इस पीड़ा को सहन कर लिया। क्योंकि वह अपने पति को चाहती थी। उसके पास परिवार में एक ही पुत्र रह गया। एक दिन क्रूर पिता ने उसे भी निर्दयता से मारा। अब पत्नी का मातृ- प्रेम अधिक बोझ न सह सका। इस पर वह मातृ-प्रेमोत्पन्न साहस संचित कर कठोरता से बोली, "यदि तुम फिर इस बच्चे को मारोगे, तो मैं सदा के लिए तुम्हारा घर छोड़कर चली जाऊँगी।"

उस क्रूर पिता ने एक बार फिर पुत्र को मारा। अगले दिन जब वह प्रात: उठा तो अपने घर को उजड़ा हुआ पाया। उसे एक कागज के टुकड़े पर उसी दु:खी माता की ओर से यह लिखा मिला कि वह अपने प्रिय बच्चे को लेकर किसी अपरिचित स्थान पर जा रही है।

कई वर्ष बीत गए। एक दिन इस कुर पिता को पुत्र की ओर से एक तार मिला जिसमें सूचना दी गई थी कि उसकी माता मृत्यु -शैया पर है और पिता को याद करती है। वह गया ओर उसने देखा कि उसका बेटा कितना तेजस्वी हो गया है। जब वह अपनी पत्नी से मिला तो उस देवी ने न केवल प्रेम से उसका अभिवादन किया बल्कि इसके लिए माफी भी माँगी कि किस प्रकार अपने बच्चे पर कठोरता न सह सकने के कारण वह उन्हें छोड़कर चले गई थी।

वह भी परिशोध अवस्था में था। अतः रो पड़ा और अपनी पत्नी तथा पुत्र से उसने क्षमा माँगी उसके कुछ समय पश्चात् माता ने शान्त चित प्राण त्याग दिए। उसके चेहरे पर आत्मा की पावनता और मानसिक शान्ति की छाप स्पष्ट दिखाई पड़ती थी।

विद्यार्थी—(सजल नेत्रों से) कितने दुख की बात है कि हम इस मातृ प्रेम की ओर कठोर और उदासीन रहते हैं।

अध्यापक—आपको मैं मातृ प्रेम के सम्बन्ध में एक निजी अनुभव का दृष्टांत देता हूं। एक वकील को एक अज्ञात परन्तु भयानक रोग हो गया जिसके कारण उसे 7 वर्ष तक बिस्तर पर पड़ा रहन पड़ा। संग्रह किया धन धीरे धीरे घटा और समाप्त हो गया। एक दिन ऐसा भी आया कि पत्नी के पास बच्चों के भोजन के लिए कुछ न रहा। वह किसी से ऋण के लिए प्रार्थना भी न कर सकती थी क्योंकि ऋण पहले ही काफी बढ़ चुका था। अतः एक रात उसने भिखारी का वेश पहना और भिक्षा मांगने चल दी। जब वह कई घरों में जाकर कुछ प्राप्त कर चुकी और लौटने लगी तो अचानक उसके मस्तिष्क में एक घर और मांगने का विचार आया। उसने ऐसा ही किया एक व्यक्ति बाहर आया। ज्योहि उसकी नज़र उस पर पड़ी वह भौचक्का रह गया और बोला, "तुम माँ!" वह वहां से भाग खड़ी हुई क्योंकि उसे पहचान लिया गया था। अगले दिन एक व्यक्ति महीने -भर की भोजन सामग्री उसके घर लाया और बोला कि वकील के किसी पुराने नौकर ने दुकान से भेजा है।

रात को वह स्वयं वकील की पत्नी के पास आया और उसके चरणों में सिसकते हुए बोला, "देवीस्वरूपा माँ, तुम्हारी ऐसी दशा, और मैं तुम्हारा नौकर प्रसन्न और प्रगति पथ पर! जब तक पिता राज़ी नहीं होते, तुम प्रत्येक आवश्यक वस्तु मेरी दुकान से मँगवा लिया करो। मेरा सर्वस्व तुम्हारे ही परिवार और विशेषकर तुम्हारी ही देन है।"

लड़को! आत्म-त्याग के उस भाव की कल्पना करो जो केवल मातृ प्रेम का प्रतिदान है।

विद्यार्थी—कैसा साहसपूर्ण कर्म और वह भी एक वकील की पत्नी द्वारा! ओह माँ माँ तुम सचमुच देवलोक की निवासिनी हो।

अध्यापक—तुम्हारी भावनाएं सचमुच ऊंची हैं। क्या तुमने एक फ्रैंच नावल शीर्षक "लेस मिज़रेबल्ज़" (Less Miserables) पढ़ा है?

विद्याथी—नहीं श्रीमान मैंने नहीं पढ़ा।

अध्यापक—उसमें भी एक माता के आत्म बलिदान की महान गाथा है। एक युवती का एक अवैध बालक था। वह एक युवक के साथ प्रेमिका रूप में रही थी, परन्तु उसने उससे विवाह नहीं किया था। इसलिए उसका बालक अवैध कहलाता था।

विद्यार्थी—क्या ऐसे बालक को अवैध नहीं कहा जाना चाहिए?

अध्यापक— यह तो व्यक्ति की निजी विचार धारा पर आधारित है। बच्चे की निन्दा उसके माता पिता के विवाह न होने पर नहीं की जानी चाहिए। परन्तु यह घटना असाधारण थी। वह लड़की झूठे आश्वासन का शिकार हो गई थी। उसने निर्दोष जीवन व्यतीत किया। उसका बच्चा पुत्री थी। उसका पालन पोषण करने के लिए उसने महान बलिदान दिया एक बार उसे अपनी बच्ची के लिए अपने सिर के सुन्दर बाल तक बेचने पड़े। एक बार फिर उसे सारे दांत निकलवा देने पड़े, ताकि वह अपनी बच्ची का पालन करने वाली संस्था को पैसे भेज सके। उन दिनों एक दाँत निकलवाना सूली पर चढ़ने के बराबर था। सब बत्तीस दाँत निकलवाना तो अवर्णनीय पीड़ा का कारण होगा ही! परन्तु उसका मातृत्व कितना उत्कर्ष और गहरा होगा, जिसके आश्रय वह इतनी पीड़ा सह सकी।

विद्यार्थी—श्रीमान जी यह तो बड़ा उत्साहजनक उत्कृष्ट उदाहरण है।

अध्यापक—महान लेखकों ने प्रेम की प्रशंसा इसीलिए की है कि इसके तत्वों में एक आत्म त्याग का गुण भी है। एक बार एक माता मेरे पास आई और बोली, "मेरा पुत्र एक मास से टायफाइड के कारण बिस्तर पर पड़ा है मुझे नहीं मालूम कि मुझे क्या हो गया है। पिछले 21 दिन से रात भर मैं नींद की एक झपकी भी नहीं ले सकती। मेरे पति और अन्य मुझे विश्वास दिलाते हैं कि वे जागते रहेंगे लेकिन (सजल नेत्र हो) मेरे दिल को विश्वास ही नहीं

होता। मैं महसूस करती हूं कि वे सो जाएँ और मेरे बच्चे की अवहेलना हो। ओह! मुझे क्या करना चाहिए?

मुझे बड़ी दया आई। मैंने उसे दिन को सोने का आदेश दिया क्योंकि रात्रि की भान्ति दिन हमें निद्रा-प्लावित नहीं करता। उसे यह भी कहा कि उसे यह विश्वास रखना चाहिए कि बच्चे का पिता भी उससे प्रेम करता है।

वह बोली, "हां मेरे पति भी उससे बड़ा प्रेम करते हैं। परन्तु मैं पागल हूं मैं सोचती हूं कि यदि मेरा बच्चा मुझसे छीन लिया गया तो में संसार में कैसे जीवित रह सकूँगी"?

मैने कहा, "यह प्रेम का विकृत रूप है। नाशवान् वस्तुए नाश तो होंगी ही। शरीर नाशवान् है यदि किसी भी क्षण यह काम करना बन्द कर दें तो स्वाभाविक ही होगा। आत्म ही शरीर की उत्मता और जीवन का सौंदर्य है। हमारी आत्मा शारीरिक मृत्यु के साथ कभी नहीं मरती।"

"आपको विश्वास है कि आत्मा अन्य लोक में समान जीवन व्यतीत करती है? आपको विश्वास है कि मेरा पुत्र मेरा है और वह मातृ-रूप में मुझे आकाश-लोक में भी पहचान सकता है?

मैंने कहा, "हाँ!"

वह शान्तिपूर्वक वहाँ से चली गई। तथापि उसका बालक अच्छे डॉक्टरों द्वारा रोग से बचा लिया गया।

भाग 4(ii)

अच्छे आत्माओं के हृदय के उदगार

श्रद्धा भाजन मात-पिता जी

'माता-पिता' सुरक्षित, स्नेहपूर्ण, महत्वपूर्ण, त्यागमय, संसार छिपा है इस शब्द के पीछे! किसी ने सच ही कहा है, '**जब मां बाप दिए थे, तो उन्हें देखने की आंख भी दी होती।**'

"मैं जब अपनी माता जी को अंगूर व अन्य फल खिला रहा था तो ऐसा लग रहा था जैसे उसका रस मेरे भीतर जा रहा है।"

-विजय सिंघल, लखनऊ

मैं जब भी भरतपुर अपने घर पर जाता हूं, तो मां के पांव में सिर रखकर मेरे भीतर एक बिजली का सा संचार होता है।"

-रविन्द्रनाथ, कोटा

"डाक्टर साहिब, मेरा शरीर मेरा खून व सारा धन ले लो किन्तु मेरी माँ को स्वस्थ कर दो। मेरे पास जो कुछ है, उन्हीं का दिया हुआ है। सब कुछ लग जाए, मेरी उपकारी माँ बच जाए, तो भी लाभ का सौदा है।"

-रूप चन्द, लखनऊ

"बस, मेरी एक ही इच्छा है, माता जी प्रसन्न रहें। जो कुछ है सब उन्हीं का दिया है। हम उनके लिए कुछ नहीं कर रहे।"

–अनिल अग्रवाल, अम्बाला शहर

"आप जैसे पिता को पाकर मैंने सदा धन्य-धन्य महसूस किया है। आपसे बेहतर पिता नहीं हो सकता।"

–कुमारी निधि कंसल, गज़ियाबाद

श्रीमान जी, आप दान की रसीद हमारे नहीं, माता जी के नाम ही काट दिया करें। यह सब उन्हीं का है।"

–अनिल कुमार, अम्बाला

मैं रोज़ाना दो फूल लेता हूं पहला फूल भगवान देवात्मा के चरणों में (जिन्होंने माँ का उपकारी रूप दिखाया) व दूसरा माता जी की छवि के सन्मुख रखकर नतमस्तक होता हूं।

–बलदेव सिंह, चण्डीगढ़

श्रद्धेय पिता जी के एक ईमानदार पटवारी होने का मुझे गर्व है। उनका ऐसा जीवन सदा अपने व्यवहार में ईमानदारी हेतु प्रेरणादायक रहा है।

–सुदेश गुप्ता, हरबर्टपुर

माता पिता के भाव

"बेटा, मदन! तूने मेरे पेट पड़े का बदला उतार दिया।"

–परलोकवासी श्रीमती पत्नी (डॉ.) सिरीराम जी, दिल्ली

"अफसोस मैंने अपने पिता जी की वह सेवा नहीं की, जो शादी लाल मेरी करता है। वह मुझे मरने भी नहीं देता। इतने फल, दवा व सेवा पा रहा हूं कि मैं धन्य धन्य हो गया हूं।"

–परलोकवासी श्रीमान देवी चन्द जी, मोगा

"भगवान देवात्मा के उन कर्मचारियों व सेवकों को हाथ से खाना खिलाना चाहती हूं जिन्होंने मेरे बेटे को श्रवणकुमार बना दिया।"

–श्रीमान रूपचन्द जी की परलोकवासी माता जी

कुछ हितकर लेख और अनुभव

1. उपकारों की गणना

एक बार एक देश में एक थियेटर में एक विचित्र दृश्य दिखाया गया। एक लड़की एमिली ने जो युवावस्था तक जीवन व्यतीत किया, उसे नाटक में पेश किया गया और फिर दिखाया गया कि बच्चे को जन्म देने में उसकी मृत्यु हो गई। कहानी लेखक ने कल्पना की कि मृत्यु के बाद फिर ऐमिली को एक बार एक दिन के लिए अपने 12 वें

जन्म दिन पर धरती पर वापिस आने का अवसर दिया गया। उस दिन ऐमिली ने पहली बार अपने माता पिता के उपकारों और सेवाओं को देखा, उनके प्यार और त्याग को देखा। एक दिन में ही माता पिता ने जितनी सेवाएं की उनको अनुभव किया। वह उनके प्यार और उपकारों को और अपने नाशुकेपन को देखकर इतनी अधीर हुई कि कहने लगी ओह! मुझे वापिस कब्र में ले चलो। हाय! मैंने इतने वर्ष उपकार पाकर उनको देखा तक नहीं। मैं यहां रहने की अधिकारी नहीं। परन्तु जाने से पहले एक नज़र भर कर मैं देख लूं। अच्छा "मेरे माता पिता अलविदा, मेरी माता के फूलो, अलविदा! गर्म पानी के द्वारा उनका मुझे स्नान कराना और प्रैस करके कपड़े देना अलविदा!! मुझे सुलाना और जगाना, अलविदा!!!

उपरोक्त कहानी एक मिथ्या कल्पना है। कोई मरने के बाद फिर इस पृथ्वी पर नहीं आ सकता, परन्तु इस कहानी का भाव बहुत ही सुन्दर है। माता पिता के उपकारों की बेहद लम्बी फिल्म का कोई भी सीन स्वार्थी संतान को याद नहीं रहता। परमपूजनीय भगवान देवात्मा ने ऐसे शुष्क मानव हृदयों में कि जिन्होंने कभी माता-पिता के उपकारी रूप को नहीं देखा था कृतज्ञता का भाव जगाया है और उन्हें इस योग्य बनाया है कि वह माता पिता के न केवल जन्मदाता, रक्षाकर्ता और पालनकर्ता रूप को अनुभव करें, परन्तु उनकी छोटी छोटी सेवाओं को भी अनुभव करें। भगवान देवात्मा ने मुर्दा आत्माओं को एक ऐसे लोक में जन्म दिया है जहां वह माता पिता के उपकारों को देखकर

गद गद हो सकते हैं और अपनी अकृतज्ञता को देखकर दुखी हो सकते हैं।

करोड़ों बच्चे एमिली की न्याई ही पलते हैं, एमिली की न्याई ही उनके माता पिता उन्हें प्यार देते, उनके लिए त्याग और तप करते, उनको सुख देते और उनकी पालना और सेवा करते हैं, उन पर अनन्त उपकार करते हैं; परन्तु वह करोड़ों बच्चे एमिली की न्याई ही माता पिता के उपकारों को देखने और उनकी सराहना करने से उदासीन रहते हैं। ओह! यह कैसी दुनिया है। हम सब ऐसी ही नारकीय दुनियां के वासी थे। परमपूजनीय भगवान देवात्मा की शरण में आने से पहले एक जन ने न केवल माता पिता के उपकारों को नहीं देखा था किन्तु वह उनके लिए महादुखदायी भी बना हुआ था। भगवान देवात्मा की ज्योति शक्ति ने उसे नई आंखें दी, उसका हृदय नया बना दिया। उन्होंने सचमुच इसी धरती पर स्वर्ग पैदा किया है।

जैसे कहा जाता है:-

रंज का खूगर हुआ इनसां तो मिट जाता है रंज,

मुश्किलें इतनी पड़ीं मुझ पर कि आसां हो गई।

उसी प्रकार करोड़ों जन अपने जीवन से यह कह रहे हैं "उपकार पाने का खूगर हुआ इनसां तो मिट जाते हैं उपकार, उपकार इतने मिले कि वह साधारण वस्तु बन गए।" केवल इतना ही नहीं कि उपकार साधारण वस्तु बन जाते हैं, परन्तु उपकार पाना हमारा स्वार्थी हृदय अपना

अधिकार समझने लग जाता है, और हजारों उपकार पाकर यदि कोई एक इच्छा पूरी नहीं होती या एक बात मर्जी के विरूद्ध हो जाती है तो उपकारी हमें शत्रु अनुभव होने लगते हैं। उनसे स्नेह और प्यार कम होने या समाप्त होने लगता है। पूजनीय भगवान देवात्मा ने अपने देव हृदय से उन उपकारों की भी किस प्रकार गिनती की है, जिन्हें लोग कभी अनुभव नहीं करते। भगवान ने ऋण का दृष्टांत देते समय देव शास्त्र तीसरे खण्ड में फरमाया :-

"एक जन ने अपने वा किसी और के असहाय बच्चे के शरीर की कुछ वर्षों तक पालना की, उसे खाने के निमित अपने पास से आहार दिया, पीने के निमित पानी दिया, उसके पहनने के लिए अपने दामों से वस्त्र बनाए, उसके मलमूत्र लिप्त पौतड़े धोए, और सुखाए, उसे साफ रखने के लिए उसका मुंह धोया, उसके हाथ धोए उसके सारे शरीर को नहलाया और पोंछा, और उसे गोद में रखा, उसके खेलने के लिए खिलौने दिए, उसके स्वस्थ्य की रक्षा और उन्नति के लिए उसे आवश्यकता के अनुसार खुली वायु में रखा, उसके पहनने के मैले कपड़े धोबी से धुलवाए, और उसके लिए उसे पैसे दिए, वा आप धोए और धोने के लिए साबुन मोल लिया, उसकी बीमारी में उसकी चिकित्सा और सुश्रुषा की, और ऐसा करने में आवश्यक होने पर अपना उचित सुख और अपना उचित आत्म त्याग किया। फिर समय आने पर उसे विविध शब्दों का उच्चारण और बोलना सिखाया। किसी स्कूल में भेजकर उसे विद्या पढ़ाई, और विविध अन्य बातों की उन्हें शिक्षा दी। स्कूल की पढ़ाई के

दिनों में उसकी फीस दी, उसके लिए पुस्तकें मोल लेकर दी और उसके नाना प्रकार के अन्य खर्च पूरे किए, आदि आदि।"

उपरोक्त उपकारों की गिनती में कैसा महान सौंदर्य है। भगवान देवात्मा ने इन सब उपकारों को ऋण अनुभव किया है।

भगवान देवात्मा ने माता पिता और संतान के सम्बन्ध में जो साधनों के विशेष दिन नियुक्त किए हैं, और जो साधन बताए हैं, वह संसार में वह ही बता सकते थे। माता पिता के उपकारों की तो गणना ही क्या है, मनुष्य मात्र के सम्बन्ध में भगवान ने फरमाया है:-

"प्रत्येक ऐसा आत्मा जिस ने मेरा कुछ भी भला किया है, जिसने कभी खड़े होकर मेरी तरफ करूंणा की दृष्टि से, मेहरबानी की निगाह से देखा है, जिस ने झुक कर कभी जमीन पर पड़ी हुई कोई चीज़ ही मुझे उठाकर दी है, वह भी धन्य है। मैं उसके लिए मंगल कामना करता हूं।"

भगवान देवात्मा माता पिता के उपकारों को किस गहराई में अनुभव करते होंगे, इसका अनुमान उपरोक्त शब्दों से लगाया जा सकता है।

माता पिता के एक दिन के उपकारों की ही एक रील बन सकती है। भगवान देवात्मा ने एक कृतज्ञ सृष्टि पैदा करने का सर्वथा अनुपम कार्य इस संसार में आरम्भ किया

है। केवल माता पिता का ही नहीं, संसार के सब उपकारियों का रूप दिखाया है, पशुओं, पौधों वा अजीवित पादार्थों तक के उपकारों का बोध कराया है। उन्होंने एक नया स्वर्गीय युग निर्माण करने का सुत्रपात किया है। उनकी शरण में आकर एक एक उच्च पद धारी ने प्रति दिन अपनी माता के पांव धोने का साधन किया है, इतना ही नहीं पांवों को तोलिए से पोंछने की बजाए श्रद्धा और कृतज्ञता के भावों से परिचालित होकर एक एक बार अपने सिर से साफ सुथरी पगड़ी उतारकर अपनी जननी के पांव पोंछे हैं। एक एक संतान ने माता पिता की इतनी सेवा की है कि माता पिता गद् गद् होकर और रो रोकर उसका वर्णन करते रहें हैं।

भगवान देवात्मा के एक सेवक ने मात पिता संतान व्रत के अवसर पर देखे हुए एक स्वर्गीय दृश्य का इस प्रकार वर्णन किया है:-

"मैंने पचास वर्ष में यह दृश्य पहली ही बार देखा जब कि एक दर्जन से अधिक पिता और इतनी ही माताएं अपने अपने आसनों पर जो उनकी संतान ने बिछाए थे बैठ गए और फूलों के हार उनकी संतान ने उनके गले में पहना दिए। मेरा दिल यह कहता था कि फोटो ग्राफर बाहर समुद्रों और पहाड़ों आदि की सीनरी के चित्र खींचते फिरते हैं। क्यों नहीं ऐसे जीते जागते दृश्यों की तस्वीर कोई आकर खींचता और जिन्दा महा पवित्र सीनरी को क्यों नहीं कोई अंकित करता।... दुनिया वस रही थी, इसमें सैंकड़ों माता पिता वस रहे थे, परन्तु आप ने आकर उन्हें ऐसी हालत में पहुंचाया कि संतान उनके श्रद्धा भाजन रूप को

देखती है और अपनी अवज्ञाओं को सामने लाकर रोती है।...आपको धन्यवाद देता हुआ तृप्त नहीं होता। इस दुनियां में बिल्कुल निराला युग आप ने रचा है। और वह कोई कहानी कथा की बात नहीं, परन्तु वह साक्षात जरूर है। चाहे उसे कोई आज देख ले। वाह! कैसा स्वर्गीय और कल्पित बैकुण्ठ धामों को शर्मिन्दा करने वाला सच्चा दृश्य।"

भगवान देवात्मा ने कृतज्ञता के विचार से अनपढ़ इन्सानियत को केवल उपकारों की गिनती ही नहीं सिखाई, उनको कृतज्ञ भाव से परिचालित होकर उपकारियों की सेवा और ऋण परिशोध के साधनों में भी लगाया है। उनका आविर्भाव धन्य है, कोटि-कोटि धन्य है।

साभार
(जीवन पथ)

2. बीमार मां ने डाक्टर बेटे से कहा—तू मुझसे अपनी फीस ले ले पर अच्छी दवाई दे दे।

दिल्ली के डाक्टर श्रीराम जी 36 वर्ष एकमत के अनुयायी रहे। ईश्वर के दर्शन करने का अभ्यास करते रहे, लेकिन अपनी जन्मदाता माता के उपकारी रूप को देखने के योग्य न हुए। एक बार उनकी मां बीमार हो गई डाक्टर जी उनको दवाई देते रहे, इंजैक्शन लगाते रहे, परन्तु मां को आराम नहीं होता था। मां ने दुखी होकर कहा बेटा श्रीराम! तू मुझसे अपनी फीस ले ले, परन्तु मुझे अच्छी दवाई दे दे। कलकते से इनके भाई ने माता जी के लिए 200/- रूपए भेजे। उसमें से 100 उन्होंने अपने पास रख लिए और सौ रूपए माता जी को देकर कहा कि यह सौ रूपये मैंने आपके लिए मंगवाए हैं। उनके पुत्र मदनलाल जी एक बार जोर जोर से उनके साथ बोल रहे थे। डाक्टर जी ने कहा कि तुम जो इतने जोर जोर से बोलते हो, क्या मुझे मारोगे? बेटे मदन लाल ने कहा—"हां मुझे ऐसा करना ही पड़ेगा।" एक बार डाक्टर जी ने देखा कि उनका बेटा हाथ में पत्थर लेकर अपनी मां को कह रहा था-"राण्ड का सिर फोड़ दूंगा।" इस पर डाक्टर जी ने अपनी पत्नी से कहा कि मैं तुम्हारे नाम एक मकान कर दूंगा, उसके किराए से गुज़ारा कर लेना। बेटा तो तुम्हारी सेवा नहीं करेगा। इस पर बेटे मदन ने अपनी मां से कहा—"ओहो! अब तो तुम्हारे नाम मकान होने लगा है?" कहने का तात्पर्य यह है कि डाक्टर जी के घर में अनमेल और कलह कलेश छाया हुआ

था। परिवार का एक या दूसरा सदस्य आत्महत्या कर के मरने के लिए तैयार हो जाता था।

इस घर में जब भगवान देवात्मा के देव प्रभाव पहुंचे, तो सारा वातावरण बदल गया। श्रीमान मदन लाल जी ने अपनी मां की बीमारी में इतनी सेवा की कि मरते समय माता ने उनसे कहा कि बेटा! तुमने पेट पड़े का बदला उतार दिया। एक बार डाक्टर जी बाजार सीताराम से गुज़र रहे थे। सामने से उनके पुत्र मदन लाल जी आ रहे थे। बेटे ने भरे बाजार में अपने पिता के चरणों में सिर रखकर प्रणाम किया। कई लोग जो वहां से गुजर रहे थे, उन्होंने डाक्टर जी से कहा कि डाक्टर जी! आपके तो बहुत भक्त हो गए हैं। डाक्टर जी ने कहा कि यह तो मेरा बेटा मदन है। आज प्रातः किसी कारण वह प्रणाम का साधन नहीं कर सका था, इसलिए अब मिलने पर उसने प्रणाम का साधन किया है।

साधारणतः घरों में नर्क छाया हुआ है। वहां यदि संतान अपने माता पिता के सम्बन्ध में श्रद्धावान और कृतज्ञ और सेवाकारी बन जाए, तो वही घर स्वर्गीय बन सकते हैं। भगवान देवात्मा के देव प्रभावों में वह जादू है कि जो एक एक संतान को माता पिता के सम्बन्ध में कृतज्ञ और सेवाकारी बना देता हैं।

3. दुनिया में सबसे सुन्दर वस्तु क्या है?

अपना घर

सच्चा स्वर्ग अच्छे घर में है

एक कलाकार संसार की सुन्दरतम वस्तु का चित्र बनाना चाहता था। वह यह जानने की खोज में निकला कि संसार में सबसे सुन्दर वस्तु कौन सी है उसे एक संत मिले तो उसने उनसे प्रश्न किया। संत ने श्रद्धा को संसार में सबसे सुन्दर वस्तु बताया। जो अपने उपास्य देव के दर्शन करवा देती है।

फिर उसे एक स्त्री मिली उसने प्रेम को सबसे बड़ा स्थान दिया।

तीसरी बार एक सैनिक मिले जो युद्धों के बहुत भयानक परिणाम देख चुके थे। उन्होनें शान्ति को ही सबसे सुन्दर वस्तु बताया।

कलाकार इन्हीं विचारों में खोया हुआ अपने घर पहुँचा घर में प्रवेश करते ही उसके बेटों ने चरणों में गिरकर श्रद्धयापूर्वक प्रणाम किया उसका हृदय निहाल हो गया। फिर धर्मपत्नी मिली उसने अपार प्रेम से अपने पति का स्वागत किया कलाकार धन धन हो गया।

जहां श्रद्धा और पारस्परिक प्रेम हो वहां ही शान्ति ही होनी थी। अब कलाकार के मन में यह समस्या बनी हुई थी कि तीनों ही बातों को एक ही चित्र में कैसे दिखाया जाए। श्रद्धा ... प्रेम ... शान्ति! घर का वातावरण देखकर

उसकी समस्या का समाधान हो गया और उसने चित्र बनाया अपना घर।

साहिबान! देवात्मा और कनल जी की बात छोड़िए जो अच्छे आत्मा भी इन दृश्यों को ब्यान करते हैं तभी आखें भर आती हैं, दिल भर आता है।

मैं इस लेख को अपनी कल्पना शक्ति से इस प्रकार देखता हूं वह घर आया तो दूर से बच्चों ने देख लिया। यह तब की बात है जब कोई मोबाईल नहीं होते थे, गाड़ियां नहीं होती थी। यह फटाफट वाले साधन नहीं होते थे। एक बच्चा चिल्लाता हुआ मां के पास गया कि मां मां पापा आ गए। दूसरा बच्चा भागा भागा गया और पिता के चरणों में लेट गया। बेटी गई और जाकर बाप की टांगों से लिपट गई पापा इतनी देर कहां लगा दी। मैंने आपको बहुत miss किया। पत्नी को पता चला तो वह तेज़ तेज़ कदमों से बाहर निकली। अपना घूंघट संभालती हुई चरणों को हाथ लगाती हुई कहती आपको देखने के लिए आखें तरस गई थी। बिठाया, पानी पिलाया, किसी ने पंखा किया, किसी ने शरबत बनाया, आस-पड़ोस में संदेशा भेजा कि पापा आ गए हैं, किसी ने यह नहीं पूछा कि आप क्या लाए हो, वो कलाकार जो सारा रिकाड़ इक्कठा करके लाया था। वह सारा अलमारी में रख दिया। कहता यह सबसे सुन्दर दृश्य है यह जो अच्छा परिवार है यह संसार का सबसे सुन्दर दृश्य है।

4. सोलह दिन में सिमटा—अर्पण-तर्पण

प्रस्तुत विचार व कविता के अंश परलोक गत माता पिता के उदगार हैं कि जिनके बच्चे कृतज्ञता से विहिन होकर अपने उपकारी माता-पिता जी की इस दुनिया में वर्तमानता में उनकी कदर नहीं करते। उनसे उदासीन रहकर वा उन्हें अनदेखा करके अपनी दुनिया में खोये रहते हैं, परन्तु उनके परलोक चले जाने पर उनके अर्पण-तर्पण के नाम पर कुछ रस्में पूरी करके अपना कर्तव्य पूरा हो गया समझते हैं। परलोक गत माता पिता व अन्य संबंधी उनके इस खोखले अर्पण-तर्पण से कितनी सन्तुष्टि पाते हैं, वह तो माता पिता ही जानते हैं। बच्चों की ओर से प्यार व सन्मान की एक नज़र पाने के लिये तरसते माता-पिता यह संसार छोड़ जाते हैं। ऐसे ही माता-पिता संतान की परस्पर विचार लड़ी प्रस्तुत है, जो हमने 'मधुरिमा' के 22 सितम्बर 2010 के अंक में धन्यवाद सहित ली हैं।

प्रिय चिरंजीव! आयुष्मान भव: पितृ पक्ष में अपने लिये तुम्हें श्रद्धापूर्वक तर्पण-अर्पण करते देखा बहुत सुख मिला वह सुख जो तुम्हारे जन्म के समय मिला था तुम्हारी नर्म मुलायम हथेलियों के स्पर्श से पुलकित हुआ था वह सुख जो पहली बार तुम्हे पईयां-पईयां चलते देख कर आंखों से छलका था; जो तुम्हें अपने पैरों पर खडा होते देख गौरव में बदला था वह सुख तुम्हारी व्यस्ता बढ़ने के साथ-साथ घटता गया था वही सुख तुम्हें यूं तर्पण-अर्पण करते देख, हमारे हृदय में फिर से पैर पसार गया।

हम तो अब एक शून्य हैं, भटके हुए हैं और तुम जीवन कथाएं लिख रहे हो। यदि समय मिले तो हमारी इस व्याकुलता का उत्तर भी लिखना कि क्यों हम जैसे माता-पिता को मरणोपरान्त ही मिलता है वह आदर समर्पण, जिसके हम जीते जी अधिकारी थे क्यों उम्र के अन्तिम सोपान पर हम एकांकी हो जाते हैं किसी आश्रम देवालय या घर के किसी किनारे कमरे में सिमट जाते हैं। अपने ही समय में, बीते हुए समय सा हो जाते हैं।

जीवन में अनगिनत प्रसंग बनाए, फिर भी हमने अपना अप्रसंगिक होना भोगा......? हालाकि किसी ने हमारे दर्द को शब्द दिये तो किसी ने अपनी संवेदना इन पंक्तियों में व्यक्त की:-

1) प्रश्न कई घुमड़े हैं मन में

कुछ बोने हैं और कुछ विकराल।

सोचते हैं कि क्या इसी को हमने अपना संसार माना था? अपने संस्कार माना था? यदि यही हमारे संस्कार थे, तो यह मात्र श्राद्ध तक ही क्यों ठहर गए? आचरण में क्यों नहीं उतरे?

हमने तो "सुना था एक अनजाने स्रोत से निकली हुई धारा अनवरत बहती है तब विस्तार पाती है।"

2) यह कैसा विस्तार हुआ जो सोलह दिनों में सिमट कर रह गया है? क्या तुम अपने बेटों को बता सकोगे, कि हम कितने अकेले थे उस विरान कमरे में,

जिसमें घर का शायद ही कोई आता जाता था महीनों तुमसे बतियाने को तरसे थे हम अलबता कोने वाले उस कमरे की खिड़की से तुम को घर आते जाते देखा करते थे। कितना बदल गया था समय, सोचा करते थे।

एक समय था जब तुमको पल भर की दूरी स्वीकार नहीं थी। "सोते समय अपना हाथ हमारे ऊपर रखना, मुंह भी सारी रात हमारी तरफ ही करना" सोने से पहले तुम्हारी सारी तोतली शर्तें हम नींद में भी पूरी करते थे। फिर रोते रोते वह आलम भी देखा कि-"एक नज़र ठहरे बेटे की चलते चलते हम पर भी।"

हम थक गए तो मन तुम्हारी दुआओं में चलने लगा। उम्र की थकान के बावजूद आशीष निकलता रहा। कहीं पढ़ा कि:- थके पिता का उदास चेहरा, उभर रहा है यूं मेरे दिल में, कि प्यासे बादल का अक्स जैसे, किसी सरोवर से झाँकता है।

3) वह थके पिता की तलाश ही थी- जो एक बूंद जल के लिये बादल की तरह तुम्हारे सरोवर में झाँक रही थी- कि कब पिछलों और हमें तृप्ति मिले।' मगर हमारी प्यास प्यासी हो रही है वह सूखा कंठ आज भी चुभता है।

उसी चुभन और सवालों को लेकर शून्य में भटक रहे थे कि तुम्हें तर्पण-अर्पण करते हुए देखा तो बहुत सुख मिला जिस श्रद्धा और समर्पण को हम तरस रहे थे उसी प्रेम के सारे बादल झर-झर करके बरस रहे थे। काश! हमारी आत्माओं को यह तृप्ति जीते जी ही मिल जाती।"

अर्पण-तर्पण रस्म पूरी कर देने का नाम नहीं। हमारे परलोक गत संबंधी तो सोलह दिन के अर्पण-तर्पण से ही निहाल हो जाते हैं सच्चा अर्पण-तर्पण तो उच्च भावों के द्वारा ही किया जा सकता है। मन में माता पिता के प्रति यदि श्रद्धा हो तो उमर भर उनके प्रति आदर सन्मान वा उनकी वर्तमानता को वरदान समझे और वृद्ध होने पर माता पिता को फजूल- फालतु वस्तु समझ कर पिछवाड़े न डाल दे, व वृद्धा आश्रम में न छोड़ दें। अर्पण-तर्पण तो उनसे पाए बे-शुमार स्नेह Care व उपकारों के प्रति कृतज्ञा भाव के अर्पण का नाम है। हमारी हस्ती, उसका विकास उसकी रक्षा व उसका वर्तमान स्थिति को पहुंचना; माता-पिता की ही कृपा के कारण हैं। 16 दिन अर्पण-तर्पण के नाम पर कुछ रस्में पूरी करने से ही माता पिता आनन्दित हो जाते हैं, क्योंकि जीते जी उन्होंने संतान से तिरस्कार पाया होता है यह कितनी बिडम्बना है, जन्म-दाता पालन-कर्ता, रक्षा-कर्ता वा शिक्षा-दाता, हमारे लिये हर सांस के साथ शुभ कामनायें करने वाले माता पिता संतान की ओर से पांच मिनट समय और दो शब्द प्यार के कृतज्ञता के सुनने को तरसें।

संस्थापक देव समाज भगवान देवात्मा नाशुकी संतान को शुक्र गुज़ार व सन्मान भावधारी बनाते हैं माता-पिता खुशियों से लबालब भरे हुए वा अपनी संतान को आशीष देते हुए इस संसार से विदा लेते हैं। संतान की तरफ से मिलने वाले दु:ख क्या होते हैं, बेरूखी क्या होती है। उसका साक्षात् अनुभव नहीं होता।

उच्च भावों और उनके दाता की कितनी महान महिमा है और कितनी आवश्यकता है, इस संसार को।

(साभार देव समाज समाचार)

5. माता पिता या अच्छे पूर्वज बनने की जिम्मेवारी

मनुष्य की वह घड़ी निहायत मुबारक थी, जब खुदा नामी वाहमी वजूद के सम्बन्ध में अधिकारी मनुष्यों के भीतर शंका पैदा हुई है, और विज्ञान की सच्चाई की रोशनी में यह विश्वास डोलने लगा, और डोलते डोलते बिलकुल उड़ गया। इस भयानक और महा हानिकारक विश्वास का जाना था, कि मनुष्य मात्र की बहुत बड़ी भलाई का मार्ग खुल गया था। मनुष्य के सामने कई अजीब तत्व प्रकट हुए, जिन्होंने मनुष्य का सार नुकता निगाह ही बदल दिया। मनुष्यों के सामने यह तत्व भी प्रकाशित हुआ कि एक एक बच्चा जो आज जन्म लेता है, वह अपने साथ जो प्रकृति लाता है, वह सारी की सारी अपने माता पिता व पूर्वजों से लाता है; इसलिए माता पिता और पूर्वज आज के जाये हुए बच्चे की भली या बुरी प्रकृति के जिम्मेवार हैं। इस सच्चाई की रोशनी में एक लेखक ने खूब लिखा है कि हे इंसान के बच्चे! तुम अपने माता पिता व पूर्वजों को चुन लो, क्योंकि वह तुम्हारे शारीरिक और आत्मिक गठन के जिम्मेवार हैं। बच्चे बेचारे ने माता पिता व पूर्वज जन तो क्या चुनने हैं, अलब्ता इस सच्चाई की रोशनी में माता पिता व पूर्वजों का यह कर्तव्य हो जाता है, कि वह अपने शरीर और आत्मा की बेहतरी के लिए शिर तोड़ संग्राम करें। अफसोस यह है, कि इस सच्चाई से अन्धे होकर माता पिता और पूर्वज जन बाहयक धन और जायदाद के इकटठा करने में तो शिर तोड़ कोशिश करते हैं और धन और जायदाद को अपने बच्चों को दे जाना चाहते हैं, परन्तु यह अपनी अंधता और अज्ञानता के

कारण यह नहीं जानते कि इस उच्च चरित्र की विरासत के बिना उनका यह दिया हुआ धन और जायदाद बहुत सारी सूरतों में उनकी बरबादी का कारण बनता है। यह दृश्य देखकर ही अमरीका के करोड़ पति कारनेगी साहिब ने रहीसों के बच्चों के लिए जो एक बहुत बड़ा कालेज था, उनमें जाकर जब उन्होंने लेक्चर शुरू किया, तब रहीसों के बच्चों को सम्बोधन करके कहा कि "ऐ रईसों और धनाढयों के अभागे बच्चो।"

अब मिस्टर कारनेगी ने उन बच्चों को अभागा क्यों बताया? वह इस लिए कि उन बच्चों को धन और जायदाद तो बहुत मिल जाएगी, परन्तु उस धन और जायदाद को पाकर वह भोग विलास की जिन्दगी में पड़ जायेंगे और उन्नति के मार्ग से हट जायेंगे। लाखों और करोड़ों बच्चे जो पागल खानों में दाखिल हो जाते हैं, या विरासत में गन्दी बीमारियां पाते हैं, या उस तरह का कमजोर या बरबाद हुआ शरीर पाते हैं, उन सबकी जिम्मेवारियां उनके पूर्वजों पर हैं।

बिलायत में आक्सफोर्ड और कैम्बरेज की युनिवर्सिटियां हैं, जो सदियों से काम कर रहीं हैं। इन्हीं युनिवर्सिटियों में यह हैरानी से देखा गया है, कि एक मजमून में जो जन गैर मामूली योग्यता के मालिक साबित हुये हैं, वह बहुत बड़ी संख्या में एक ही नस्ल से आए हैं। और एक एक और नस्ल के बच्चे बहुत बड़ा संग्राम करके भी अपना जौहर नहीं दिखा सके, क्योंकि वह ऐसे नस्ल में से थे, कि जिनमें जौहर था ही नहीं। इसलिए जिन जिन बच्चों को नेक माता पिता व पूर्वज मिले हुए हैं, उनको धन्य

धन्य होना चाहिए, कि वह ऐसी नस्ल से पैदा हुए हैं। और वह अपने पूर्वजों को केवल इसलिए स्मरण न करे, कि वह उनको धन और जायदाद दे गए हैं, किन्तु इसमें भी बढ़कर गहरे धन्यवाद के भाव से इसलिए भी स्मरण करें, कि वह उनके आत्मिक उच्च प्रकृति की पूंजी दे गए हैं।

सरदार साहिब श्रीमान सावन सिंह जी अपने बच्चों को मुरब्बे दे गए, दो नम्बरदारियां अता कर गये। उनको एक जागीर भी मिली। गर्वनमेंट की तरफ से उनको सरदार साहब का खिताब भी मिला। उनके प्रताप से ही उनके बच्चों को अच्छे अच्छे ओहदे मिले। इस विरासत को याद करके क्या उनके बच्चे और क्या दुनियां के लोग उनके सराहने के भाव से स्मरण करते हैं, परन्तु शोक और महाशोक! कि इस बाहय्क जायदाद के लाखों गुना ज्यादा जो जीवन की जायदाद अपने बच्चों के लिए छोड़ गए हैं, उसकी तरफ न बच्चों का और न ही दुनियां का ध्यान है। सरदार साहिब ने अपनी निहायत ही नेक प्रकृति का दान जो बच्चों को दिया है, जिस प्रकार इस परिवार के बच्चे सम्मान भाव का प्रदर्शन करते हैं, दिल खोलकर दूसरों की सेवा करते हैं, उच्च संगत से लाभ उठाते हैं, और एक एक सभा में बाज जन पाक आंसू भी बहाते हैं, उस सब को देखकर मैं सरदार साहब को धन्यवाद देता हूं। अपने जीवन का जो दृष्टांत वह दिखा गए हैं, वह इस खानदान के लिए गौरव की वस्तु है। उनके भीतर गैर मामूली दीनता और गैर मामूली श्रद्धा का भाव विद्यमान था। वह पक्के दयानतदार थे। वह न्याय भाव के प्रेमक थे। वह औरों के सम्बन्ध में दर्द दिल रखते थे।

वह एक एक औहदे को अपने लिए एक बहुत ही बड़ी जिम्मेदारी बोध करते थे और उसको पूरा करने के लिए गैर मामूली संग्राम करते थे। उनकी इस आत्मिक उच्च प्रकृति ने क्या आफिसरों पर और क्या प्रजा पर अपना गैर मामूली सिक्का जमा दिया। प्रजा ने उनको फरिश्ता तहसीलदार कहा। पंजाब के लाट साहब ने उनको अपना दोस्त समझा। उन्होंने अपनी उन्नति के लिए कभी कोई दरख्वासत नहीं की। परन्तु उनके आफ़िसर इस फिकर में रहते थे, कि वह एक फरिश्ते को यह भी दें, और अधिक से अधिक दें। सरदार साहिब ज्यों ज्यों अपनी तनख्वाह में उन्नति पाते गए त्यों त्यों ही अधिक से अधिक दान करने में खुशी लाभ करते रहे। क्या सरदार साहिब के पारिवारिक जन उनके जीवन की पूंजी और श्रेष्ठ दृष्टांत की सामग्री को अपने लिए बहुत कीमती विरासत अनुभव करते हैं? अगर नहीं करते तो महाशोक का विषय है। मैं प्रार्थना करता हूं, कि सरदार साहिब के पारिवारिक जनों की आखें खुले, उनका ध्यान उनकी इस अंदरूनी विरासत की और जा सके। और वह उसे उस विरासत के बढ़ाने के फिक्र और संग्राम में लग जायें। काश! मेरी यह प्रार्थना भगवान देवात्मा के शुभ आशीर्वाद से पूरी हो सके।

6. माता पिता कहां कहां अपराधी बनते हैं?

(विचार करने के योग्य सत्य)

एक कहानी बहुत से लोगों ने सुनी होगी कि एक अपराधी युवक को जब फांसी होने वाली थी और उसकी अंतिम इच्छा पूछी गई तो उसने कहा कि मैं अपनी मां से एक बात कहना चाहती हूं। उसने अपनी मां से कहा कि मां तूं ही मेरी फांसी का कारण बनी है क्योंकि मैं जो चोरी का सामान लाता था उसे तू घर में रख लेती थी। मुझे चोरी छोड़ने के लिए कभी भी नहीं कहा और मैं बड़े बड़े अपराध करने लग गया। माता पिता जिन जिन बातों से संतान के लिए हानिकारक बनते हैं। उनमें से कुछ यह हैं:-

1. जो माता पिता संतान को सद शिक्षा नहीं देते वो अपनी संतान के सम्बन्ध में अपराधी बनते हैं।

2. जो माता पिता स्वयं रिश्वत लेते हैं और संतान द्वारा भी रिश्वत का धन पाकर प्रसन्न होते हैं, जो अपनी ईमानदारी का खून करते और पाप की कमाई से आप नीच बनते हैं वो अपनी संतान के भी शत्रु बनते हैं उनको अपराधी बनाते हैं। जिसका परिणाम एक एक बार संतान को जेल में भी भिजवा देता है। न भी जेल हो तो भी पाप की कमाई मनुष्य को पापी व अपराधी तो बनाती ही है।

3. अनेक माता पिता अपने जीवन के नीच प्रभावों और झूठ और बुराई के दैनिक व्यवहार से अपनी संतान को भी नीच बनाते हैं। संतान के पहले और सबसे प्रभावी

शिक्षक माता पिता होते हैं। संतान उनका ही अनुकरण करती है। यदि माता पिता झूठ, कपट, अशिष्टता, गाली गलोच, घृणा और कटु वचन आदि की गतियां करते रहते हैं तो संतान भी न्यूनाधिक उनके रूप में ढलती जाती है।

4. जो माता पिता संतान व अन्य नशों का सेवन करते, मांसाहार करते और अंड़े खाते हैं वो संतान को भी उन्हीं का अभ्यासी बना देते हैं।

5. आमतौर पर माता पिता अपने खानपान में असंयमी होते हैं। गर्म मसाले और तली हुई वस्तुएं, मिठाईयां और रेशा या तन्तु रहित (Refined Food) खाते और चाय, काफी, कोला पेय आदि पीते हैं। उसी खानपान की अभ्यासी संतान भी बन जाती है। इस प्रकार माता पिता जहां अपने स्वास्थ्य की हानि करते हैं वहां संतान को भी अस्वस्थ होने और रहने के मार्ग पर डाल देते हैं।

6. यदि माता पिता स्वार्थ और नीच लक्ष्य का जीवन व्यतीत करते हैं और अधिक से अधिक धन कमाने और अधिक से अधिक सुख, स्वाद, सुविधा, और रहन सहन का (जीवन का नहीं) स्तर ऊंचा बनाने में ही विश्वास रखते हैं और इसी जीवन को अपना लक्ष्य बनाते हैं, तो उनकी संतान भी बहुत कुछ वैसे ही जीवन में ढलती जाती है कि जो जीवन मोटी बुराईयों से बचा रहकर भी संसार की भलाई में कुछ योगदान न करने के कारण फलहीन होता है।

7. संतान का विवाह करने में भी बहुत से माता पिता केवल सांसारिक धन सम्पति और ऊंची पोजीशन को देखते हैं न कि ऐसे वंश और ऐसे युवक युवतियों को जो शाकाहार हों, नशों से मुक्त हो और नम्र और सेवाकारी हों। वास्तव में किसी के स्वभाव को जानना आसान नहीं होता। एक उपाय यही है कि उच्च संगत और उच्च वातावरण से सम्बन्ध रखने वाले जनों को ही प्राथमिकता दी जाए उच्च भावों से ही गृहस्थ जीवन सुखी हो सकता है।

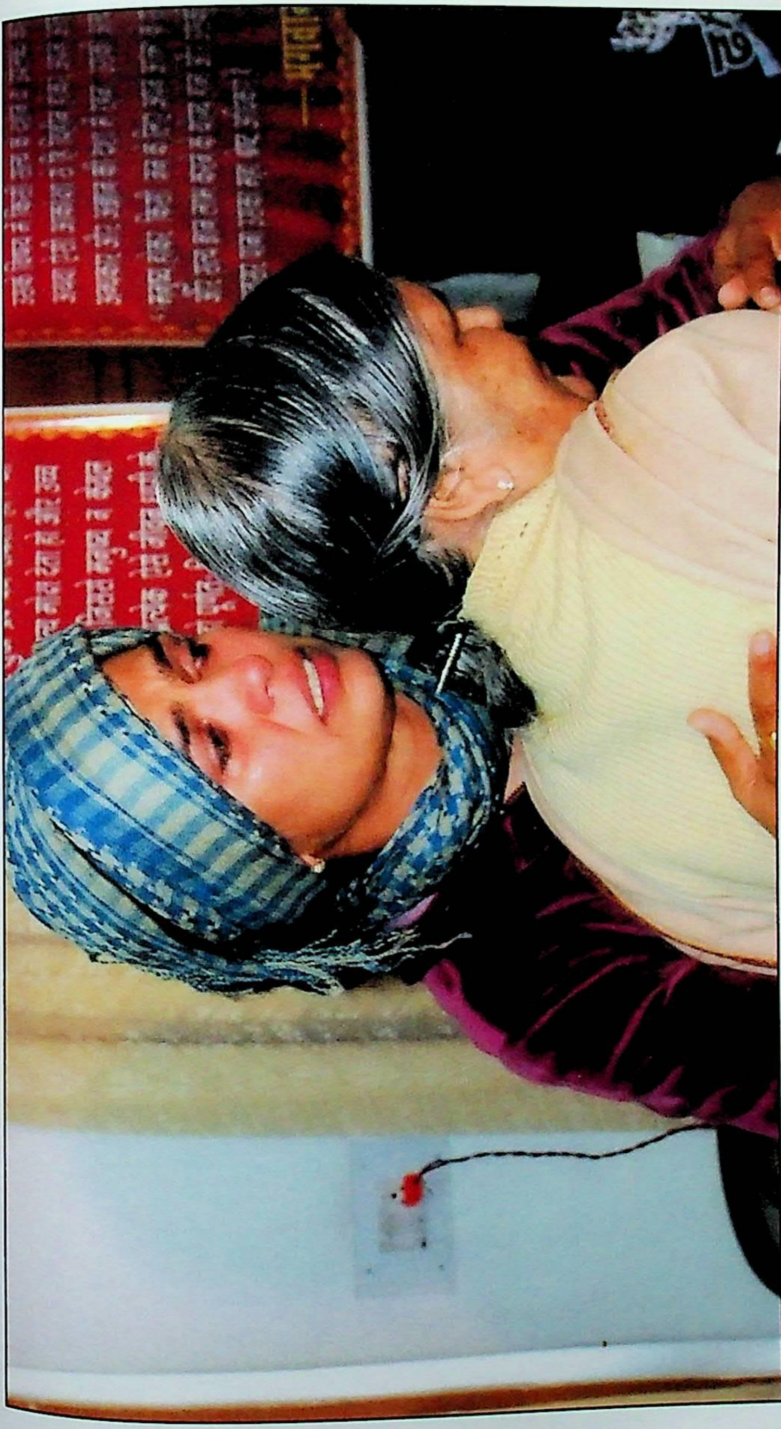
8. जो पति पत्नी आपस में लड़ते झगड़ते और कल्ह विवाद का जीवन बिताते हैं वो संतान के दिल में जहां अपना सम्मान घटाते हैं वहां संतान पर भी नीच प्रभाव डालते हैं।

9. वैज्ञानिक दृष्टिकोण न होने के कारण और अंध विश्वासी रहकर माता पिता अपनी संतान को भी वैसे ही हानिकारक और अकार्थ संस्कार देते हैं और उनकी न्याई उनकी संतान भी अंध विश्वासी बन जाती है और जीवन के सच्चे ज्ञान, सच्चे पथ और सच्चे लक्ष्य से वंचित रहती है जो बहुत घाटे की बात है।

10. माता पिता यदि संतान को शुभ और उच्च प्रभाव दायक संगत प्रदान नहीं करते और संतान में उच्च चरित्र के निर्माण की आवश्यकता बोध नहीं करते और संतान को स्वार्थी, स्वेच्छाचारी, उदंड बनने देते हैं उनकी अनुचित इच्छाओं और ज़िद को भी पूरा करते रहते हैं और संतान के स्वयं कमाने के योग्य होने पर भी अपना धन उन्हीं की भेंट



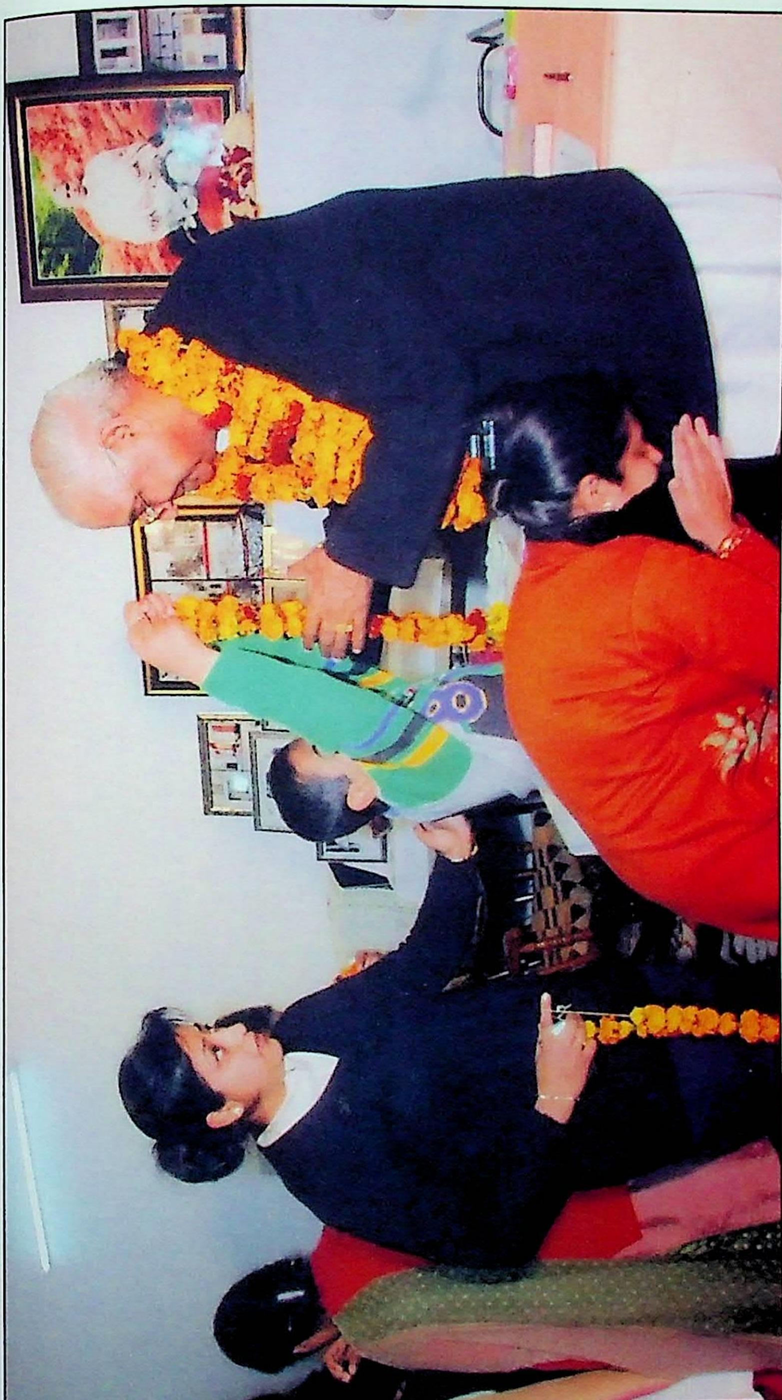
फुलों के हार से अपने पिता श्रीमान यशपाल भल्ला जी का अर्चन करते हुए श्री पीयूष भल्ला और अराधना गुप्ता



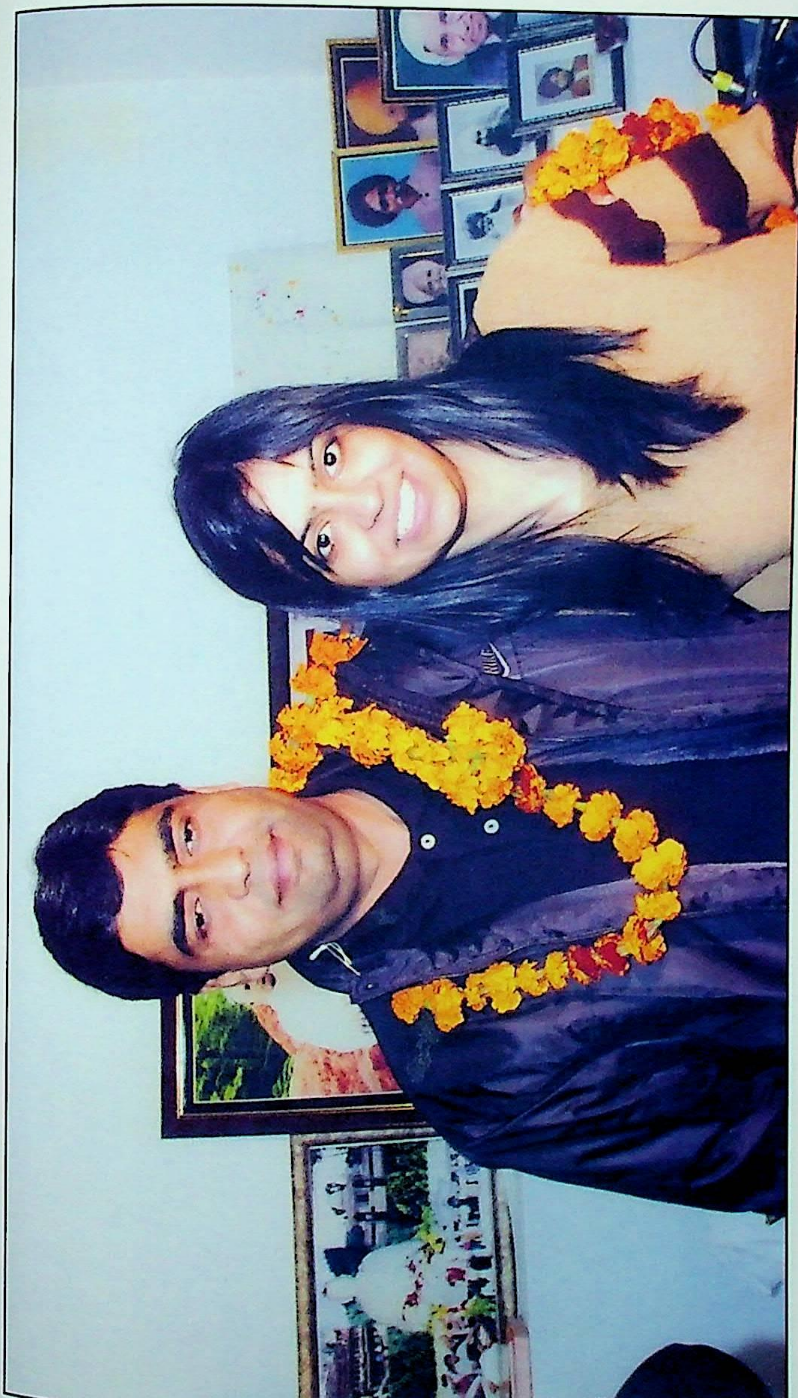
श्रीमती प्रेमलता भल्ला और उनकी सुपुत्री अराधना गुप्ता



फूलों के हार से अपने पिता श्रीमान यशपाल भल्ला जी का अर्चन करते हुए श्री आयूष भल्ला और सरिता भल्ला



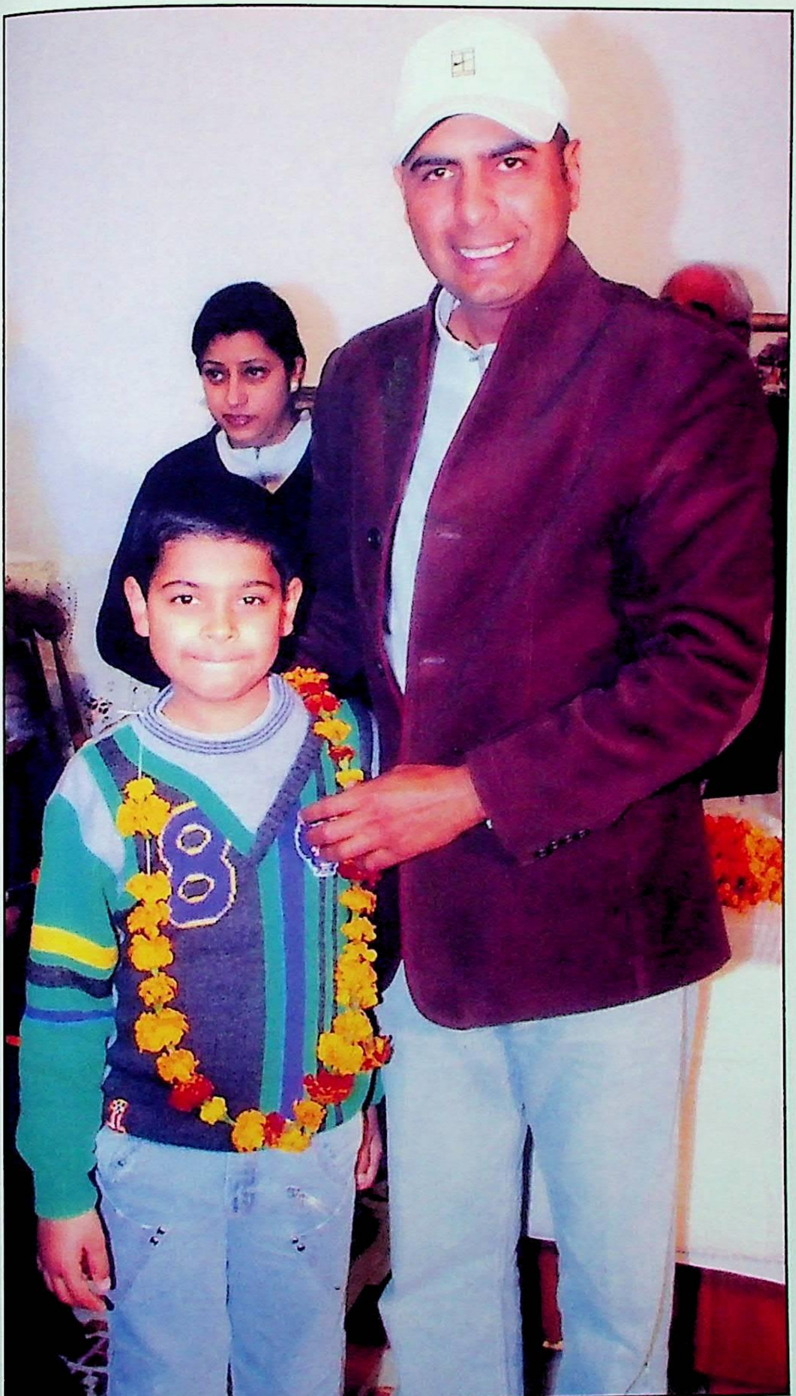
फूलों के हार से अपने पिता श्रीमान यशपाल भल्ला जी का अर्चन करते हुए श्रीमती मृदुला भल्ला जी



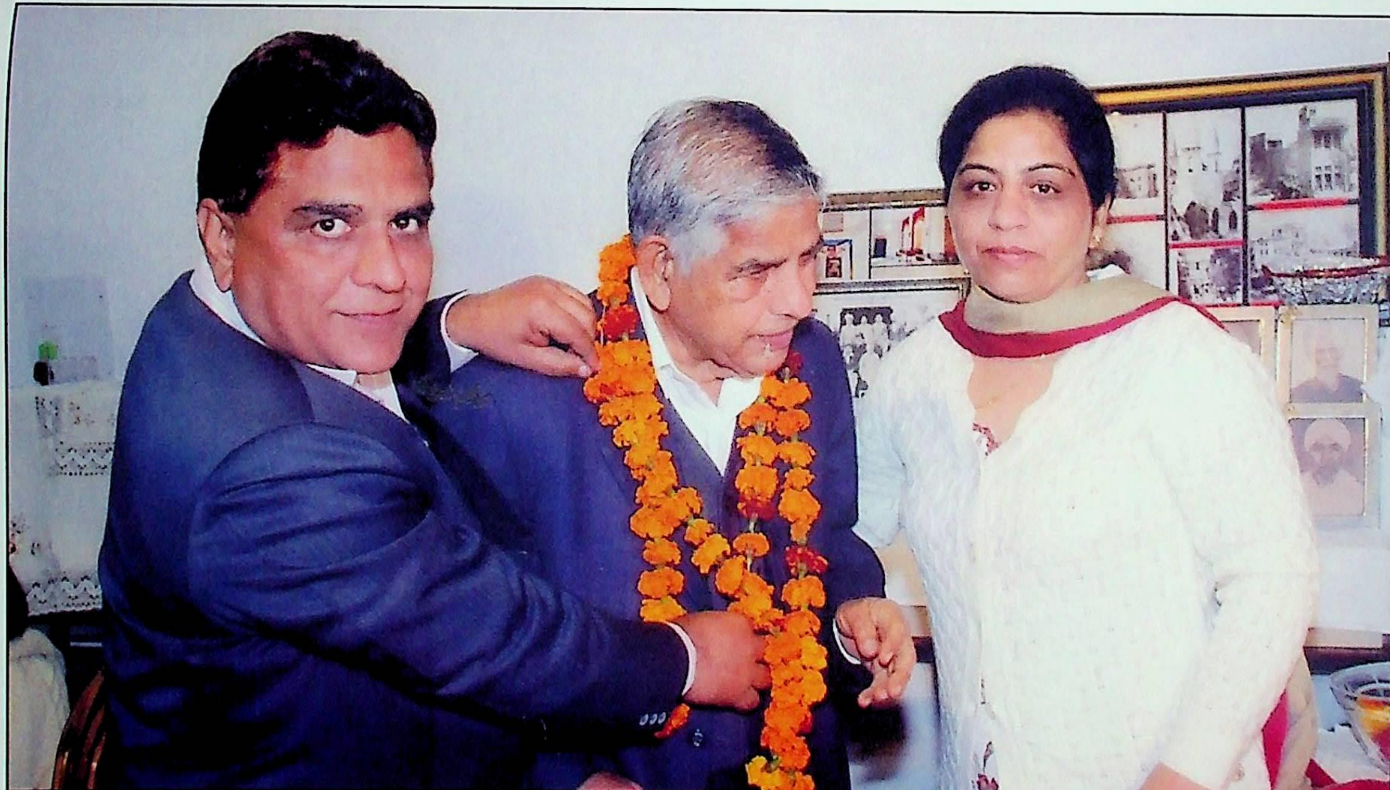
श्री पीयूष भल्ला और उनकी बेटी मिली भल्ला



श्री आयुष भल्ला और उनकी बेटी अरमान भल्ला



श्री आयूष भल्ला और उनका बेटा सिद्धार्थ भल्ला



फूलों के हार से अपने पिता श्रीमान किशन सिंह छाबड़ा जी का अर्चन करते हुए श्री सुनील कुमार छाबड़ा और सरिता भल्ला जी



फूलों के हार से अपनी माता पुष्पा रानी छाबड़ा जी का अर्चन करते हुए सरिता भल्ला जी



फूलों के हार से अपनी माता मालती जी का अर्चन करते हुए प्रतिमा जी



राम बहादुर जी के बच्चे अपने पिता का सम्मान करते हुए

करके उनको अधिक स्वार्थी बनाते हैं वो भी उनके हितकर्ता नहीं बनते।

इसी प्रकार माता-पिता संतान के सम्बन्ध में अपराधी बनते हैं।

संतान को स्नेह और प्यार तो माता पिता प्रदान करते हैं और करना ही चाहिए परन्तु माता- पिता की जिम्मेवारी बहुत बड़ी है। संतान के हित के लिए उनका स्वयं सदाचारी बनना नितांत आवश्यक है।

